भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पंजीकृत संख्या 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/2803/02

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

श्री नमस्कार महामन्त्र

णमोअरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमोआयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

वर्ष 59 अंक 9
सितम्बर, 2002 भाद्रपद 2059

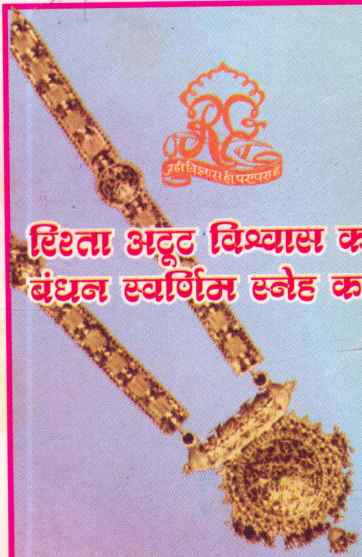

सोने की गुणवत्ता; गहनों की विविधता
एवं कलात्मक सौंदर्यपूर्ण कारीगरी के लिए
पुरे विश्वास के साथ अलंकार प्रेमी आते हैं

रतनलाल सी. बाफना; ज्वेलर्स; जलगांव

अद्वितीय स्वर्णिम विशेषताएँ

स्वर्ण आभुषणों की नई ढेर सारी वेरायटी
अनगिनत नये डिजाईन्स हाजिर स्टॉक में !

डाग रहित ९१.६० KDM गहनों की
नई व्यापक मालिका

सौंदर्यपूर्ण 'बाजू' की विशाल रेंज

कुंदन-जडाव, मीनाकाम, ऑक्साईड पॉलीश,
छिलाई व कास्टींग काम की उच्चतम श्रेणी

हरेक गहनेपर 'वापसी विश्वसनियता' की स्पष्ट मुद्रा

चांदी बर्तनों की नई वैभवशाली मालिका

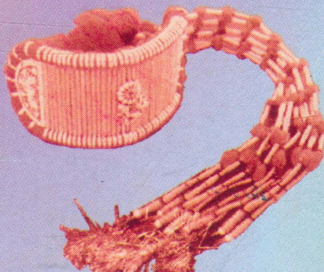

सोने के गहने, हीरों के आभुषण
सब कुछ एक ही छत के नीचे

व्यापारियों के लिए सोने के गहने एवं
चांदी पात्रों की होलसेल बिक्री सुविधा

अवश्य पधारिए!
जहाँ विश्वास हि परम्परा है!

रतनलाल सी.बाफना,ज्वेलर्स

पारस महल
चांदी भांडी शोरुम

सुभाष चौक, जलगाँव
दूरभाष : २२३९०३, २२५९०३,
२२२६२९, २२२६३०

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरुम
डायमंड शोरुम
(रविवार अवकाश)

'शुद्ध आहार शाकाहार'

सावधान : हमारी कहीं भी शाखा एवं एजंट नही!

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

- **प्रकाशक**
  प्रकाशचन्द डागा
  मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
  दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
  जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 565997

- **संस्थापक**
  श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

- **सम्पादक**
  डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.

- **सम्पादकीय सम्पर्क.सूत्र**
  3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
  जोधपुर- 342005(राज.)
  फोन नं. 0291-747981

- **सम्पादक मण्डल**
  डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.

- **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
  रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
  डाक पंजीयन सं. RJ2803/02

- **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

नापुट्ठो वागरे किंचि,
पुट्ठो वा नालियं वए ।
कोहं असच्चं कुव्वेज्जा,
धारेज्जा पियमप्पियं ॥
-उत्तराध्ययन सूत्र 1.14

बोले न बिना पूछे कुछ भी,
पूछे तो झूठ नहीं बोले ।
आने पर क्रोध विफल कर दे,
प्रिय अप्रिय सब धारण कर ले॥11॥

सितम्बर 2002
वीर निर्वाण सं. 2528
भाद्रपद, 2059

वर्ष : 59 **अंक** : 9

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन : 562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट: यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन / निबन्ध

भगवान से बढ़कर है
भगवान की वाणी : आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. 7
ज्ञान को उतारें आचरण में : शासनप्रभाविका श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. 13
जैन आगमों का प्रमुख प्रतिपाद्य :
वीतरागता : श्री सम्पतराज डोसी 23
मौन और उसका महत्त्व : श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा 31
महामन्त्र णमोक्कार :
स्वरूप एवं माहात्म्य (10): श्री जशकरण डागा 34
महावीर का स्वास्थ्य-चिन्तन : श्री चंचलमल चोरड़िया 41
वृद्धावस्था में कैसे जीएँ? : श्री पूनमचन्द चौपड़ा 46

विचार / आगम परिचय / प्रश्नमंच

अमृत - वचन : आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. 6
आज, अभी, इसी वक्त : श्री आनन्दराज घीसुराज तलेसरा 33
आलोचना : श्री पी.एम. चोरड़िया 36
उत्तराध्ययनसूत्रः छत्तीसवाँ अध्ययन(4): प्रो. चाँदमल कर्णावट 48

कथा / कविता / प्रसंग

विसर्जन : श्री अशोक बोहरा 12
धन्ना सेठ : संकलित 21
सम्यग्दर्शन : श्री प्रकाशचन्द्र जैन 'दास' 22
मन की शान्ति विश्व की शांति : श्री नितेश नागोता 'जैन' 30
दो कविताएँ : श्री दिलीप धींग 'जैन' 45
भक्तपान विच्छेद : एक अतिचार : श्री लालचन्द्र जैन 50
मीठे मीठे काम भोग में : श्री पारस मुनि 51

स्तम्भ / अन्य

सम्पादकीय : डॉ. धर्मचन्द जैन 3
अभिमत : संकलित 52
साहित्य-समीक्षा : डॉ. धर्मचन्द जैन 54
समाचार-संकलन : संकलित 57
संक्षिप्त समाचार : संकलित 67
बधाई / चुनाव : संकलित 67
श्रद्धांजलि : संकलित 68
साभार-प्राप्ति-स्वीकार : संकलित 74

सम्पादकीय

सेवा और सामायिक

■ डॉ. धर्मचन्द जैन

जुलाई 2002 के जिनवाणी–अंक में 'सेवा श्रेष्ठ या सामायिक?' विषय पर यत्किचिंत् विचार किया गया था और यह प्रतिपादन किया गया था कि इनकी श्रेष्ठता भावों की शुद्धता पर निर्भर करती है। जिस व्यक्ति की जैसी रुचि एवं पात्रता है – वह उससे ही अपनी साधना का प्रारम्भ कर सकता है। सेवा एवं सामायिक एक दूसरे के विरोधी नहीं, अपितु पूरक हैं। सेवा करने वाला यदि सामायिक को अनुपयोगी मानता है तो यह भी उचित नहीं और सामायिक करने वाला करुणा, अनुकम्पा एवं सेवा से परहेज करे तो यह भी समीचीन नहीं। सामायिक एवं सेवा दोनों का अपना महत्त्व है। जुलाई माह में प्रकाशित एतद् विषयक सम्पादकीय की शृंखला में ही निवेदन है कि साधना की श्रेष्ठता साधक के भावों पर निर्भर करती है।

मोह गलाने के लिए आत्मीय भाव से की गई सेवा जीव के 'अनुकम्पा' गुण की द्योतक है। अनुकम्पा को सम्यग्दर्शन का लक्षण माना गया है। सम्यग्दर्शन के बिना सामायिक की पूर्णता नहीं होती है। सामायिक के तीन रूप हैं – श्रुत सामायिक, सम्यक्त्व सामायिक और चारित्र सामायिक। श्रुत सामायिक एवं सम्यक्त्व सामायिक में अनुकम्पा युक्त सेवा उपादेय है। चारित्र सामायिक का साधक षट्काय के जीवों पर अभयदान करते समय भाव सेवा से युक्त होता है।

सेवा एवं सामायिक को पूर्णतः पृथक् समझना उचित नहीं कहा जा सकता। सामायिक और सेवा यदि सम्यग्दर्शन पूर्वक होते हैं तो दोनों मुक्ति के साधन हैं। सामायिक के लिए कहा गया है कि जितने भी जीव मोक्ष में गए हैं, जाते हैं और जायेंगे – वे सब सामायिक को अपनाकर ही जाते हैं।

सामायिक के साथ सेवा एवं सेवा के साथ सामायिक का होना आवश्यक है। सामायिक चारित्रधारी श्रमण भी वैयावृत्त्य या सेवा को अपनाता है तथा चारित्रधारी आत्माओं और संघ की सेवा करना कर्म–निर्जरा का महान् हेतु है। दश प्रकार के वैयावृत्त्य सामायिक को प्रशंसित कर उसे यशस्विनी बनाते हैं। इसलिए सामायिक और सेवा परस्पर इस प्रकार गुम्फित हैं कि एक के बिना दूसरे की पूर्णता नहीं होती।

आगमों में प्रतिपादित 'वैयावृत्त्य' सेवा का उत्कृष्ट रूप है। आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, शैक्ष (नवदीक्षित), ग्लान (रोगी), गण, कुल, संघ, साधु और समनोज्ञ की वैयावृत्त्य के भेद से वैयावृत्त्य के दश प्रकार निरूपित हैं। ये भेद प्रमुखतः साधु–साध्वियों द्वारा किए जाने वाले वैयावृत्त्य को लक्ष्य में रखकर किए गए हैं, किन्तु इनका फलन श्रावक– श्राविकाओं द्वारा की जाने वाली

सेवा में भी चला जाता है। संसार में ग्लान के साथ वृद्ध, माता–पिता, दीन–दुःखी, विकलांग आदि की सेवा भी ग्राह्य मानी जाती है। जीवन –रक्षा के लिए की गई सेवा सांसारिक मानवों के लिए उपादेय ही है। सेवा के विभिन्न रूप हैं। उन सबको दो भागों में विभक्त किया जा सकता है –

(1) सेव्य के लिए आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नायक

(2) सेव्य के लिए भौतिक दृष्टि से उन्नायक

आचार्य आदि सन्त–महापुरुषों की सेवा आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नायक होती है, जबकि साधारण व्यक्तियों/प्राणियों की सेवा उनके जीवन की रक्षा एवं विकास में सहयोगी होती है। यह उल्लेख सेव्य की दृष्टि से है। सेवा करने वाले में तो भावों की ही प्रधानता देखी जाती है। वह यदि प्रतिफल की अभिलाषा के बिना आत्मीयता से परोपकार करता है तो वह सेवा है। ऐसी सेवा कर्म–निर्जरा में सहायक होती है। **मोहगर्भित, स्वार्थप्रेरित और सुयश की कामना से की गई सेवा परमार्थतः सेवा नहीं है।** व्यवहार में इसे सेवा के नाम से सम्बोधित किया जाता है, किन्तु यह कर्म– निर्जरा में सहायक नहीं होती है।

मोह एवं स्वार्थ के कारण परिवारजन की सेवा–सुश्रूषा की जाती है। यह सेवा का व्यावहारिक रूप है। मानवजाति एवं प्राणिमात्र की सेवा के लिए आज अनेक संस्थाएँ कार्यरत हैं। इन संस्थाओं से दीन–दुःखी, विकलांग, असहाय, वृद्ध, विधवा आदि को राहत का अनुभव होता है। कई बार वे अपने जीवन को सुरक्षित एवं लाभान्वित अनुभव करते हैं। यह सेवाकार्य समाज में बहुत सराहा जाता है। इस सेवाकार्य से सेवित प्राणियों एवं मानवों को सम्बल मिलता ही है, किन्तु इससे यदि सेवक सुयश की कामना की पूर्ति में लग जाता है तो उसे कोई विशेष लाभ नहीं होता। भौतिक सेवाकार्य में कतिपय दोषों की आशंका है, यथा –

(1) अहंकार का पोषण

(2) सुयश की कामना

(3) आरम्भ–समारम्भ

(4) राग–द्वेष एवं निन्दा विकथा के निमित्तों की प्राप्ति।

सच्चा सेवक यदि अपना मोह गलाने के लिए सेवा करता है तो उसे आध्यात्मिक दृष्टि से लाभ होता है। उसके कतिपय लाभ इस प्रकार हैं :–

(1) पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा

(2) सहिष्णुता, समता, क्षमा आदि सद्‌गुणों का विकास

(3) उदारता, आत्मीयता आदि भावों के विकास से अन्य प्राणियों के साथ मैत्रीभाव की स्थापना।

(4) पर्यावरण की रक्षा।
(5) अनेक प्राणियों को प्राणदान/अभयदान एवं उनकी रक्षा।
(6) सम्यग्दर्शन के लक्षण–'अनुकम्पा' का विकास।

सामायिक साधना उत्कृष्ट है। इसमें हिंसा आदि 18 पापों से दूर रहकर आत्म–चिन्तन करते हुए समभाव का अभ्यास किया जाता है। मन, वचन एवं काया के 32 दोषों को टालते हुए सामायिक–साधना करना 'कषाय–विजय' का उत्कृष्ट पथ है। सामायिक का साधक करुणाहीन हो ऐसा सम्भव नहीं। सामायिक के सम्बन्ध में कहा है–

समता सर्वभूतेषु, संयमः शुभभावना।
आर्तरौद्रपरित्यागस्तद्धि सामायिकं व्रतम्।।

समस्त प्राणियों के प्रति समताभाव (राग–द्वेष रहित आत्मीय भाव), संयम और शुभभावना हो तथा आर्त एवं रौद्र ध्यान का त्याग हो तो सामायिक व्रत होता है। सामायिक के लाभ संक्षेप में इस प्रकार हैं :–

(1) मन, वचन एवं काया पर नियंत्रण
(2) 18 पापों का त्याग/सावद्य–प्रवृत्ति पर नियन्त्रण।
(3) समभाव की प्राप्ति।
(4) सब जीवों के प्रति वैर भाव का त्याग तथा मैत्री भाव की स्थापना।
(5) संवर एवं निर्जरा की साधना।

'सामायिक' का आराधन सम्यक् रीति से हो, तो ही आत्मकल्याण सम्भव है, अन्यथा मात्र वेश परिवर्तन से सामायिक का पूरा लाभ नहीं मिलता है। सामायिक की साधना मात्र एक खानापूर्ति नहीं है–इसके साथ अपने भावों की निर्मलता का जुड़ाव आवश्यक है। यह तनाव को दूर कर अपने मनोबल एवं आत्मबल का विकास करने हेतु भी लाभकारी है।

तात्त्विक दृष्टि से सामायिक की उपयोगिता प्रथम श्रेणी में आती है तथा व्यावहारिक रूप से सेवा की उपादेयता का प्रथम स्थान है। परमार्थ एवं व्यवहार दोनों ही जैन साधना में उपयोगी हैं। अतः गृहस्थ को सामायिक के साथ सेवाकार्य के लिए तथा सेवाकार्य के साथ सामायिक के लिए समय निकालना चाहिये। यह बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिये कि साधना के ये दोनों पक्ष सम्यग्दर्शन पूर्वक हों, निर्दोष हों तथा निर्मल भावों के साथ हों। यह तथ्य पूर्व लेख में स्पष्ट कर दिया गया था कि सामायिक प्रमुखतः संवर की साधना है, किन्तु गौण रूप से वह कर्म–निर्जरा में भी सहायक है। इसी प्रकार सेवा (वैयावृत्य) तप प्रधानतः कर्म–निर्जरा में सहायक है। वह मन, वचन एवं काया की अशुभ प्रवृत्ति को नियन्त्रित करने के कारण संवर साधना रूप भी है।

अन्त में निष्कर्ष यह है कि सेवा एवं सामायिक के एकान्तवाद एवं पृथक्तावाद को त्यागकर इनमें अपेक्षित अनेकान्त एवं समन्वय को स्थापित करने की आवश्यकता है।

■

अमृत - वचन

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

* किसी की उन्नति देखकर ईर्ष्या करना या उसकी हानि की सोचना भी अनर्थदण्ड है।
* अपध्यान में बाहरी हिंसा नहीं दिखती, परन्तु वहां अन्तरंग हिंसा है।
* अपध्यान वहाँ होता है, जहाँ तीव्र आसक्ति है।
* मनुष्य को ज्ञान का तीर लगे तो एक ही काफ़ी है और नहीं लगे तो जन्मभर सुनते रहने पर भी कोई लाभ नहीं होता।
* मनुष्य के मन पर माया की झिल्ली आने से वह सत्तत्त्व को नहीं देख पाता और सत्कर्म में चल भी नहीं सकता।
* पारिवारिक प्रार्थना, साप्ताहिक स्वाध्याय सुसंस्कार के साधन हैं। इनके साथ निर्व्यसनी, प्रामाणिक और शुद्ध व्यवहार वाला होना आवश्यक है।
* जिसके द्वारा हित-अहित, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य और धर्माधर्म का बोध हो, वही सच्चा ज्ञान है। ज्ञान के बिना विज्ञान जीवन में हितकारी नहीं हो सकता।
* तप के साथ क्रोध आदि विकारों का त्याग करना उसका भूषण है। कहा है–**"सोहा भवे उग्गतवस्स खंती।"** अर्थात् उग्र तपस्या की शोभा क्षमाभाव है।
* बाहरी विषमता दूर करने से शान्ति नहीं होगी। उससे कुछ समस्याएँ हल हो सकती हैं, पर शान्ति के लिए समता आवश्यक है।
* गृहस्थ-जीवन दान-शील प्रधान है और मुनि-जीवन तप-संयम प्रधान है।
* माता के संस्कार बालक के जीवन निर्माण में बड़े सहायक होते हैं।
* बालक के संस्कार-निर्माण में पिता से अधिक मातृजीवन कारण होता है।
* अरिहन्त कहते हैं– यदि ज्ञानी बनना है तो मोह-माया का पर्दा दूर करो। ज्ञान का प्रकाश बाहर नहीं, तुम्हारे ही भीतर है।
* तनमोह, धनमोह, परिवार-मोह, पदमोह, आदि में मानव भूला हुआ है। इस कारण से वह सामग्री का उचित उपयोग भी नहीं कर सकता।
* बिना ज्ञान के क्रिया करते हुए भी प्राणी अन्धकार में घूमता है, सत्य नहीं पाता।
* सद्गुरु मन, वाणी और कर्म से एक समान होते हैं।

भगवान से बढ़कर है भगवान की वाणी

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

वीतरागवाणी भगवान महावीर के निर्वाण को अढाई हजार वर्ष व्यतीत हो जाने के पश्चात् भी कायम है। इस अनित्य संसार में सन्त-परम्परा एवं स्वाध्याय-परम्परा के कारण वीतरागवाणी आज भी कर्णगोचर हो रही है। आवश्यकता है इस वाणी को जीवन में महत्त्व देने एवं अपनाने की। यदि इसे अपनाया गया तो जीवन में असीम आनन्द की अनुभूति हो सकती है। 26 जुलाई 2002 को बालकेश्वर, मुम्बई के स्थानक में आचार्यप्रवर द्वारा फरमाया गया प्रवचन इसी बिन्दु पर केन्द्रित है। प्रवचन का आशुलेखन कुशल एवं समर्पित आशुलेखक श्री नौरतनजी मेहता, जोधपुर ने किया है।—**सम्पादक**

हजारों वर्ष बीत जाने के बाद भी तीर्थंकर भगवान की वीतराग वाणी आज भी कायम है। जिन महलों की नीवों में मेथी और शीशा भरा हुआ था, जिन कोट और किलों की नीवों में चांदी डाली गई थी, जो सोने और चाँदी के आभूषण तलघरों में संभाल कर रखे जाते थे, वे कोट, किले, महल और तलघर धराशायी हो गये, टूट गये, बिखर गये। संभालने के बावजूद नष्ट हो गये। शायद आपको 2500 वर्ष पुराना एक भी किला या महल नहीं मिलेगा। कहने को कहते हैं ताजमहल है, लाल किला है, ढाई दिन का झोंपड़ा है, देलवाड़ा का जैन मन्दिर है। न जाने ऐसे कितने स्थान हैं, पर कोई भी स्थान ढ़ाई हजार वर्ष पूर्व का नहीं मिलेगा। लेकिन ढ़ाई हजार वर्ष पूर्व की वीतराग वाणी आज भी कायम है।

वीतराग वाणी कैसे कायम है? क्या यह वाणी नित—नई ड्रेस बदलने से कायम है? क्या नई-नई डिजाइनों से कायम है? क्या यह बंगले बदलने से कायम है? नित नये व्यापार से कायम है? या पठन—पाठन, चिंतन—मनन, परावर्त्तन व अनुप्रेक्षा से कायम है? विचार कीजिए। सन्त—परम्परा ने स्वाध्याय से इसे जीवित रखा है। इस वीतराग वाणी को अक्षुण्ण रखने में संतों को किन—किन स्थितियों से गुजरना पड़ा होगा। सोचिए। कारण कि यह वाणी पहले गुरुगम्य थी। गुरु देते, चेला ग्रहण करता। गुरु कहते , चेला धारण करता। शायद, आपके कैमरे भी यहाँ मात खा जायें। आपके ये संग्रह करने वाले एक्स—रे, टेपरिकोर्डर आदि जो भी साधन हैं, उन आगम एवं सिद्धान्त की धारणाओं को सुरक्षित नहीं रख सकते, पर उन स्वाध्यायशील महापुरुषों ने कैसे इस वाणी को सुरक्षित रखा? वे कैसी धारणा वाले थे, जिन्होंने वर्षों तक इसे ज्यों का त्यों रखा। कैसे चौदह एवं फिर दस पूर्वों का ज्ञान सुरक्षित रहा? विचार करने की आवश्यकता है।

आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा.) फरमाते थे— एक पूर्व का ज्ञान लिखने में एक हाथी डूबे जितनी सूखी स्याही चाहिये। उस स्याही

को भिगोकर लिखा जाय। आपके पैन की तरह नहीं जो चार अक्षर लिखे और झटकना पड़े। एक बार कलम ने स्याही ग्रहण कर ली उससे बत्तीस अक्षर लिखे जाते थे। उसी से पूर्व का ज्ञान लिखा जा सकता है। यह उपमा है, पूर्वों का ज्ञान क्षयोपशमजन्य है, लिखा जाना संभव नहीं। आप कल्पना कर सकते हैं कि पूर्वाचार्यों ने इस ज्ञान को कैसे सुरक्षित रखा। मैं आपको ऐतिहासिक जानकारी दूँ। प्राचीन समय में भी अकाल पड़ते थे। अकाल भी एक–दो वर्ष के नहीं बारह–बारह साल के दुष्काल पड़े, संतों द्वारा दैनिक चर्या निभाना मुश्किल हो गया। अकाल पर अकाल। न खाने का पता, न पीने का। ऐसी स्थिति में भी वीतराग वाणी को स्वाध्याय के माध्यम से संतों ने जीवित रखा।

आज हम लोग प्रपंची हैं। हमारे सहयोगी भी हमें प्रपंची बनाने वाले हैं। न खुद स्वाध्याय करते हैं और न करने वालों को सहयोग ही देते हैं, फिर चाहते हैं यह वीतराग वाणी कायम रहे। आप जरा ख्याल तो करो– कभी उपवास किया और पारणे में सामग्री नहीं मिली, तो क्या सोचते हैं? आप सपरिग्रह हैं; घर में इच्छानुसार बनवा सकते हैं। आपको थोड़ा सा विलम्ब महसूस होता है, पर मैं उन अणगारों की बात कर रहा हूँ जो दुष्काल में घर–घर भिक्षा के लिए जाते। आप हों तो कह देंगे– भूखे भजन न होय गोपाला, यह लो कंठी यह लो माला। चिंतन करो वीतराग वाणी आज दिन तक कैसे कायम रही? किन–किन महापुरुषों ने, किन–किन आचार्यों ने, किन–किन स्वाध्याय प्रेमी संतों ने इस वीतराग वाणी को सुरक्षित रखा? उन्होंने अप्रमत्त भाव से परावर्तन में कितना परिश्रम किया होगा?

आचारांग सूत्र में वर्णन है– सुधर्मा ने कहा, जम्बू ने सुना। एक बार कहा और याद हो गया। आज आपको प्रतिक्रमण तो याद है? पुस्तक होने पर भी याद नहीं। उन संतों को कैसे याद रहता था? तब शास्त्र लिखित नहीं थे। गुरु से ज्ञान मिलाया जाता। जब भी चेले में अहंकार, प्रदर्शन या लोकैषणा का भाव आता, गुरु ज्ञान देना बन्द कर देता।

ज्ञान मिलाने के लिये कितना विनय चाहिये, कितनी श्रद्धा चाहिये, कितना समर्पण चाहिए। आज संघ के अधिकारी आते हैं, कहते हैं– इस समय से उस समय तक व्याख्यान होगा। क्यों? तो कहते हैं हमें यही समय अनुकूल लगता है। मैं आपसे पूछूं विद्यार्जन के लिये समय शिक्षक निर्धारित करता है या विद्यार्थी?

ज्ञान कैसे सीखा जाता था, इसे आप समझें। ज्ञान पिपासु गुरु चरणों में निवेदन करता–"भगवन्! आपश्री की अनुकूलता हो तो मुझे ज्ञान सिखाने की कृपा करें। मैं ज्ञान सीखना चाहता हूँ, आपश्री के चरणों में कब उपस्थित होऊँ?" देखिये, ज्ञानार्थी यह नहीं कहता कि मैं इस समय आ सकता हूँ।

जिस वीतराग वाणी को आप सुनना चाहते हैं उसमें आगन्तुक ही

व्यवधान उपस्थित करे तो क्या सुनेंगे, क्या सीखेंगे? आज भक्त ज्ञान सीखने नहीं, बस सुख-शांति की पृच्छा करने और मांगलिक लेने आता है। यह बात सबके लिये नहीं है, फिर भी अधिकांश लोग इसी भावना से आते हैं। इस सभा में कई जौहरी बैठे हैं, मैं उनसे पूछूं– आप रत्नों के परीक्षण की कला कब सिखाते हैं, किनको सिखाते हैं? सीखने वाले में कौनसी योग्यता देखते हैं? मैं यह बात इसलिये कह रहा हूँ कि ज्ञानी का भी गुरु 'ज्ञान' है। "विद्या गुरूणां गुरुः।"

आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा.) कहा करते थे– भगवान से बढ़कर भगवान की वाणी है। तीर्थंकर भगवान महावीर तीर्थंकर बनने के बाद तीस वर्ष तक जनकल्याण करते रहे। वे तीस वर्ष घर में रहे। साढ़े बारह वर्षों तक उन्होंने तप किया। केवलज्ञान–केवलदर्शन मिला लेने के बाद प्रभु ने तीस वर्ष तक तिरने–तारने का काम किया। भगवान की सन्निधि कितने वर्ष रही? किन्तु भगवान की वाणी आज भी है और इक्कीस हजार वर्ष तक रहेगी। इसीलिये भगवान से बढ़कर भगवान की वाणी है। राम से बढ़कर राम का नाम कहने वाली परम्परा भी ऐसा कहती है। राम चले गये तब भी राम का नाम लेकर जीवन समर्पण करने वाले आज हैं।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान का आयुष्य चौरासी लाख पूर्व का था। चौरासी लाख पूर्व के आयुष्य में तियासी लाख पूर्व तो वे घर पर रहे, संसार में रहे। संसार में रहते हुए उन्होंने कितना उपकार किया, अभी मैं उसका वर्णन नहीं करना चाहता। अंतिम एक लाख वर्ष पूर्व के आयुष्य में भगवान ऋषभदेव ने हजारों-हजार साधु-साध्वियों का निर्माण किया। भगवान ऋषभदेव के मोक्ष जाने के बाद पचास लाख करोड़ सागरोपम तक उनकी वाणी तारती रही और असंख्यात काल तक असंख्यात पाट मोक्ष में गए। भगवान अजितनाथ की वाणी तीस लाख करोड़ सागरोपम तक तारती रही और असंख्यात काल तक असंख्यात पाट मोक्ष में गए। इसी तरह भगवान महावीर की वाणी भी इक्कीस हजार वर्ष तक तारेगी, लेकिन किन्हें? जो वीतराग वाणी श्रवण करेंगे, श्रद्धा करेंगे और जीवन में उतारेंगे, उनको तारेगी।

आज भगवान की वाणी सुनने की कइयों को फुर्सत नहीं। कई तो हैं जो परीक्षा के लिए आते हैं। महाराज आए हैं तो चलो देखें कैसा बोलते हैं? उनका स्टाइल क्या? उनका कंठ कैसा है, यह देखने आते हैं। कई हैं जिनकी श्रद्धा नहीं, वे कहते हैं– महाराज ने क्या नया कहा, ये बातें तो हम भी जानते हैं। क्या ऐसा कहने वालों की सीखने की भावना हो सकती है?

मैंने प्रवेश के दिन कहा था– हम इतने भाग्यशाली नहीं कि हमें अरिहन्त भगवन्तों की अमोघ वाणी सामने बैठकर सुनने का अवसर प्राप्त हो।

वह समय चौथे आरे का था तब आप–हम कहीं और थे अथवा महामोही थे। आज न तीर्थंकर हैं न गणधर ही। पूर्वधर भी नहीं, फिर भी तीर्थंकर भगवन्तों की वाणी आज भी है। आरे का प्रभाव, बुद्धि की मंदता, स्मरण-शक्ति की कमजोरी के कारण जब देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण ने शास्त्र लिपिबद्ध कराए, कई धर्मप्रेमी–शासन हितैषी श्रावकों ने उनकी प्रतियां लिखाई, कइयों ने जन्म–विवाह आदि व्यवहार के विशेष प्रसंगों पर शास्त्र की प्रतियां लिखाकर अपनी ओर से भेंट की तब हस्तलिखित शास्त्रों के माध्यम से यह ज्ञान चला। आज यंत्रों के माध्यम से मुद्रित शास्त्र मिल रहे हैं। कई भक्त भण्डारों को शास्त्र भेंट करते हैं। विडम्बना है कि वीतराग वाणी आज आलमारियों में बन्द है। तिजोरी में रखे नोट तो समय-समय पर संभाले जाते हैं, पर आगम शास्त्र कपाटों में बन्द के बन्द पड़े हैं। उन्हें संभालने की फुर्सत नहीं। श्रावक–श्राविकाओं में से कुछ हैं जो धर्मस्थान में आकर प्रार्थना कर लेंगे, भक्तामर बोलने वाले भक्तामर का पाठ कर लेंगे और कहेंगे गुरुदेव! मांगलिक सुनाओ। विरले हैं जिन्हें स्वाध्याय की रुचि है।

धर्मस्थान में आने वालों से हम पूछते हैं– सामायिक क्या, प्रतिक्रमण क्या, क्यों करना चाहिये तो अधिकांश लोगों में न तो जिज्ञासा है और न ही रुचि। हम कहते हैं– सामायिक, प्रतिक्रमण आदि क्रियाएँ पाप रोकने वाली हैं, कर्म काटने वाली हैं, फिर भी जितनी चाहिये जागृति नहीं है।

मैं विषय पर आऊँ। मैं कह रहा था– प्राचीन समय में एक के बाद एक भयंकर दुष्काल पड़े। मुम्बई वाले तो शायद मुम्बई छोड़ना नहीं चाहते, पर उन संतों को क्षेत्र छोड़ने पड़े। प्रकृति की विचित्रता से इस वीतराग वाणी ने कई विप्लव देखे हैं। संतों को स्थान परिवर्तन करना पड़ा। वे बिहार से मालवा, मेवाड़, महाराष्ट्र और राजस्थान तक पहुंचे, पर स्थान परिवर्तन के पश्चात् भी कुछ स्थानों को छोड़कर शास्त्र-रक्षण की ओर किसी का अपेक्षित ध्यान नहीं गया।

प्रकृति की प्रतिकूलता का प्रभाव पड़ता है। कल उषाबाई महासती मण्डल का ज्ञान-चर्चा के निमित्त दिन में आगमन हुआ तो जानकारी मिली कि भूकम्प के कारण कच्छ क्षेत्र डावांडोल हो जाने से महासती-मण्डल को इधर आना पड़ा। मुम्बई महानगर में धर्मस्थान तो कई हैं, लेकिन स्थान की संकीर्णता से साधना-आराधना में यहां के स्थान इतने सहायक नहीं हैं। मुम्बई वाले संयम-साधकों को बुलाना तो चाहते हैं, लेकिन संयम-मर्यादा के रक्षण में सहयोग देने वाले कम हैं। बिना शास्त्र–स्वाध्याय के हमारी साधना निर्मल और पवित्र नहीं रह सकती। आपको अपने बैठने के स्थान की चिंता है लेकिन परिष्ठापन के लिए निर्वद्य स्थान का शायद आपने अभी तक चिंतन ही नहीं किया। चातुर्मासिक चतुर्दशी पर भाइयों की तरह बहिनें भी धर्मचक्र

करना चाहती थीं, पर परिष्ठापन हेतु स्थान नहीं होने से बहिनें संवर–पौषध करने से वंचित रह गईं। आप इस पर चिंतन करेंगे तो आपकी साधना–आराधना भी निर्बाध हो सकेगी। आपका साधना में सहयोग होगा तो जीवों की यतना सहज हो सकेगी, अन्यथा आप जैसा नित्य–प्रति बोलते हैं, हम रोज सुनते हैं, काना, मात्रा, अक्षर, पद बिन्दी आगे–पीछे कही हो तो मिच्छामि दुक्कडं। पौषध करने वाले भी बोलते हैं– उच्चार प्रसवण आदि की भूमि देखी न हो, अच्छी तरह न देखी हो इन अतिचारों में मुझे कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुक्कडं। यह मात्र कहना रह जायेगा। साधना–आराधना में विराधन नहीं हो, इसका चिंतन दे रहा हूँ कि जैसे आप अपनी साज सज्जा के लिए, निवास के लिए, सांसारिक व्यवस्थाओं के लिए ध्यान देते हैं, सामायिक–पौषध आदि साधना के साथ वीतराग वाणी कैसे कायम रहे, उस पर भी ध्यान देंगे तो यहाँ आकर चुटकले–कहानी–दृष्टान्तों की बजाय जीवन की उन्नति की ओर स्वतः ध्यान जायेगा।

कल दिनेश बाबू कह रहे थे महाराज नई पीढ़ी यहां नहीं आती, उन्हें जानकार बनाना जरूरी है। मैं कहूं– पहले आपकी पीढ़ी तो जानकार बन जाए। नई पीढ़ी की चिंता भी करेंगे। मेरी बात कुछ कड़वी लग सकती है। पर आप श्रावक हैं, भगवान महावीर के शासन के सिपाही हैं, पहरेदार हैं, अतः सम्यक् ज्ञान और क्रिया की तरफ आपको चिंतन करना होगा। ज्ञान याद नहीं रहा तो यह तीर्थ कैसे आगे बढ़ेगा? जब–जब श्रावकों के ज्ञान में कमी हुई, साधु कमजोर हुए हैं और साधु कमजोर होने पर यति बन गये, यह आप जानते हैं। यतियों के पास जमीनें थी, धन था और वे यंत्र–मंत्र करने वाले बन गये थे। ऐसी स्थिति फिर से नहीं आये, इसके लिए आपको ज्ञान का, मर्यादा का ध्यान ही नहीं पालन भी करना चाहिए।

शास्त्र वाणी सुनने के लिए श्रद्धा की जरूरत है। जरूरत है भक्ति की और जरूरत है समय निकालने की। आज आए कल नहीं। कल काम था, परसों पेशी है। कभी आए तो व्याख्यान उठते–उठते। मैं आपसे पूछूँ– आपको रेल में कहीं जाना हो तो क्या इसी तरह जाते हैं? बच्चे को छुट्टी की घंटी पर स्कूल लेकर इसी तरह विलम्ब से जाते हैं ?

प्रारम्भ करते मैं कह गया, फिर कह रहा हूँ आप उपयोग पूर्वक सुनेंगे तो उसका महत्त्व है। भगवान महावीर ने जीवन-निर्माण के कई सूत्र दिये हैं। प्रभु ने मोक्ष जाने के पूर्व जो भी कहा उसे ध्यानपूर्वक सुनने–समझने की जरूरत है। कल मैं कह गया पिता जाते-जाते पुत्र को तीन बातें कह गया। बेटा! कम खाना, गम खाना और नम जाना। बातें भले ही साधारण हों, जीवन के लिए उपयोगी हैं।

आज शास्त्र वाणी की आवश्यकता है। वीतराग वाणी कैसे, अक्षुण्ण

रही, इस संदर्भ में कितने–कितने विप्लव आए, कैसी–कैसी परिस्थितियां बनी उसकी कुछ झांकी रखी। प्रकृति की प्रतिकूलता की क्या कहूँ, कुछ विद्यार्थी ऐसे भी रहे जिन्होंने शास्त्र के पन्नों को जलाकर भोजन बनाया। अनजान–अनभिज्ञ लोगों ने शास्त्र के पन्ने फाड़–फाड़कर नदियों में बहा दिये। अर्थप्रेमी कुछ लोगों ने उस अमूल्य धरोहर को विदेशियों को बेच दिया। विदेशी उन पर रिसर्च कर रहे हैं। एक–एक तथ्य को उद्‌घाटित कर रहे हैं। वनस्पति विज्ञान की जो खोजें सामने आ रही हैं, उसके पीछे जिनवाणी का ज्ञान है। भाषा के उच्चारण के साथ शब्द ऊर्ध्वलोक तक पहुंचते हैं। उन्हें ग्रहण करने की दिशा में विज्ञान उत्तरोत्तर गति कर रहा है, यह आपसे छुपा नहीं है।

मैं भगवान की अंतिम वाणी उत्तराध्ययनसूत्र आपके समक्ष रखने की भावना रखता हूँ। आपकी रुचि जगे, भावना बने, इस दृष्टि से कुछ पृष्ठभूमि सामने रखी है। आप भगवान की आदेय–अनमोल वाणी सुनेंगे, वाणी सुनकर चारित्र में चरण बढ़ायेंगे तो आप जीवन को सार्थक–सफल बना सकेंगे, साथ ही भगवान की वाणी जो भगवान से बढ़कर है उसे कायम रखने में भी सहयोगी बनेंगे, इसी मंगल मनीषा के साथ......

विसर्जन

अशोक बोहरा

अरण्यवासी एक संन्यासी ने सुदीर्घ तपश्चर्या की। एक युवा उनके पास आया करता था। अक्सर वह उनकी तपश्चर्या का मखौल उड़ाता। जीवन को मौज-मस्ती का पर्याय मानता।

एक दिवस वह संन्यासी से पूछ बैठा "महात्मन्! आपको साधना और तपस्या करते लम्बा समय हो गया। आपने क्या पाया?"

संन्यासी जी ने धीर-गम्भीर वाणी में शान्त मन से कहा– "वत्स! पाया नहीं खोया ही खोया!"

युवा बोला "मैं तो पहले से ही जानता था शरीर खोया, परिवार खोया, धन सम्पदा खोयी। अभी भी वक्त है सम्भल जाओ और घर चलो, मौज मस्ती में जीवन बिताओ" तब पुनः संन्यासी ने खुलासा करते हुये कहा– "तुम मेरा अभिप्राय नहीं समझ पाये, मैंने तपश्चर्या के दौरान अपनी आसक्ति, अहंकार, मान, माया, लोभ, दुर्बलताओं को खोया है, मैंने शरीर को ही नहीं खोया है, वरन् पापों को खोता जा रहा हूँ।"

–दिव्य हृदय, 10 प्रताप नगर, दादावाड़ी (कोटा) राज.

ज्ञान को उतारें आचरण में

शासनप्रभाविका श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.

ज्ञान को आचरण में उतारे बिना न ज्ञान की सफलता है और न मुक्ति का मार्ग ही प्रशस्त होता है। मुक्ति के मार्ग में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप का महत्त्व निर्विवाद है। शासनप्रभाविका महासती जी ने गतवर्ष पर्युषण पर्व पर फरमाये अपने इस प्रवचन में सम्यक् चारित्र अर्थात् आचरण के महत्त्व पर प्रकाश डाला है। **–सम्पादक**

मुक्तिमार्ग की जो भव्य व्यवस्था है, उसमें जब तक ज्ञान–दर्शन –चारित्र इन तीनों सोपानों का संयोग नहीं मिलता तब तक जीव कर्म-वर्गणा से मुक्त नहीं हो सकता। जुलाहे को कपड़ा बुनना है तो उसे तन्तु, ताना और बाना चाहिए। कुंभकार को घड़ा बनाना है तो उसे मिट्टी, पानी और चाक की जरूरत रहेगी। आपको मुसाफिरी करनी है तो टिकट चाहिए, रास्ते का भोजन चाहिए और कुछ रुपयों–पैसों की जरूरत का ख्याल रहेगा। इसी प्रकार साधना के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र आवश्यक है।

आज अक्षर ज्ञान तो निरन्तर तीव्र गति से बढ़ रहा है। शिक्षा के स्थान छोटे पड़ते जा रहे हैं, इसीलिए एक–एक भवन में दो–दो और कहीं–कहीं तो तीन शिफ्टें चलाई जा रही हैं। अक्षर ज्ञान के साथ यदि सम्यक् ज्ञान नहीं तो वह वह 'साक्षरा' 'राक्षसा' में बदल सकता है। आज भले ही अक्षर ज्ञान बढ़ रहा है, पर ईमानदारी घट रही है, सम्यक् चारित्र का तो करीब करीब अकाल सा नजारा नजर आ रहा है। लूटपाट, चाकू–छूरी की ही क्या बात कहूँ लोग स्त्रियों के साथ छेड़छाड़–बदसलूकी और बदमाशी तक कर जाते हैं। कहना चाहिए आज का जनजीवन व्यावहारिक क्षेत्र में भी सुरक्षित नहीं रहा। आदमी भयभीत है, संत्रस्त है। वह कांप रहा है, धूज रहा है। इस स्थिति में कइयों के मुँह से सुनने को मिलता है कि आज के राज्य के बजाय तो अंग्रेजों का राज्य बढ़िया था। स्वतंत्र देश के नागरिकों के मुँह से ऐसी बात क्यूं निकली?

आज भारत स्वतंत्र है। स्वतंत्र भारत की स्थिति आपसे छुपी हुई नहीं है। आज फैशन और व्यसन ने आदमी को स्वच्छन्द बना दिया है। फैशन आसमान छू रही है। लोग फैशन के दीवाने हो रहे हैं। बहिनों में फैशन का रोग दिन दूना रात चौगुना बढ़ता जा रहा है। इस व्यसन और फैशन के चक्कर में न चोर बाजारी करने का डर है न लूटमार का। मिलावट और धोखाधड़ी जैसी बुराइयाँ धड़ल्ले से पनप रही हैं। आपको प्रेरणा स्वरूप कहा जाता है– चोरी नहीं करें, मिलावट नहीं करें। किन्तु मिलावट नहीं करें तो

क्या करें? कभी–कभी हमें भी जवाब मिलता है– महाराज! यह सब तो सरकार सिखाती है, क्योंकि जमाना ही मिलावट का है। ऐसा कहना ठीक नहीं है। व्यक्ति को अपनी भूल नजर नहीं आती। आप सरकार के साथ क्या कर रहे हैं और सरकार आपके साथ क्या कर रही है, मैं इसकी तह तक नहीं जाना चाहती, पर चोरी, चोरी है। हेराफेरी, हेराफेरी है। मिलावट, मिलावट है। सरकार चोरी करना सिखाती है तो आप भी सरकार की आंखों में मिर्च–नमक झोंकने में कम कलाकार नहीं है।

आप भाग्यशाली हैं जो आर्यक्षेत्र में जन्मे हैं, उत्तम कुल पाये हैं, नीरोग व स्वस्थ शरीर मिला है और वीतराग भगवन्तों की वाणी सुनने का भी आपको सौभाग्य मिल रहा है। आपके जीवन में सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र के गुण निरन्तर विकसित होने चाहिए।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के प्रथम दिन आप सुन चुके हैं– **'ज्ञानस्य फलं विरतिः'**। ज्ञान का फल त्याग है– इस विषय में कवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी कहा–

"मतिमान हुए धृतिमान हुए, गुणवान हुए बहु खा गुरु लातें।
इतिहास, भूगोल, खगोल पढ़े, नित्य न्याय रसायन में कटि रातें।।
रस पिंगल भूषण भाव भरी गुण, सीख गुणी कविता करी तातें।
यदि मित्र चरित्र न चारु हुआ, धिक्कार है सब चतुराई की बातें।।"

हमने गुरु भगवन्तों के सान्निध्य में बैठकर अपनी बुद्धि को विकसित किया। हम डिंगल व पिंगल भाषा कविता लिखना भी सीख गए। खगोल व भूगोल भी पढ़ लिया। इतिहास व न्याय की बहुत सी बातें जान लीं पर यदि हमारा चारित्र निर्मल, शुद्ध और पवित्र नहीं, कथनी के अनुरूप करणी नहीं तो वह ज्ञान कैसा? आप चाहें जितना पढ़ लें, डिंगल और पिंगल भाषा में कविता लिखना सीख जाएँ अगर आपका चारित्र सुन्दर नहीं तो कहना होगा, वह अक्षर ज्ञान भी सिर पर एक तरह का बोझ है। कवि आपकी सुन्दरता को धिक्कार देता है। आपने गधे की पीठ पर चंदन की बोरियाँ लाद दी या मिट्टी के ढेले, उसके लिए तो दोनों भार रूप हैं। आप गधे पर चंदन लादें, हीरे, जवाहरात लादें या मिट्टी लादें उस पर कोई फर्क नहीं पड़ता। कवि ने कहा– **"जहा खरो चंदन भारवाही, भारस्स भागी न हु चंदनस्स"**। आपने साक्षरता के क्षेत्र में चाहे जितनी योग्यता मिला ली, प्रवीणता प्राप्त कर ली, डिग्रियाँ हासिल कर ली, पर यदि चारित्र की निर्मलता नहीं तो वह पढ़ा हुआ ज्ञान किस काम का?

व्यसन जीवन बर्बाद करने वाला है। जीवन में जब तक चारित्र की चमक नहीं आयेगी तब तक जीवन का निर्माण नहीं हो सकता।

अंग्रेजी की एक कहावत आपके ध्यान में होगी–

If wealth is lost, nothing is lost,

If health is lost, something is lost,
And if character is lost, every thing is lost.

मान लीजिये किसी का धन चला गया, उसे परिश्रम करके पुनः प्राप्त किया जा सकता है। व्यापार में कभी–कभी घाटा होता है। एक वर्ष, दो वर्ष, तीन वर्ष के लगातार घाटे की पूर्ति चौथे वर्ष के परिश्रम से संभव है। इसीलिए कहा जाता है– धन गया तो कुछ भी नहीं गया। स्वास्थ्य गया तो समझना चाहिए कुछ गया, लेकिन बिगड़ा स्वास्थ्य भी अच्छे डाक्टर, हकीम, वैद्य आदि के माध्यम से या बढ़िया दवा से पुनः प्राप्त किया जा सकता है।

कुचेरा की एक बहन जो मद्रास रहती थी, ससुराल कुचेरा था, इसलिए वहाँ आई हुई थी। बहन का एकाएक लड़का असाध्य रोग से ग्रसित था। माता–पिता ने लाखों रुपये खर्च कर दिये, किन्तु बच्चे का रोग दूर नहीं हुआ। माता बच्चे के रोग से दुःखी थी। वह सदा चिंतित रहती। संयोग से कुचेरा की तरफ का एक वैद्य वहाँ आया । बाईजी ने वैद्य से लड़के की बीमारी की बात कही। वैद्य ने बच्चे की नब्ज देखी और कहा– बाईजी! ये दो रुपये की तीन पुड़िया हैं, आप इसे दे दें। तीन पुड़ियों के सेवन से यदि फर्क नहीं पड़े तो एक बार मुझे फिर दिखा देना। बच्चे को 3 पुड़ियों से आराम मिल गया। माता–पिता के मुरझाये चेहरे खिल गये। मतलब क्या? किसी अच्छे वैद्य, डाक्टर या हकीम का सहयोग मिल जाय तो असाध्य रोग से छुटकारा भी संभव है। गया हुआ धन प्राप्त किया जा सकता है, बिगड़ा स्वास्थ्य सुधर सकता है, किंतु कोई चारित्र से गिर गया तो मानकर चलिये उसका सब कुछ चला गया।

ज्ञान के क्षेत्र में एक से बढ़कर एक मिलेंगे। भगवती के भांगे अंगुलियों पर गिनने वाले विद्वान् हैं, समयसार का सारांश निकालने वाले विद्वान् भी हैं। ऐसे प्रकाण्ड विद्वान् भी लड़ते झगड़ते नजर आ सकते हैं। ज्ञान का महत्त्व चारित्र से है। हमें उन महापुरुषों के आदर्शों को सामने रखकर चलना है। चारित्र मार्ग में कदम बढ़ाने वाला पतित से पावन बन सकता है। जीव से शिव और आत्मा से परमात्मा बनने में चारित्र धर्म की साधना–आराधना आवश्यक है।

आज आपको अधिकांश महापुरुषों के आदर्श ध्यान में नहीं आते। न आनंद श्रावक की कहानी आपको ध्यान में है, न कामदेव की। अरणक, जंबूकुमार और विजया–विजय कुमार को आप याद करें ही क्यों? उनके जैसा बनना कठिन है। वैसी कड़ी मेहनत कौन करे? वे महापुरुष काजल की कोटड़ी में से बेदाग निकल गये। आप काजल की कोटड़ी से बचना चाहो तो भी कहीं न कहीं लकीर लगना स्वाभाविक है। जैसा कि कहा है–

"काजल की कोटरी में, कैसे हु जतन करे।
काजल की एक रेख लागे पर लागे है।।"

मैं उन चारित्र-धर्म के साधकों का वर्णन कर रही हूँ जो बेदाग निकल गये शायद उनके नाम आपको याद होंगे या नहीं। पाठ रट लेना सचमुच में पढ़ना नहीं है। आपने सुना होगा–द्रोणाचार्य की शाला में कौरव और पांडव दोनों पढ़ते थे। एक दिन गुरुजी ने पाठ दिया– सत्यं वद, क्षमां चर। सत्य बोलो, क्षमा का आचरण करो।

गुरु द्रोणाचार्य के पास सैकड़ों विद्यार्थी होंगे। कुछ दिन बाद गुरुजी ने पूछा– मेरा दिया हुआ पाठ याद हुआ? उत्तर में सब छात्रों ने बता दिया– सत्यं वद, क्षमां चर। सबका उत्तर सुनकर गुरुजी प्रसन्न हुए। आखिर में वे धर्मराज युधिष्ठिर के पास गये और पूछा– तुम्हें पाठ याद हो गया? धर्मराज युधिष्ठिर का उत्तर था– गुरुदेव! मुझे पाठ याद नहीं हुआ। गुरु को बहुत गुस्सा आया। अरे, तुम पांडव कुल गौरव जिसका राजतिलक होना है, सात दिन पूर्व दिया गया पाठ याद नहीं कर सके। गुरुजी गुस्से में तो थे ही, उन्होंने युधिष्ठिर के गाल पर थप्पड़ जड़ दिया। सात दिन पश्चात् गुरुजी फिर से शाला में उपस्थित हुए और इस बार वे धृतराष्ट्र को साथ लेकर आए। युधिष्ठिर से पूछा– दो सप्ताह पूर्व मैंने जो पाठ दिया, वो याद हो गया? युधिष्ठिर ने उत्तर में कहा– गुरुदेव! मुझे तो अभी भी आधा ही याद हो सका है। गुरुजी ने कहा– बेवकूफ! डफोल!! तुझे अब तक आधा ही पाठ याद है? युधिष्ठिर ने नम्रता के साथ कहा– गुरुदेव! याद कर लेना अलग बात है और जीवन में उतारना अलग बात है। आप 7 दिन पूर्व शाला में पधारे थे, मुझे पाठ याद नहीं था इसलिए आपने मेरे गाल पर थप्पड़ मारा था, लेकिन मुझे गुस्सा नहीं आया, मेरी शांति बनी रही और मैं समता के सागर में हिलोरे लेता रहा।

युधिष्ठिर की बात सुनकर द्रोणाचार्य को ही नहीं, धृतराष्ट्र को भी बड़ी प्रसन्नता हुई। ज्ञान, जुबान से नहीं, आचरण से जाना जाता है। ऐसे ऐसे लोग भी हैं जो 32 आगमों को कंठस्थ कर लेते हैं। आगमों को कंठस्थ करना सरल है, आचरण में ढ़ालना कठिन। दुर्योधन की राजसभा में 500–500 विद्वान् थे जो शास्त्रों का निचोड़ निकाल कर सामने रखते, पर दुर्योधन उन बातों को कहाँ समझा? उसका तो एक ही उत्तर था–

"जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः।
जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।।"

अरे, तुम मुझे धर्म के निचोड़ की बात क्या समझा रहे हो, वह तो मैं जानता हूँ। मुझे धर्म और अधर्म की बहुत सी बातें मालूम हैं। जानना एक बात है, पालना दूसरी बात है। आपने जान लिया घर में भयंकर कूड़ा–कचरा पड़ा है। जान लेने मात्र से घर साफ नहीं होता। सफाई करने के लिए हाथ में झाड़ू–बुहारी लेकर मेहनत करनी पड़ेगी। आपने जान लिया कि सामने से भयंकर काला नाग फुफकार मारता आ रहा है। जान लेने मात्र से बचाव का उपाय नहीं हो जाता, उसके लिए तो युक्ति निकालनी पड़ेगी। डाक्टर कहता

है–इस दवा के सेवन से तुम्हारा रोग ठीक हो जायेगा। डाक्टर की बात आपने जान ली, परन्तु दवा का सेवन नहीं किया तो नीरोगता प्राप्त नहीं की जा सकती। आपने जान लिया मिश्री बहुत मीठी होती है, लेकिन जब तक आप जीभ पर रखकर उसे चखें नहीं, आपका जाना हुआ किस काम का? पेट में कड़ाके की भूख लगी हुई है, किन्तु भोजन का कौर जब तक मुंह में नहीं जाएगा, आपकी भूख मिटने वाली नहीं है।

आपने बहुत कुछ जाना है। जानने मात्र से कुछ होने वाला नहीं है। जीवन में जानकारी के अनुरूप जब तक आचरण नहीं तो वह जाना हुआ किस काम का? आपने कहानी सुन रखी होगी। किसी सेठ के घर में एक चोर घुस जाता है। सेठ अलसाई नींद में उत्तर देता है– जाणूं हूँ। सेठानी फिर बोली– अरे, वह तिजोरी वाले कक्ष में घुस गया। सेठ का वहीं उत्तर– जाणूं हूँ। सेठानी ने कहा– अरे चोर ने तिजोरी के ताले तोड़ दिये हैं। सेठ ने नींद के झोंके में– जाणू हूँ कहकर करवट बदल ली। सेठानी ने कहा– चोर धन निकालकर गांठ बांध रहा है और गांठ सिर पर रखकर दरवाजे के बाहर जाने को है। सेठ का वहीं उत्तर– मैं जाणूं हूँ। सेठानी हैरानी में बोली–

"जाणूं जाणूं कर रहियो, माल गयो अति दूर।
सेठाणी कहे सेठ ने, थांरे जाण पणा में धूल।।"

आप धर्मस्थान में आते हैं, धर्मगुरुओं की छत्र-छाया में बैठते हैं और यहाँ आपको वीतराग भगवंतों की वाणी सुनने को भी मिलती है। साधना की प्रारंभिक भूमिका सामायिक भी आप कर रहे हैं और कुछ ऐसे भी हैं जो आगम का ज्ञान भी करते हैं। सामायिक चाहे घर बैठकर करो, चाहे धर्मस्थान में, वह तो शांति देने वाली है। गुड़ चाहे प्रकाश में खाओ, चाहे अंधेरे में, वह तो मिठास ही देगा। ग्रामीण लोग गुड़ की डली को मुंह में डाल लेते हैं और आप शहरी लोग हलवा बनाकर खाते हैं, पर गुड़ मीठा सो मीठा ही है।

हमारी साधना शांति प्रदायिनी है। साधना का पहला रूप है– सामायिक। एक सामायिक नरक गति के बंध को काटने वाली हो सकती है, ऐसा निर्णय किसी छद्मस्थ साधु ने नहीं, अरिहंत भगवंतों ने दिया है। श्रेणिक ने भगवान महावीर स्वामी से पूछा– मैं मरकर कहाँ जाऊँगा? भगवान ने कहा– श्रेणिक! तुम मर कर नरक में जाओगे। श्रेणिक को भगवान का निर्णय सुनकर बहुत दुःख हुआ। "मैं आपका अनन्य भक्त और मैं नरक में जाऊँगा तो दुनियाँ आपके साथ मुझे भी जानती है, वह कहेगी– भगवान का भक्त होकर मगध नरेश नरक में गया। इससे मगध के सम्राट् की बदनामी तो होगी ही, आपके लिए भी यह अच्छा नहीं होगा। भगवन्! कृपा कर मेरी नरक टल जाय वैसा कोई उपाय बताइये।"

भगवान सर्वज्ञ–सर्वदर्शी थे, इसलिए जानते थे कि गति के साथ के

बंध में तो फिर भी फेरफार संभव है। उसे कर्म दलित-साधना के द्वारा समाप्त किया जा सकता है, परंतु श्रेणिक के आयुष्य के साथ बंध हुआ है, इसलिए उसके नरक का बंध टल नहीं सकता। श्रेणिक के आग्रह अनुरोध पर भगवान ने नरक टलने के चार कारण बताए। उसमें पहला कारण था–तू नवकारसी तप कर ले तो तेरी नरक टल सकती है। दूसरा कारण बताया कि यदि कपिला दासी दान दे तो तुम्हारी नरक टल सकती है। तीसरा उपाय बताया– तुम्हारी दादी संत–मुनिराजों के दर्शन कर ले तो नरक टल सकती है और चौथा उपाय है– तू यदि पूर्णिया श्रावक की एक सामायिक खरीद ले तो भी तुम्हारी नरक टल सकती है।

राजा श्रेणिक कुछ आश्वस्त हुआ और भगवान को वंदन नमन कर चलने को तैयार हुआ। सोचा– बाग/बगीचे से होकर जाऊँगा तो वहाँ सुन्दर पके फल देखकर खाने का मन हो सकता है, इसलिए मैं गली कूंचे से होकर जाऊँ। श्रेणिक गली–कूंचे के रास्ते चल रहा था, चलते हुए उसे एक बोरड़ी पर सुन्दर बैर नजर आया। वह सुन्दर बैर तोड़कर मुंह में रख लेता है जिसके कारण उसकी नवकारसी नहीं हो सकी। मन में विचार आया– नवकारसी नहीं हो सकी तो कोई बात नहीं, अभी तीन और उपाय हैं। वह कपिला दासी से बोला– तुम्हारे यहाँ कोई साधु–साध्वी भिक्षा के लिए आए तो उन्हें तुम दान जरूर दे देना। कपिला दासी बोली– मैं हाथ तो कटवा सकती हूँ, पर दान नहीं दे सकती। श्रेणिक महाराज अपनी दादी के पास पहुँचे और बोले, दादीजी! आपको संत–मुनिराजों के दर्शन करने हैं। दादीजी बोली– मैं गर्मागर्म शलाकाओं से आंखें तो फोड़ सकती हूँ, लेकिन संत–सतीवृन्द के दर्शन नहीं कर सकती।

भगवान के बताये उपायों में एक उपाय था पुर्णिया श्रावक की एक सामायिक खरीद लो। वह दौड़ा भागा पुर्णिया श्रावक के पास पहुंचा। बोला– "तुम्हारी एक सामायिक की कीमत क्या? मैं उसे खरीदना चाहता हूँ।" पुर्णिया श्रावक बोला–"सामायिक भी कोई खरीदने की चीज है? आपको जिसने कहा, उन्हीं से आप कीमत पूछ लें।"

श्रेणिक तुरन्त भगवान के श्री चरणों में पहुँचा और बोला– भगवन्! मेरा चौथा मनोरथ सफल होने वाला है। मनोरथ कितने हैं?– तीन। बृहद् आलोयणा में कहा है– "आरंभ परिग्रह तजि करी, पंच महाव्रत धार, अन्त समय आलोयणा करूं संथारो सार।" हाँ, ठीक है। आप तीन मनोरथ का चिंतन करते हैं– उसमें पहला है– वह दिन मेरा धन्य होगा जब मैं आरंभ परिग्रह का त्याग करूंगा। दूसरा मनोरथ है–पंचम महाव्रत धारी बनूंगा और तीसरा मनोरथ है– मैं संलेखना संथारे के साथ पंडित मरण प्राप्त करूंगा। श्रेणिक महाराज भगवान के श्रीचरणों में निवेदन कर रहा है कि मेरा चौथा

मनोरथ सफल होने को है।

आज चारित्र दिवस है। आप मनोरथ बोल कर न रहें, उसे जीवन व्यवहार में लाएँ। आरंभ–परिग्रह का त्याग कहने की बात बहुत सरल है, पर त्याग करना उतना ही कठिन है। आज आपका आरंभ-परिग्रह कितना बढ़ रहा है, इस पर चिन्तन करना चाहिए। महारंभी चीजें आप धड़ल्ले से काम ले रहे हैं। आपको सेंडल, बूँट, मौजे कैसे चाहिए। मैंने कानपुर चातुर्मास में देखा। एक भाई जिसके बूँट थे, वह बोला–महाराज! ये बूँट छः हजार रुपयों के हैं। छः हजार रुपये के बूँट कैसे? क्या इसमें हीरे–जवाहरात जड़ें हैं? वह भाई बोला–इसमें प्राणियों का कोमल–कोमल क्रूम है। आज बहुत आरंभ की चीजें पहनने का शौक बढ़ता ही जा रहा है। बहिनों की पसंद तो और भी ज्यादा महाआरंभ की होती जा रही है।एक–एक चीज में कितनी हिंसा हो रही है, इसकी उन्हें कोई जानकारी नहीं। आपको धर्म संकेत कर रहा है– आरंभ–परिग्रह घटाना चारित्र है। चारित्र धर्म भी दो प्रकार का है– एक देशविरति और एक सर्वविरति। आप मनोरथ का चिंतन करते हैं तो उसमें आरंभ–परिग्रह का त्याग करने, संयम-धर्म अंगीकार करने और संलेखना संथारे के साथ पंडित मरण प्राप्त करने की बात बोलते हैं। बोलना एक बात है, आचरण में उतारना दूसरी बात है।

मैं कह रही थी, श्रेणिक महाराज भगवान के श्री चरणों में निवेदन कर रहा है– "भगवन्! मेरा चौथा, मनोरथ पकने वाला है। पूर्णिया श्रावक सामायिक देने को तैयार है। आप कृपा कर मुझे सामायिक की कीमत बता दें। मैं सामायिक खरीद कर अपनी नरक टालना चाहता हूँ।

भगवान ने कहा– "राजन्! तुम्हारे पास 52 डूंगरियाँ सोने की हैं, उन सबको तू पूर्णिया के नाम कर दे और उसे राजमुकुट पहना कर तू बनवासी बन जाए, फिर भी वह मात्र सामायिक की दलाली की कीमत है। लाखों–करोड़ों–अरबों से सामायिक नहीं खरीदी जा सकती।"

देखिये, एक सामायिक का कितना मोल है। आपने अपने जीवन में कितनी सामायिकें कर ली है, कोई हिसाब? कई भाई होंगे, बहिनें होगी जो दस–बारह वर्ष से सामायिक कर रही होंगी। बारह वर्ष के दिन कितने? आप गणितज्ञ हैं, आपको हिसाब आता है। (सभा में एक भाई बोला– बारह वर्ष के 4380 दिन होते है (365 x 12 =4380)।) प्रतिदिन एक सामायिक के हिसाब से इतनी सामायिक (4380) तो करली होगी। ठीक है, आप में से कई भाई–बहिन 12 वर्ष से सामायिक करने वाले हो सकते हैं और इससे अधिक समय से भी। पूर्णिया श्रावक की एक सामायिक नरक काटने वाली हो सकती है तो आपकी हमारी कितनी सामायिकें हैं? क्या आपकी हमारी सामायिक वास्तव में सामायिक है या वह दस्तूर के नाम से चल रही है? सामायिक के

प्रतिज्ञा पाठ से उसका महत्त्व समझा जा सकता है। आप उपकरण को सामायिक मान रहे हैं। मुँहपत्ति, आसन, माला, पूंजणी सामायिक नहीं है। आप उपकरण लेकर 48 मिनट सामायिक में बैठ जाते हैं, पर सामायिक में करते क्या हैं? एक सामायिक में घड़ी पर कितनी बार नजर जाती है। थांरी–मांरी करने में कितना समय जाता है। किसके घर से बेटे की शादी में कितना आया, बेटी को कितना दिया, इसमें कितना समय जा रहा है, इसका कोई हिसाब है? ठीक है, हम छद्मस्थ हैं, बातों में जितना रस आता है क्या कभी ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि की ओर उतना चिंतन चला है?

आप हम चारित्र-धर्म की साधना-आराधना करना चाहते हैं तो हमें सम्यक् ज्ञान के माध्यम से जीवादि तत्त्वों का भेदविज्ञान करना होगा, सम्यक् श्रद्धान जगाना होगा और चारित्र में आगे उत्तरोत्तर कदम बढ़ाने होंगे।

एक अद्वैतवाद का विद्वान् आया। किसी भक्त ने कहा– आपके स्नान के लिए पानी लाऊँ क्या? वह बोला– यहाँ तो ज्ञान की गंगा बह रही है, मुझे पानी की क्या जरूरत। भक्त बोला– तो फिर भोजन मेरे घर पर करना होगा। अद्वैतवाद के विद्वान् ने भोजन की हाँ कर दी। भक्त ने खूब मिर्च–मसाला डालकर दाल की गर्मागर्म पकोड़ी बनाई। भक्त कोई जोधपुर नगर का आदमी रहा होगा। दाल के गर्मागर्म पकोड़े और मिर्च मसाले का स्वाद ही कुछ ऐसा था कि विद्वान् भूख से अधिक खा गया। भक्त ने भोजन करवा कर कहा– आप यहीं विराजें। मैं आपके आराम का यहीं इन्तजाम कर देता हूँ। विद्वान् ने सोचा– ठीक है। भक्त ने बिस्तर लगा दिया। खाया हुआ ज्यादा था, वह सो गया। भक्त ने धीरे से कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया और गेट पर ताला लगा दिया। कुछ देर बार उस विद्वान् को जोरों से प्यास लगी। इधर–उधर देखा, किन्तु पानी की कोई व्यवस्था नहीं थी। प्यास के मारे उसका गला सूख रहा था। वह जोर–जोर से चिल्लाने लगा– अरे भक्त, दरवाजा खोलो, मुझे बेहद प्यास लगी है। भक्त कान लगाए सुन रहा था। भक्त की आवाज नहीं आई, इसलिए वह जोर–जोर से चिल्लाने लगा। भक्त ने आखिर में कहा– आपके पास तो ज्ञान की गंगा बह रही है आप उसमें में लौटा, घड़ा, बाल्टी भर लें, पानी–पानी क्यों चिल्ला रहे हैं?

कहीं हमारा हाल तो ऐसा नहीं। आचरण की बात आने पर बगलें झांकने लगें। आप साक्षर भट्ट बनकर ही नहीं रहें। आप त्याग के क्षेत्र में आगे बढ़ें, चारित्र में अपने कदम बढ़ायें। आपके जीवन में त्याग–वैराग्य आना चाहिए। आप देशविरति बनें, सर्वविरति बनें और मुक्ति के सोपान को प्राप्त करें। इसके लिए सम्यक् चारित्र की आवश्यकता है और रहेगी। इस प्रकार जो रत्नत्रय की साधना करेगा, वह सफलता प्राप्त कर सिद्ध, बुद्ध और मुक्त बनेगा।

धन्ना सेठ

आज से ढ़ाई हजार वर्ष पहले राजगृही नगरी में धन्नाजी नाम के एक बड़े ही भाग्यवान और सम्पत्तिशाली सेठ थे। उनकी पत्नी का नाम सुभद्रा था। वह गोभद्र सेठ की कन्या और शालिभद्र की बहिन थी। एक दिन जब वह अपने पति धन्नाजी को स्नान करा रही थी,तब उसको अपने भाई की याद आ गई। विचार आते ही उसकी छाती भर आई और आंखों से आंसू बहने लगे। आंसुओं की गरम-गरम कुछ बूंदे सेठज़ी की पीठ पर भी गिरीं। सेठजी ने सिर उठाकर पत्नी की तरफ देखा तो सुभद्रा रो रही थी। धन्नाजी ने पूछा– "तुम रो क्यों रही हो सुभद्रा? क्या तुम्हे कोई मानसिक तकलीफ है? तुम्हें किस बात की कमी है जो इस तरह अधीर हो रही हो?"

सुभद्रा ने अवरुद्ध कंठ से कहा–"कमी किस बात की है स्वामी? आपकी कृपा से सब आनन्द है। लेकिन मुझे अपने भाई की याद आ गई थी। मेरा एकमात्र भाई शालिभद्र दीक्षित होने को तत्पर हो रहा है। वह प्रतिदिन एक-एक स्त्री को छोड़ रहा है। इसी बात ने मेरा ह्रदय कंपा दिया और मैं रो पड़ी।"

सेठजी जी ने कहा–"बस! इतनी सी बात पर इतना पश्चात्ताप! औरतें बड़ी भोली होती हैं? जब उन्हें संसार छोड़ना ही है तो फिर देर क्यों कर रहे हैं? एक-एक स्त्री को छोड़ने की अपेक्षा सभी को एक साथ क्यों नहीं छोड़ देते?"

सेठजी की बात ने सुभद्रा के घाव पर नमक छिड़का। वह रोष में आकर बोली– "संसार को त्यागना कोई हंसी–खेल नहीं है। कहना बड़ा आसान है, पर करना बड़ा टेढ़ा काम है।"

सेठजी को सुभद्रा की बात चुभ गई। त्याग की भावना उनके ह्रदय में घर कर गई। वे तुरन्त उठ खड़े हुए और कहने लगे–"लो मैंने आज ही तुम सभी को छोड़ दिया। आज से तुम और तुम्हारी अन्य सौतें, सभी मेरे लिये बहिन तुल्य हैं।"

सुभद्रा का कलेजा थर–थर कांपने लगा। वह अपने किये पर पछताने लगी। धन्नाजी से अनुनय विनय करने लगी। लेकिन धन्नाजी का मन तो त्याग की तरंगों में हिलोरे ले रहा था। उन्होंने एक न सुनी। उधर से सुभद्रा की सात सौतें भी आ गई। सबने धन्नाजी को चारों तरफ से घेर लिया। वे सब रो-रो कर उन्हें मनाने लगी। लेकिन धन्नाजी अपने वचन से विमुख नहीं हुए। उन्होंने कहा–"अगर तुम मुझ से सच्चा स्नेह रखती हो, तो तुम भी मेरे साथ दीक्षित हो जाओ। अन्यथा एक न एक दिन तुम्हें संसार छोड़ देगा।"

धन्नाजी की बातें सुनकर उनकी पत्नियाँ भी उनके साथ हो गईं। सबको साथ ले वे अपने साले शालिभद्र के घर पहुँचे और बोले–"शालिभद्र! अच्छे काम में इतना विलम्ब क्यों? शालिभद्र ने जब उन्हें देखा, तो वे भी उनके साथ हो लिये। अन्त में सबने एक साथ वीर प्रभु से दीक्षा ग्रहण की और संसार के भोग-विलासों को ठोकर मार कर शुद्ध चारित्र का पालन किया। इस प्रकार सबने मोक्ष-मार्ग के पथिक बनकर अपने जीवन का कल्याण किया।

सम्यग्दर्शन

(व्यवहार एवं निश्चय)

श्री प्रकाशचन्द्र जैन 'दास'

रत्नत्रय में सर्वथा सम्यक्त्व जग में सार है।
मोक्ष रूपी महा तरु का मूल है आधार है।।
भव्य जन! दर्शन विषय में तथ्य को पहचानिये।
निश्चय तथा व्यवहार से दो भेद इसके ज़ानिये।।
जीवादि के अस्तित्व में जो मनुज का श्रद्धान है।
व्यवहार से सम्यक्त्व की यह ही सदा पहचान है।।
ज़िनदेव का यह कथन है नर! सत्य इसको मानिये।
किन्तु सदा निश्चय से दर्शन आत्मा को जानिये।।
व्यवहार से सम्यक्त्व हेतु जो रहें साधन सदा।
उनको भी दर्शन मानते हैं विज्ञ मानव सर्वथा।।
भ्रष्ट नर दर्शन से उनको भ्रष्ट जानों सर्वदा।
दर्शन से होकर भ्रष्ट नर निर्वाण न पाये कदा।।
चारित्र से जो हीन नर संभव है सिद्ध गति को वरे।
सम्यग् नहीं दृष्टि यदि वह प्राप्त न सिद्धि करे।।
जगत के प्राणी सभी सम्यक्त्व से जो हीन हों।
सहस्र कोटि वर्ष तक भी उग्र तप में लीन हों।।
उनकी सफल नहीं साधना निश्चित यही परिणाम है।
लाभ बोधि मिल नहीं सकता उन्हें अभिराम है।।
अधिक इस में क्या कहें अतीत में संसार से।
हो गये सिद्ध श्रेष्ठ जन विशुद्ध निज आचार से।।
और होंगे सिद्ध आगे मुक्त हो जग से तथा।
जान लो सम्यक्त्व की महिमा इसे तुम सर्वथा।।
कुमुदिनी के पत्र उत्पन्न हों सरोवर में सभी।
किन्तु नहीं स्वभाव से वे लिप्त जल से हों कभी।।
वैसे ही जग में सत्पुरुष सम्यक्त्व के प्रभाव से।
कषाय विषयों से सदा निर्लिप्त हो स्वभाव से।।
मनुज सम्यग्दृष्टि अपनी इन्द्रियों के योग से।
चेतन अचेतन द्रव्य के विवेक मय उपयोग से।।
करता है जितने कार्य सारे जगत के व्यवहार में।
निर्जरा में वे सहायक हों सदा संसार में।।

—12 सी डी आदर्श नगर, आलम बाग, लखनऊ

जैन आगमों का प्रमुख प्रतिपाद्य : वीतरागता

श्री सम्पतराज डोसी

वीतरागता की प्राप्ति के उपायों का निरूपण ही आगमों का प्रमुख प्रतिपाद्य है। आगमों में संस्कृति, इतिहास, खगोल आदि का भी निरूपण मिलता है, किन्तु आगम आध्यात्मिक संदेश से ओतप्रोत हैं, इसमें सन्देह नहीं। आगम पाठक को वीतरागता की ओर कदम बढ़ाने की प्रेरणा करते हैं। श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के पूर्व संयोजक एवं प्रतिष्ठित विद्वान् श्री डोसी जी ने सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र और सम्यक् तप के प्रतिपादन को आधार बनाकर आगमों में वीतरागता को प्रमुख प्रतिपाद्य के रूप में प्रस्तुत किया है। **–सम्पादक**

संसारस्थ जीवों में जैसे शरीर के अन्दर आत्मा मुख्य होती है, ठीक इसी प्रकार जैन धर्म या जैन दर्शन रूप शरीर में वीतरागता उसमें रही हुई आत्मा के समान है। जैन शब्द के अर्थ पर विचार करें तो जिन अर्थात् रागद्वेष को जीतने वाले वीतराग जिनेश्वरों द्वारा जो प्ररूपित है उसे जैन धर्म कहते हैं। दूसरे अर्थ के अनुसार जिन अर्थात् वीतराग जिनेश्वरों के उपासक को जैन कहते हैं।

जैनधर्म ईश्वरवादी न होकर आत्मवादी है या दूसरे शब्दों में कहें तो अवतारवादी नहीं होकर उत्तारवादी है। ईश्वरवाद में परमात्मा अवतार धारण करके दुष्टों को मार कर धर्म का उत्थान करते हैं, जबकि उत्तारवाद में आत्मा अपने अज्ञान एवं मोह अथवा रागद्वेष को नष्ट करके स्व एवं पर का कल्याण करते हुए परमात्मा बनता है। जैन दर्शन की मान्यता है कि संसार की प्रत्येक आत्मा परमात्मा स्वरूप है और अपने अन्दर रहे हुए परमात्म भाव को स्वयं के सत् पुरुषार्थ द्वारा प्रकट करके स्वयं परमात्मा बन सकता है। कहा भी है–

सिद्धां जैसो जीव है, जीव सो ही सिद्ध होय।
कर्म मैल का आन्तरा, बूझे विरला कोय।।

विश्व के अधिकांश धर्म एवं दर्शन परमात्मा को एक एवं सारे जगत् का निर्माता मानते हैं। वे उसे जगत् के प्रत्येक प्राणी का निर्माण करने वाला एवं उसको सुख-दुःख देने वाला भी मानते हैं। जैसाकि कहा भी है– "हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ है।" परन्तु जैन दर्शन का मानना है कि जगत के सभी जीव अपने सुख-दुःख, जन्म-मरण आदि के कर्ता स्वयं ही हैं। जैसाकि उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 20 गाथा 37 में कहा है–

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिओ सुप्पट्ठिओ।।

अर्थात् आत्मा स्वयं ही अपने कर्मों का कर्ता है और विकर्ता अर्थात् कर्मों का नाश करने वाला भी स्वयं ही है। सत्कर्म करने वाली आत्मा अपनी मित्र और दुष्कर्म करने वाली आत्मा अपनी शत्रु है।

प्रश्न उठ सकता है कि जब आत्मा स्वयं ही अपने सुख, दुःख का कर्ता है तो वह दुःखी होने का कार्य करता ही क्यों है? समाधान यह है कि प्राणिमात्र चाहता तो हमेशा सुख ही है और जितने भी कार्य करता है वह सुख के लिये ही करता है, पर फिर भी नहीं चाहते हुए भी दुःख उसको मिलता है और वह दुःख उसे भोगना भी पड़ता है। जिस प्रकार छोटा बच्चा अज्ञानवश अग्नि या सांप को भी खिलौना समझ कर सुख के लिये उसे पकड़ लेता है तो अज्ञान के फलस्वरूप उसे सुखी के बजाय दुःखी होना पड़ता है। ठीक इसी प्रकार जब तक आत्मा को अपने अन्दर छुपे हुए ज्ञान का भान नहीं होता तब तक उसे सुख भौतिक पदार्थों जैसे धन, कुटुम्ब, शरीर आदि में दिखता है। इस कारण वह उन पदार्थों से राग या ममत्व करता है, पर चूंकि सभी भौतिक पदार्थ जड़ हैं, न उनमें चेतना है न संवेदना ही तथा न सुख अथवा दुःख ही। जैसे रेत में तेल या पानी में मक्खन का गुण होता ही नहीं तो लाख प्रयत्न करने पर भी मिलेगा कैसे? इसी प्रकार भौतिक वस्तुओं में सुख का गुण है ही नहीं तो मिलेगा कैसे? परन्तु जब तक आत्मा को अपने असली स्वरूप व अपने अन्दर छिपे हुए गुणों का ज्ञान नहीं होता तब तक जीव से शिव, आत्मा से परमात्मा, संसारी से सिद्ध बनने की कला को नहीं जान सकता।

जैन दर्शन का मानना है कि आत्मा अपने अज्ञान और मोह को दूर करके अगर अपने अन्दर छुपे हुए राग, द्वेष, काम, क्रोध आदि शत्रुओं को जीत कर वीतराग बन जाय तो वह अपने ही अन्दर छुपे हुए अनन्त सुख, अतुल शान्ति एवं अपार आनन्द को प्रकट कर आत्मा से परमात्मा बन सकता है।

जैन दर्शन एक सच्चा आस्तिकवादी दर्शन है, जिसमें पहले स्वयं आत्मा पर श्रद्धा या विश्वास होने की बात को आवश्यक बताया गया है, जिसे आगमिक भाषा में सम्यग् दर्शन कहा जाता है। प्रत्येक आत्मा कर्म एवं शरीर के साथ अनादि काल से रहने के कारण वह अपने आपको, शरीर अर्थात् जड़ रूप ही मानने लग जाता है। सुख एवं शान्ति आत्मा का निज गुण होने के कारण सुख एवं शान्ति उसकी नैसर्गिक मांग है। जैसाकि प्रत्यक्ष भी देखा जाता है छोटे से छोटा प्राणी चाहे चींटी हो या कुन्थु, मनुष्य हो या पशु, प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है और दुःख से घबराता है। दुःख से बचने का उपाय और सुख को प्राप्त करने का उपाय जीवन भर करता रहता है, किन्तु जब तक आत्मा को सम्यग् दर्शन नहीं हो जाता तब तक सुख का प्रयास सफल नहीं होता।

राजप्रश्नीय सूत्र में राजा प्रदेशी के कथानक के माध्यम से समझाया गया कि राजा प्रदेशी ने सुना था कि आत्मा और शरीर भिन्न भिन्न द्रव्य हैं, पर चूंकि आत्मा अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण न तो दिखाई देता है न अनुभव में आता है, न मशीनों से जाना या परखा जा सकता है। उसने आत्मा को

देखने, जानने एवं मानने के लिये अनेक मनुष्यों को विविध प्रकार से मारकर, काटकर हत्याएँ भी की, पर आत्मा को देखने व जानने में सफल नहीं हो सका। एक बार उसने 'केशीश्रमण' नाम के महामुनि के दर्शन किये और विविध प्रकार के प्रश्न, तर्क, वितर्क आदि आत्मा को जानने और मानने के लिये किये। सभी प्रश्नों के यथोचित उत्तरों के माध्यम से उसे समझ में आ गया कि मैं स्वयं आत्मा हूँ और शरीर, धन, कुटुम्ब आदि सब प्रत्यक्ष जड़ हैं तो उसका दृढ़ विश्वास हो गया कि मैं स्वयं अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख एवं अनन्त शक्ति का स्वामी हूँ। इस दृढ़ निश्चय से उसकी मानसिकता बदल गई और शरीर, कुटुम्ब, धनादि से तथा राज्य से आसक्ति स्वतः कम पड़ गई। यहां तक कि प्राणप्यारी पत्नी (महारानी) तक से ममत्व एवं राग कम हो गया और ज्यों ज्यों समभाव में रहने लगा त्यों त्यों अत्यन्त शान्ति की अनुभूति होने लगी। उसने श्रावक के बारह व्रत स्वीकार किये तथा दो दो दिन के उपवास अर्थात् बेले–बेले की तपस्या करने लगा। राज्य में रहते हुए भी राजा के त्याग एवं वैराग्य से रानी के भोगों के स्वार्थ में कमी पड़ने के कारण उसका राजा के प्रति राग (मोह) द्वेष में बदल गया और षड्यन्त्र करके राजा को विष तक दे दिया। परन्तु राजा का त्याग, वैराग्य सच्चा था और सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान पूर्वक था, इसलिये उसने मरते समय तक रानी पर किंचित् मात्र भी द्वेष नहीं करते हुए पूर्ण समाधि पूर्वक मरण को प्राप्त किया। भवान्तर में वह पूर्ण वीतरागता को प्राप्त कर लेगा अर्थात् आत्मा से परमात्मा बन जायेगा।

ऐसी वीतरागता की साधना के लिये

जैन आगमों में चार उपाय बताये गये हैं–

णाणं च दसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एस मग्गोत्ति पण्णत्तो, जिणेहिं वरदंसीहिं।।

–उत्त.अ.28.गा.2

अर्थात् ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप– ये चारों मिलकर मोक्ष अर्थात् वीतरागता के मार्ग हैं, ऐसा जिनेश्वरों अर्थात् वीतरागियों ने कहा है। इन चारों का संक्षिप्त अर्थ निम्न प्रकार है–

सम्यग् ज्ञान– जीव अर्थात् आत्मा, अजीव अर्थात् जड़ पुद्गल, बन्ध अर्थात् आत्मा का पुद्गलों, कर्मों एवं शरीर आदि से संबंध होना तथा मोक्ष अर्थात् आत्मा का कर्मों एवं शरीर आदि के बन्धन से सर्वथा छूट जाना, ये मुख्य चार तत्त्व तथा बन्ध के कारण को आस्रव, बन्ध को रोकने के उपाय को संवर और बंधन के आंशिक तोड़ने को निर्जरा, इस तरह सात तत्त्व एवं आस्रव के शुभ भेद को पुण्य तथा अशुभ भेद को पाप इस प्रकार नव तत्त्वों के स्वरूप को विस्तार से अथवा संक्षेप से जानने को सम्यग् ज्ञान कहा जाता है।

ज्ञान का स्वरूप, ज्ञान के भेद–प्रभेदों का पूर्ण विवरण विस्तार से

नन्दी सूत्र में तथा तत्त्वार्थ सूत्र के प्रथम अध्याय में उपलब्ध है।

ज्ञान-प्राप्ति का प्रमुख उपाय, विनय, विनीत शिष्य के लक्षण, गुण, अविनय से हानियां आदि उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 1 में हैं। अज्ञान सारे दुःखों का मूल, संसार परिभ्रमण का कारण आदि उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 6 में है। संसारस्थ जीवों में पाने वाले ज्ञान, अज्ञान आदि का वर्णन पन्नवणा एवं भगवती सूत्र में विस्तार से किया गया है।

सम्यग् दर्शन–उपर्युक्त जीवाजीव आदि तत्त्वों पर दृढ़ विश्वास अर्थात् आत्मपरक विश्वास का होना। आत्मा और शरीर का भेदविज्ञान आत्मा के स्तर पर होना तथा इन तत्त्वों का अनुभूति परक ज्ञान जिन महापुरुषों को हो गया तथा जिन्होंने रागद्वेष रूप बन्धनों को तोड़ कर वीतरागता को प्राप्त कर लिया ऐसे जिनेश्वरों के प्रति पूर्ण विश्वास होने को सम्यग् दर्शन कहा गया है। सम्यग् दर्शन का स्वरूप, भेद, लक्षण, प्राप्ति के उपाय आदि तत्त्वार्थ सूत्र अध्ययन 2 में तथा विविध प्रमाण, नय, निक्षेप आदि से सम्यग् दर्शन की चर्चा राजप्रश्नीय सूत्र में है। सम्यग् दर्शन की प्राप्ति में रुचि, प्रभावना आदि का वर्णन उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 28 में है। सम्यग् दर्शन की प्राप्ति की प्रक्रिया, भेद, प्रभेद आदि कर्मग्रन्थ भाग 2 तथा तत्त्वार्थ सूत्र अध्ययन 2 में उपलब्ध है। सम्यग् दर्शन की महिमा एवं लाभ आचारांग में वर्णित है। सम्यग् दर्शन का दृढ़ता से पालन करने वाले श्रावकों का वर्णन उपासकदशांग सूत्र में वर्णित है। सम्यक्त्व पराक्रम (उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 29) में सम्यग् दर्शन, वीतरागता आदि का विस्तार से वर्णन उपलब्ध है।

सम्यक् चारित्र– सम्यग् ज्ञान एवं दर्शन होने के पश्चात् अठारह पापों का त्याग करना तथा पंच महाव्रतों को धारण करना, पाँच समिति तीन गुप्ति का पालन करते हुए विषय, कषाय, काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष आदि का नाश करने में सतत प्रयत्नशील रहने को सम्यक् चारित्र कहा जाता है।

श्रमण आचार का पूरा वर्णन दशवैकालिक, आचारांग आदि में चारित्र की दृष्टि से तथा श्रमणों व निर्ग्रन्थों के भेद, प्रभेद आदि भगवती शतक 25 में है। पाँच संवर एवं पाँच आस्रव द्वारों का विस्तृत वर्णन प्रश्न व्याकरण सूत्र में है। सम्यक् चारित्र के ग्रहण का एवं हिंसादि पापों से निवृत्ति का पूर्ण उपदेश आचारांग सूत्र में है। चारित्र के भेद, प्रभेद आदि भगवती सूत्र शतक 25 में हैं। पांच समिति, तीन गुप्ति का पूरा वर्णन उत्तराध्ययन अध्ययन 24 में है। साधु-समाचारी का पूर्ण वर्णन उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 26 में तथा चारित्र के भेद, प्रभेद आदि भगवती सूत्र शतक 25 उद्देशक 6,7 में किया गया है।

सम्यक् तप– पुराने संचित कर्मों का नाश करने हेतु अशनादि का त्याग तथा स्वाध्याय, ध्यान, व्युत्सर्ग आदि करना सम्यक् तप कहलाता है।

तप का स्वरूप व भेदों का वर्णन उत्तराध्ययन अध्ययन 30,

रत्नावली, कनकावली आदि का वर्णन अन्तगडदशा सूत्र, तपस्वी साधकों का वर्णन आचारांग, उववाई, अणुत्तरोववाई, भगवती सूत्र आदि में विशेष रूप से उपलब्ध है।

सम्यग् ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप ये चारों साधनाएँ वीतरागता की प्राप्ति के लिए परम आवश्यक हैं।

वीतरागता वास्तव में एक वैज्ञानिक तथ्य है। यह एक सर्वमान्य सत्य है कि प्रत्येक आत्मा सुख चाहता है और वह जीवन पर्यन्त जितने भी कार्य करता है सुख-प्राप्ति के लिये ही करता है। परन्तु अनन्त काल तक अनन्त जन्मों में सुख का प्रयास करने पर भी वह सम्पूर्ण सुखी बन नहीं पाता। इसका कारण यह है कि आत्मा पुद्गल से मिलने वाले सुख को ही सच्चा सुख मान लेता है अर्थात् धन, कुटुम्ब,शरीर, अहम् आदि के सुख को ही सच्चा सुख मान लेता है जो कि वास्तव में सुख न होकर सुखाभास मात्र है और इस सुख के अन्दर छिपी हुई अशान्ति एवं तनाव रूप दुःख के रहस्य को न समझ सकने के कारण यह क्षणिक सुख अन्त में पुनः दुःख रूप बन जाता है।

जन्म–मरण, संयोग–वियोग, लाभ–हानि एवं मान–अपमान में से प्रायः जन्म, संयोग, लाभ एवं मान में सुख माना जाता है और इनके विपरीत मरण, वियोग, हानि एवं अपमान में दुःख माना जाता है। पर गहराई से देखने पर पता चलता है कि मरण के दुःख का मूल जन्म, वियोग के दुःख का मूल संयोग, हानि के दुःख का मूल लाभ एवं अपमान के दुःख का मूल सम्मान में छिपा हुआ होता है। जन्म, संयोग, लाभ एवं सम्मान ये चार अनुकूल लगते हैं और अनुकूलता में व्यक्ति सुख मानता है व राग करता है और मरण, वियोग, हानि और अपमान को प्रतिकूलता मानता है और दुःख अनुभव करता है। इनसे संबंधित वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थिति पर द्वेष करता है। गहराई से चिन्तन करने पर पता चलता है कि प्रतिकूलता के दुःख का मूल अनुकूलता का सुख है। प्रतिकूलता के निमित्त वस्तु , व्यक्ति या परिस्थिति पर द्वेष की जड़ अनुकूलता के राग में छिपी होती है। राग चूंकि अनुकूलता में होता है इसलिये इसकी बुराई न समझ में आती है न महसूस होती है। इन राग और द्वेष दोनों का मूल ममत्व होता है।

संसार में सारे दुःखों का मूल ही ममत्व होता है। जीवन को शरीर, धन, कुटुम्ब, अहं आदि में सुख दिखाई देता है, इस कारण वह इनसे ममत्व करता है। वास्तव में तो इनसे सुख मिलता ही नहीं, पर फिर भी अज्ञान एवं संस्कार के कारण जीव को सुख लगता है। जैसे कोई मिठाई पहले तो चाव से खाता है और खाकर प्रसन्न होता है, पर खाते–खाते ही धीरे–धीरे सुख समाप्त हो जाता है। खाने से पहले जितना और जैसा राग होता है वह धीरे–धीरे कम पड़ जाता है और फिर राग के स्थान पर द्वेष बढ़ने लग जाता

है। बढ़ते–बढ़ते वह द्वेष भी इतना बढ़ जाता है कि वह उस मिठाई को देखना तक नहीं चाहता। ठीक इसी प्रकार प्रायः सभी भौतिक सुखों की स्थिति हुआ करती है।

राग एवं द्वेष ये दोनों जहर के समान हैं, पर राग मीठा जहर है और द्वेष खारे जहर के समान है। राग में दुःख भी सुख रूप लगता है। जैसे एक लड़की अपने दस किलो वजन के भाई को खुशी खुशी उठा कर फिरती है पर उसको अगर पाँच किलो वजन के पत्थर को उठाने का कहें तो वह उसे भार लगेगा।

इसी प्रकार एक सेठ की दुकान पर एक रोज सुबह से ग्राहकों की भीड़ लग गई। दुकान पर सेठ के साथ मुनीम भी कार्य कर रहा था। ग्राहकी दिन भर ऐसी रही कि सेठ और मुनीम दोनों का खाना आया हुआ पड़ा ही रह गया। ग्राहकी जोरदार होने से सेठ को न भूख महसूस हुई, न थकान, न टेंशन। पर मुनीम को तो भूख, थकान और टेंशन जबरदस्त हो गया। स्पष्ट है कि सेठजी को राग के कारण भूख, थकान एवं टेंशन रूप प्रत्यक्ष दुःख भी महसूस नहीं हुआ।

इसी प्रकार आभूषणों का भार भी प्रत्यक्ष भार रूप दुःख होने पर भी वह भार बुरा महसूस नहीं होता।

जैन आगमों में रागादि पाप को किंपाक फल की उपमा से उपमित किया गया है– **"जहा किंपाकफलाणं परिणामो न सुन्दरो।**
एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुन्दरो।।"

जिस प्रकार किंपाक फल दिखने में सुन्दर होता है, किन्तु उसका परिणाम सुन्दर नहीं है इसी प्रकार भोगे गए भोगों का परिणाम सुन्दर नहीं होता, अनुभव काल में भले ही वे सुन्दर लगते हों। इस राग को जीतना या नष्ट करना ही वीतरागता है।

संक्षेप में कहा जाय तो लगभग सभी जैन आगमों में किसी न किसी रूप में वीतरागता की ही बात कही गई है। चाहे वह जीव, अजीव आदि नव तत्त्वों के विस्तार के रूप में हो, जैसे उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 36 एवं ठाणांग सूत्र ठाणा 9, पन्नवणा सूत्र पद 1,2,3,5,6 आदि में, तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय 5, 6 आदि में है। पाँच आस्रव व पांच संवर तत्त्व का विस्तार प्रश्नव्याकरण सूत्र में है। जीव अजीव का वर्णन जीवाजीवाभिगम सूत्र आदि में है।

कर्म-सिद्धान्त के रूप में पूरा कर्मग्रन्थ भाग 1 से 6, जिनमें कर्मों का स्वरूप, भेद, प्रभेद, कर्म बन्ध के कारण, बन्ध की स्थिति, उदय, निर्जरा आदि तथा कर्मों से मुक्त होने के उपाय के रूप में गुणस्थानों का पूर्ण स्वरूप, भेद तथा आत्मा कैसे–कैसे रागद्वेष को क्रमशः कम करते–करते पूर्ण वीतरागता को प्राप्त करके मुक्त तक हो सकता है, का वर्णन उपलब्ध है।

वीतरागता की साधना आंशिक रूप में करने वाले श्रावकों का वर्णन उपासकदशांग सूत्र में, भगवती सूत्र आदि में है। वीतरागता की पूर्ण साधना करने वाले श्रमण-साधकों का वर्णन भगवती सूत्र, अन्तकृतदशांग सूत्र, अनुत्तरौपपातिक सूत्र आदि में उपलब्ध है।

रागद्वेष रूप अधर्म करने एवं दुःखद फल भोगने वालों का वर्णन दुःख विपाक सूत्र में तथा रागद्वेष को आंशिक क्षय करने रूप धर्म करने वालों व उसका सुखद फल भोगने वालों का वर्णन सुख विपाक सूत्र में है।

जैन दर्शन एवं सभी जैन आगमों का सूक्ष्म अवलोकन करने से यह स्पष्ट जाना जा सकता है कि वीतरागता इन आगमों का प्राण है। हिंसा, झूठ, चोरी आदि तथा क्रोध, मान, माया, लोभ आदि सबका समावेश रागद्वेष में हो जाता है। शास्त्रकारों ने इन दोनों को भाव शत्रु माना है तथा इनके जीतने वालों को वीतराग अथवा अरिहन्त कहा है। जैन धर्म के सभी फिरकों ने नमस्कार सूत्र को निर्विवाद रूप से स्वीकार किया है। नमस्कार सूत्र का प्रथम पद भी इन्हीं वीतराग अरिहन्तों के लिए अर्पित है।

इसी प्रकार उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 32 गाथा 7 में **"रागो य दोसो य बिय कम्मबीयं"** कहकर राग एवं द्वेष को सभी कर्मों के एवं पापों के बीज रूप बताया है तथा संसार में सुखी होने के लिये दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 2 की गाथा में **"छिदाहिं दोसं, विणएज्जं रागं"** कहकर द्वेष का छेदन करने एवं राग पर विजय करने का उपदेश दिया गया है।

राग और द्वेष को महान् बन्धन तथा स्नेह(राग) को भयंकर पाश उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 23 गाथा 43 में बताकर इनको काटने का उपदेश दिया गया है–

"रागद्दोसाओ तिव्वा, नेहपासा भयंकरा।
ते छिन्दित्तु, जहानायं विहरामि जहक्कमं।।"

राग और द्वेष दोनों की उत्पत्ति का मूल कारण ममत्व अथवा मोह कहलाता है। आठ कर्मों में सबसे प्रबल कर्म मोह को माना गया है। आचार्य श्री गजेन्द्र मुनि ने स्तवन की कड़ी में कितना सुन्दर कहा–

ममता से संताप उठाया, आज हुआ विश्वास।
भेद ज्ञान की पैनी धार से, काट दिया वह पाश।।
मेरे अन्तर भया प्रकाश.....

शास्त्रकारों ने भी उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 32 गाथा 2 में कहा–

"णाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अण्णाणमोहस्स विवज्जणाए"

अर्थात् ज्ञान सभी भावों का प्रकाशक है तथा अज्ञान एवं मोह का नाश करने वाला है। इसी प्रकार–

"वीयरागयाए णं नेहाणुबंधणाणि, तण्हाणुबंधणाणि य वोच्छिंदई।"

–उत्त. 29/45

अर्थात् वीतराग भाव से स्नेह के अनुबन्धनों और तृष्णा के अनुबन्धनों का विच्छेद हो जाता है।

उत्तराध्ययन सूत्र 29.36 में कहा गया कि–

"वीयरागभाव पडिवन्ने वि य नं जीवे सम सुहदुक्खे भवइ।"

अर्थात् वीतराग राग भाव को प्राप्त हुआ जीव सुख–दुःख में सम हो जाता है।

उत्तराध्ययन सूत्र अ. 35 गाथा 21 में कहा गया है–

"निमम्मो निरहंकारो, वीयरागो अणासवो।
संपत्ते केवलं णाणं, सासयं परिणिव्वुए।।"

अर्थात् निर्मम, वीतराग एवं आस्रवों से रहित निर्ग्रन्थ मुनि, शाश्वत केवलज्ञान को प्राप्त कर परिनिर्वृत हो जाता है अर्थात् पूर्णतया आत्मस्थ हो जाता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि जैन आगमों का मुख्य प्रतिपाद्य वीतरागता ही है। **–संगीता साड़ीज, डागा बाजार, जोधपुर (राज.)**

<u>प्रेरक प्रसंग</u>

मन की शांति, विश्व की शांति

प्राणिमित्र नितेश नागोता जैन

दो चेले मैदान में बैठे, दूर लहराती पताका के विषय में चर्चा कर रहे थे। पहला– "देखो, पताका चंचल है, कांप रही है, हिल रही है।"

दूसरा–"नहीं, पताका स्थिर है, हवा चंचल है, हवा हिला रही है, हवा कांप रही है।"

गुरुदेव ने दोनों चेलों के संलाप–आलाप, विषम–विवाद को सुना। कहने लगे– "मेरे प्रिय शिष्यों, बाहर की चर्चा बंद करो। सभी शांत है, स्थिर है, केवल तुम्हारा मन चंचल है, अस्थिर और व्याकुल है। भीतर झांको, अपने को साधो।"

चेलों पर इस प्रशांत वाणी का जादू सा प्रभाव पड़ा। वे मौन हो गए। मन की चंचलता मिटी। भीतर डूबे और चिन्तन-मनन करने लगे। अन्त में निष्कर्ष यही निकला- मन की शांति ही विश्व की शांति है। मन की अशांति से चारों ओर अशांति है।

अतः भौतिकता के इस भयावह माहौल में आवश्यकता है मन को स्थिर और शांत करने की, निष्पक्षता से स्व प्रवृत्तियों के आत्मनिरीक्षण और चिन्तन मनन की, क्योंकि मन की शांति से ही विश्व की शांति संभव है।

–175, जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमण्डी (राज.)

मौन और उसका महत्त्व

श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा

प्रत्येक मानव भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्नति करना चाहता है। इसके लिये मौन रहना या आवश्यकता पड़ने पर कम बोलना अत्यधिक लाभदायक है।

मौन के लिये कहा गया है–

"मौनं सर्वार्थसाधनम्।"

मौन से प्रत्येक कार्य सिद्ध होता है। मनुष्य को प्राप्त बोलने की शक्ति का उपयोग उसे सुन्दर ढंग से करना चाहिए। वाणी के प्रयोग के संबंध में दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है–

"मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासए।
सयाणमज्झे लहई पसंसणं।" 7.55

अर्थात् जो मानव विचारपूर्वक सुन्दर और परिमित शब्द बोलता है उसकी प्रशंसा सज्जनों द्वारा की जाती है। उक्त गाथा में विचारपूर्वक और परिमित अर्थात् कम से कम या आवश्यकतानुसार बोलने का आदेश दिया गया है।

मौन में उच्चकोटि की शक्ति है। यह तपसाधना है, जिसे महापुरुष अपनी साधना में अपनाते हैं। मौन साधना करने पर अन्य शक्तियाँ जो बिखरी हुई होती हैं उनको एकत्रित कर उन्हें उच्च स्तरीय पुरुषार्थ में लगाया जाता है। मौन में चामत्कारिक शक्ति है। मौन धारण कर आत्म-चिन्तन में तन्मय हुआ जा सकता है। अधिक बोलने से दिमाग थक जाता है और मानसिक तनाव के बढ़ने की संभावना रहती है, जिससे जीवन सार्थक बनाने के कार्य नहीं किये जा सकते हैं। इतना ही नहीं आत्मबल का अभाव हो जाता है। मौन साधक कहते हैं कि अधिक बोलने से शक्ति कम हो जाती है। उसे मौन द्वारा बचाकर साधना में नियोजित किया जा सकता है। साधक को मौन प्रगतिशील बनाता है। मौन से भौतिक क्षेत्र की अपेक्षा आध्यात्मिक क्षेत्र में अकल्पनीय चामत्कारिक लाभ प्राप्त हो सकता है। अध्यात्म–दर्शन में सर्वप्रथम और सर्वाधिक महत्त्व मौन का ही माना गया है। मौन ही इन्द्रिय–संयम का प्रधान हेतु है। जो मौन साधने का अभ्यास कर लेता है वह समस्त इन्द्रियों और मन को वश में करके जितेन्द्रिय बन जाता है।

मौन के श्रेष्ठ साधकों के बारे में शास्त्र कहते हैं–

"एतं मोणं सम्मं अणुवासिज्जासि।"–आचारांगसूत्र 1.5.2.37

मुनि मौन की सदैव सम्यक् प्रकार से उपासना करे।

"मुणी मोणं समायाय धुणे कम्मसरीरगं।"–आचारांगसूत्र 1.2.6.98

मुनि मौन (संयम अथवा ज्ञान) को ग्रहण कर कर्मरूप शरीर को धुन

डालता है। अर्थात् कर्मों की निर्जरा कर देता है।

पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. ने मौन रह कर ज्ञानार्जन किया और विविध प्रकार की आध्यात्मिक उपलब्धियां प्राप्त की।

महात्मा गांधी ज्यादा समय मौन में रहा करते थे। गांधीजी कहते थे–**"मौन में अन्तःशक्ति को जगाने वाली असीम सामर्थ्य होती है।"**

असंयत भाषा वापस नहीं ली जा सकती है। एक बार बिना सोचे समझे निकला वचन कई बार खतरनाक सिद्ध होता है। एक चीनी कहावत के अनुसार–

"A word rashly spoken cannot be brought back by a chariot and four horses."

अर्थात् वचन द्वारा कहे गये असंयत शब्द को चार घोड़ों वाले रथ के द्वारा भी वापस नहीं लिया जा सकता है।

मुझे इस समय यह कथन भी याद आ रहा है–

"The tongue which is only three inches long can kill a man six feet high"

अर्थात् जीभ मात्र तीन इंच लम्बी है फिर भी वह छः फुट ऊँचे मनुष्य को खत्म कर सकती है।

अनुभव बतलाता है कि क्रोध आत्मा के सद्गुणों का नाश कर देता है। प्रश्नव्याकरण सूत्र के अनुसार क्रुद्ध व्यक्ति सत्य, शील और विनय को नष्ट कर देता है–

"कुद्धो सच्चं सीलं विणयं हणेज्ज।"

प्रश्न पैदा होता है कि क्रोध समापन का उपाय क्या है। मौन ही क्रोध समापन का उपाय है। जिससे क्रोधी शान्त हो जाता है। मौन धारण करके समभावी व्यक्ति क्रोध से कोसों दूर रहता है। क्रोध घातक शत्रु है उसे मौन धारण कर जीता जा सकता है।

लांगफेलो के अनुसार मौन और एकान्त आत्मा के सर्वोत्तम मित्र हैं। मौन के साथ एकान्त का विशेष महत्त्व है। एकान्त में रहने वाले साधक की मौन सबसे अधिक सहायता करता है। एकान्त मौन का सहयोगी सहचर है। इस संबंध में इस लेख में विस्तार में जाना मैं वांछनीय नहीं समझता हूँ।

बहुत से मनुष्य जो मौन रखते हैं वे भी बोलते रहते हैं। कइयों की यह धारणा है कि जब बोलने के लिये जिह्वा दी है और शब्द शक्ति प्रदान की है तो उसका प्रयोग क्यों न किया जावे। किन्तु मौन अंगीकार करने के पश्चात् बोलने से दोष लगता है। समझदार व्यक्ति मौन में नहीं बोलते हैं और परिस्थितिवश बोलना पड़े तो कम से कम शब्द काम में लेकर बोलते हैं।

मौन की महिमा के संबंध में एक जैन साध्वी का संदेश है–

"मौन धारण करके ही व्यक्ति अपने अन्दर झांक सकता है, आत्म-

चिन्तन में तन्मय हो सकता है और अपनी शक्ति को अन्तर्मुखी बनाकर परमात्मा के समीप पहुंच सकता है। भक्तिपूर्ण भजन, कथा-कीर्तन अथवा पूजा-पाठ की अपेक्षा मौन रहकर अन्तर गुहा में प्रविष्ट होना और आत्मा को परमात्मा में लीन करना अधिक फलदायी होता है। मौन ही आत्मा को असाधारण सिद्धियों का अधिकारी बनाता हुआ लक्ष्यसिद्धि करा सकता है।"

पाठकों से मेरा नम्र निवेदन है कि प्रतिदिन कम से कम दो घंटे की मौन धारण करने का व्रत लें, जिससे मानसिक शान्ति रहेगी और आध्यात्मिक उन्नति होगी। **–पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय एवं संरक्षक, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ**

"चन्दन" बी–2 रोड़, पावटा, जोधपुर

आज, अभी, इसी वक्त

आनन्दराज घीसुलाल तलेसरा

जीवन में सफलता पाने की कामना हर कोई करता है, किन्तु केवल कामना करने से सफलता मिलती नहीं। सफलता मिलती है, कोशिश करने से। इसी कोशिश को लोग शुरू ही नहीं करते। क्यों न अपनी कोशिश किसी खास दिन से ही शुरू करूं ताकि याद तो रहे आखिर कब की थी शुरूआत। क्यों न दिवाली के दिन से शुरू करूं? वैसे मेरा जन्म दिन भी सामने है। क्यों न शुभारंभ जन्म दिन से ही करूं?

यूं एक के बाद एक खास दिनों का पूरा एक सिलसिला आता है, गुजर जाता है। कोशिश शुरू ही नहीं होती। दरअसल आपने कभी पहचाना ही नहीं कि आज का दिन भी पवित्र है। कोई भी कोशिश शुरू करने के लिए भला आज से बेहतर और कौन सा दिन हो सकता है? क्योंकि आज का दिन ही आपकी बकाया जिन्दगी का पहला दिन है। जरा इसकी अहमियत को महसूस तो करिए। आज आप अपने समूचे भूतकाल को पीछे छोड़ आए हैं। आज आप वर्तमान की धड़कन के साथ अपनी धड़कन मिला कर खड़े है। आगामी कल का दिन आपके भविष्य का पहला दिन होगा। आप इसे बाकायदा अपने सामने देख सकते हैं।

किसी भी सूरत में आज का दिन बेकार न जाने दीजिए, क्योंकि आज ही वह खास दिन है जिसका आपको इंतजार था। बकाया जिन्दगी आप को कैसी सफलता के साथ जीनी है? फैसला आज ही कर लें, क्योंकि आज ही तो है आपकी बकाया जिन्दगी का पहला दिन। किसी भी खास दिन के इंतजार में निठल्ले क्यों बैठे हैं ? आज अभी, इसी वक्त शुरू कर दीजिए सफलता पाने की ईमानदार कोशिश ! जल्द ही सफलता आपकी मुट्ठी में होगी।

–ई, 2/13, जलनिधि हाउसिंग सोसायटी
तीसरा माला, बांगुर नगर, गोरेगांव (पश्चिम) मुम्बई–90

क्रमशः (10)

महामन्त्र णमोक्कार : स्वरूप एवं माहात्म्य

श्री जशकरण डागा

महामन्त्र नमस्कार के जप के आध्यात्मिक एवं लौकिक दोनों प्रकार के फल हैं। साधक को लौकिक फल की ओर आकृष्ट न होकर आध्यात्मिक फल का ही लक्ष्य रखना चाहिए। लौकिक फल गौण है। —**सम्पादक**

मंत्रराज णमोकार अनुपम है— इस महामंत्र को सूत्रकारों ने 96 उपमाएँ देकर इसकी महत्ता व प्रधानता दर्शायी है। किन्तु वस्तुतः यह तो अनुपम व अनुपमेय है। उन उपमाओं में से कुछ यहाँ प्रस्तुत हैं— 1. ज्यों सर्व देवों में इन्द्र प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 2. ज्यों मनुष्यों में चक्रवर्ती की ऋद्धी मोटी, त्यों सर्व मंत्रों में मोटा नवकार 3. ज्यों शूर पुरुषों मे वासुदेव प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 4. ज्यों दानवीरों में वैश्रमण देव प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 5. ज्यों पदवियों में तीर्थंकर पद प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 6. ज्यों ज्ञान में केवलज्ञान प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 7. ज्यों ध्यान में शुक्ल ध्यान प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 8. ज्यों दान में अभयदान श्रेष्ठ, त्यों सर्व मंत्रों में श्रेष्ठ नवकार 9. ज्यों खानों में वज्रहीरा की खान मोटी, त्यों सर्व मंत्रों में मोटा नवकार 10. ज्यों गोत्रों में तीर्थंकर गोत्र सर्वोच्च, त्यों सर्व मंत्रों में सर्वोच्च नवकार 11. ज्यों चारित्र में यथाख्यात प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 12. ज्यों घात में कर्म की घात मोटी, त्यों सर्व मंत्रों में मोटा नवकार 13. ज्यों वचनों में निर्वद्य सत्य वचन श्रेष्ठ, त्यों सर्व मंत्रों में श्रेष्ठ नवकार 14. ज्यों भात में क्षीर चावल उत्तम, त्यों सर्व मंत्रों में उत्तम नवकार 15. ज्यों रात्रियों में दीपावली की रात्रि मुख्य, त्यों सर्व मंत्रों में मुख्य नवकार 16. ज्यों गायकों में गंधर्व प्रमुख, त्यों सर्व मंत्रों में प्रमुख नवकार 17. ज्यों कर्मों में मोह प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 18. ज्यों व्रतों में शील मोटा, त्यों सर्व मंत्रों में मोटा नवकार 19. ज्यों घृत में गऊ का घृत उत्तम, त्यों सर्व मंत्रों में उत्तम नवकार 20. ज्यों नृत्य में इन्द्राणी प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 21. ज्यों कल्पों (कृत्यों) में जिनकल्प उत्कृष्ट, त्यों सर्व मंत्रों में उत्कृष्ट नवकार 22. ज्यों गायो में कामधेनु सर्वश्रेष्ठ, त्यों सर्व मंत्रों में सर्वश्रेष्ठ नवकार 23. ज्यों संघयण में वज्र ऋषभ नाराच संहनन श्रेष्ठ, त्यों सर्व मंत्रों में श्रेष्ठ नवकार 24. ज्यों संस्थान में समचौरस संस्थान श्रेष्ठ, त्यों सर्व मंत्रों में श्रेष्ठ नवकार 25. ज्यों यश में भगवंत का यश सर्वश्रेष्ठ,त्यों सर्व मंत्रों में सर्वश्रेष्ठ नवकार 26. ज्यों रसों में इक्षु रस उत्तम, त्यों सर्व मंत्रों में उत्तम नवकार 27. ज्यों वर्णों में शुक्ल वर्ण

श्रेष्ठ, त्यों सर्व मंत्रों में श्रेष्ठ नवकार 28. ज्यों मरण में पंडित मरण श्रेष्ठ, त्यों सर्व मंत्रों में श्रेष्ठ नवकार 29. ज्यों शरण में धर्म शरण उत्तम, त्यों सर्व मंत्रों में उत्तम नवकार 30. ज्यों गंध में कृष्णागर (एक प्रकार की धूप), त्यों सर्व मंत्रों में उत्तम नवकार 31. ज्यों आकर (समुद्र) में रत्नाकर प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 32. ज्यों सागरों में स्वयंभूरमण बड़ा, त्यों सर्व मंत्रों में बड़ा नवकार 33. ज्यों सर्व इन्द्रियों में नेत्र महत्त्वपूर्ण, त्यों सर्व मंत्रों में महत्त्वपूर्ण नवकार 34. ज्यों सर्व पाषाणों में पारस श्रेष्ठ, त्यों सर्व मंत्रों में श्रेष्ठ नवकार 35. ज्यों सर्वधर्मों में जैन धर्म प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 36. ज्यों सर्व जोड़ों में सारस का जोड़ा मुख्य, त्यों सर्व मंत्रों में मुख्य नवकार 37. ज्यों सर्व माह में श्रावण श्रेष्ठ, त्यों सर्व मंत्रों में श्रेष्ठ नवकार 38. ज्यों सर्व दैत्यों में रावण मुख्य, त्यों सर्व मंत्रों में मुख्य नवकार 39. ज्यों सर्व फूलों में अरविंद प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 40. ज्यों सर्व वस्त्रों में क्षोम युगल श्रेष्ठ, त्यों सर्व मंत्रों में श्रेष्ठ नवकार 41. ज्यों पापों में मिथ्यादर्शन शल्य बड़ा, त्यों सर्व मंत्रों में बड़ा नवकार 42. ज्यों वनों में नन्दनवन श्रेष्ठ, त्यों सर्व मंत्रों में श्रेष्ठ नवकार 43. ज्यों रथों में हरिस्यन्दन प्रमुख, त्यों सर्व मंत्रों में प्रमुख नवकार 44. ज्यों क्षेत्रों में महाविदेह उत्तम, त्यों सर्व मंत्रों में उत्तम नवकार 45. ज्यों दुःख के बीजों में स्नेह मूल है, त्यों सर्व मंत्रों में मूल नवकार 46. ज्यों वृक्षों में जम्बू प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 47. ज्यों सर्व जीवों का आधार अम्बु, त्यों सर्व मंत्रों का आधार नवकार 48. ज्यों सतियों में सीता प्रमुख, त्यों सर्व मंत्रों में प्रमुख नवकार 49. ज्यों तिथियों में पूनम प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 50. ज्यों देवों में अनुत्तर देव श्रेष्ठ, त्यों सर्व मंत्रों में श्रेष्ठ नवकार 51. ज्यों बुद्धि में औत्पातिकी बुद्धि प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 52. ज्यों सूत्रों में दृष्टिवाद प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 53. ज्यों पक्षियों में गरुड़ प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 54. ज्यों तेज में रवि का तेज श्रेष्ठ, त्यों सर्व मंत्रों में श्रेष्ठ नवकार 55. ज्यों मणियों में चितांमणि प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 56. ज्यों हाथियों में ऐरावत प्रधान है, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 57. ज्यों सभा में सौधर्म सभा प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 58. ज्यों माता में तीर्थंकर की माता उत्तम, त्यों सर्व मंत्रों में उत्तम नवकार 59. ज्यों गच्छ में गणधर प्रधान, त्यों सर्व मंत्रों में प्रधान नवकार 60. ज्यों गति में सिद्ध गति श्रेष्ठ, त्यों सर्व मंत्रों में श्रेष्ठ नवकार 61. ज्यों पांच समिति में भाषा समिति मोटी, त्यों सर्व मंत्रों में मोटा नवकार 62. ज्यों गुप्ति में मन गुप्ति मोटी, त्यों सर्व मंत्रों में मोटा नवकार 63. ज्यों तप में उत्तम ब्रह्मचर्य, त्यों सर्व मंत्रों में उत्तम नवकार। **(क्रमशः)**

–डागा सदन, संघपुरा, टोंक (राज.)

आलोचना

श्री पी.एम. चोरड़िया

(1)

1. प्रश्न– आलोचना क्या है?

उत्तर– 1. अपने परिणामों को समभाव में स्थापित करके अपनी आत्मा का अवलोकन ही आलोचना है।

2. ग्रहण किये हुए व्रतों में दोष लग जाने पर, भूल भरी बातें हो जाने पर, व्रत के विरुद्ध आचरण हो जाने पर, गुरु के समक्ष अथवा आदरणीय बन्धु के समक्ष भगवान की साक्षी में दोषों को, भूलों को, विरोधी-आचरण को स्पष्ट रूप से बयान करना और क्षमा मांगना ही आलोचना है।

2. प्रश्न– प्राचीन संदर्भों के अनुसार 'आलोचना' शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर– प्राचीन संदर्भों के अनुसार'आलोचना'शब्द के तीन अर्थ होते हैं:–

1. स्वविवेक से स्वयं का निरीक्षण करना।
2. अपनी भूलों पर स्वयं पश्चात्ताप करना।
3. अपने से हुई भूलों को गुरुजनों के समक्ष बालक की तरह सरलभाव पूर्वक प्रकट करना।

3. प्रश्न– आज के संदर्भ में 'आलोचना' शब्द का क्या प्रचलित अर्थ है?

उत्तर– आज 'आलोचना' का अर्थ मात्र 'पर-निन्दा' रह गया है।

(2)

1. प्रश्न– आलोचना करने के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर– आलोचना करने के लिए सरलता या ऋजुता की परम आवश्यकता है।

2. प्रश्न– भगवती सूत्र (25/6) तथा स्थानांग सूत्र के अनुसार आलोचना कौन कर सकता हैं?

उत्तर– 1. जो जाति सम्पन्न हो। 2. जिसका हृदय विनम्र हो। 3. जो कुल सम्पन्न हो। 4. जिसे पाप कर्म के कटुफलों का ज्ञान हो, कर्म फल, पुनर्जन्म आदि के विषय में श्रद्धा रखता हो। 5. जिसका चरित्र निर्मल हो। 6. जो ज्ञानी हो। 7. जो क्षमाशील हो। 8. इन्द्रियों का दमन करने वाला हो। 9. निष्कपट–सरल हृदय हो। 10. अपश्चानुतापी– पाप करके पश्चात्ताप करे, किन्तु पाप को प्रकट करने का पश्चात्ताप न करे।

3. प्रश्न– भगवान महावीर ने आलोचना करने की भावना के संबंध में क्या कहा है ?

उत्तर– आलोचना करने की भावना जागृत होने से ही व्यक्ति का

अन्तःकरण इतना विशुद्ध और पवित्र हो जाता है कि यदि आलोचना करने की भावना से जाते हुए (बिना आलोचना किये) बीच में ही वह काल धर्म को प्राप्त हो जाय, तब भी वह आराधक होता है।

(3)

1. **प्रश्न**—आलोचना करने से क्या लाभ है तथा न करने से कितना अनिष्ट होता है? यह किसी शास्त्रीय उदाहरण से बताइये ।

उत्तर—आचार्य खंदक बहुत बड़े तपस्वी, ज्ञानी व गुणवान संत थे। पांच सौ शिष्यों को घाणी में पीलते देखकर भी विचलित नहीं हुए, किन्तु स्वयं मरते समय पालक के प्रति अत्यन्त क्रुद्ध हो गये और आलोचना किये बिना आयुष्य पूर्ण कर अग्निकुमार देव बने। संयम–विराधक हो गए।

दूसरी ओर गोशालक जैसा व्यक्ति जिसने जीवन भर भगवान महावीर की अवहेलना व अनिष्ट किया, किन्तु अन्तिम समय में आलोचना की, आत्म-निन्दा की तो मरकर वह बारहवें देवलोक में उत्पन्न हुआ।

2. **प्रश्न**— उत्तराध्ययन सूत्र (29/6) में आलोचना करने से जीव को क्या लाभ बताए हैं?

उत्तर— आलोचना करने से जीव अनन्त संसार(जन्म–मरण) को बढ़ाने वाले तथा मोक्ष मार्ग में विघ्न उत्पन्न करने वाले माया शल्य, निदान शल्य तथा मिथ्यादर्शनशल्य को दूर कर देता है। ऋजुभाव को प्राप्त होता है। ऋजु भाव वाला आत्मा स्त्रीवेद और नपुंसक वेद को नहीं बांधता, पहले बंधा हुआ हो तो उसकी निर्जरा कर देता है।

3. **प्रश्न**— आलोचना एवं प्रतिक्रमण में क्या समानता है?

उत्तर— आलोचना तथा प्रतिक्रमण क्रमशः होने वाली अन्तर– प्रक्रिया है। ये दोनों ही आत्मिक भावों की ओर ले जाने वाले राजमार्ग हैं।

(4)

1. **प्रश्न**— **एगमविमायी मायं कट्टु आलोएज्जा।**
जाव पडिवज्जेजा अत्थि तस्स आराहणा।।

भावार्थ— जो प्रमादवश हुए कपटाचरण के प्रति आलोचना करके सरल हृदय हो जाता है, वह धर्म का आराधक है।

उपर्युक्त आगम वाणी कहाँ से ली गई है।

उत्तर— स्थानांग सूत्र।

2. **प्रश्न**— **स्वस्थानाद यत्परस्थानं, प्रमादस्य वशाद् गतः।**
तत्रैव क्रमणं भूयः, प्रतिक्रमणमुच्यते।।

भावार्थ—प्रमादवश शुभ योगों से निकलकर अशुभ योग प्राप्त किये हों, तब पुनः शुभ योगों को प्राप्त कर लेने का नाम प्रतिक्रमण है।

उपर्युक्त विचार किसने व्यक्त किए?

उत्तर—आवश्यक सूत्र की टीका में श्री हेमचन्द्राचार्य ने।

3. प्रश्न— **'किं मे कडं किं च मे किच्चं सेसं'**

अर्थ— हे साधक! तू प्रतिदिन सोच "मैंने क्या—क्या किया है और आगे क्या—क्या करना शेष है।"

उपर्युक्त उत्तम विचार कहाँ से लिये गये हैं?

उत्तर— दशवैकालिक सूत्र की चूलिका से।

(5)

1. प्रश्न— **उद्धरिये सव्वसल्लो, आलोइय निंदिओ गुरुसंगासे।**
होइ अतिरेगलहुओ, ओरियभरो व्व भारवहो।।

उपर्युक्त श्लोक का भावार्थ बताइये।

उत्तर— जो साधक गुरुजनों के समक्ष मन के शल्यों, कांटों की तरह चुभने वाले कलुषित भावों को निकालकर आलोचना या आत्म-निन्दा करता है, उसकी आत्मा उसी प्रकार हल्की हो जाती है, जैसे सिर का भार उतार देने पर भारवाहक हल्कापन अनुभव करता है।

2. प्रश्न— **'परापवादेन मुखं स—दोषं, नेत्रं परस्त्री-जन-वीक्षणेन।**
चेतः परापाय—विचिन्तनेन, कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहम्।।

उपर्युक्त पक्तिंयों का भावार्थ क्या है?

उत्तर— प्रभो! मैंने दूसरों की निन्दा करके अपने मुख को दूषित किया, पर-नारी (या पर-पुरुष) को काम दृष्टि से देखकर मैंने अपने नेत्रों को कलुषित किया और मन में दूसरों का बुरा सोचकर मैंने अपने मन को भी अपवित्र बना लिया।बताइये,भगवन्! मेरे जीवन का कल्याण कैसे होगा?

(6)

1. प्रश्न— आचार्य भद्रबाहु स्वामी ने आवश्यक निर्युक्ति में कौन से चार विषयों के लिए आलोचना (प्रतिक्रमण) के लिए कहा है?

उत्तर— 1. हिंसा, असत्य आदि जो पाप कर्म जिनका श्रावक तथा साधु के लिए निषेध किया गया है, उन कर्मों को किया हो, तो आलोचना करना।

2. शास्त्र की वाणी एवं तत्त्वों की सत्यता के विषय में सन्देह होना या अश्रद्धा हो तो आलोचना करना।

3. जिन कार्यों को करने का शास्त्रों में विधान किया गया है, वे न किए गये हों, तो उनकी, आलोचना करना।

4. आगम विरोधी विचारों का प्रतिपादन किया हो, तो भी आलोचना करना।

2. प्रश्न— 'प्रथम आलोचना फिर प्रतिक्रमण' यह कथन किस तरह सही है?

उत्तर— प्रथम आत्मा के दोषों का अवलोकन करना, जांचना, परखना,

स्वीकार करना आलोचना है, तत्पश्चात् उन दोषों से लौटना और दुबारा वैसे दोष न हों, उसका सजग निर्णय प्रतिक्रमण है।

3. **प्रश्न**– आलोचना या प्रतिक्रमण करना क्यों आवश्यक है?

उत्तर–जीव स्वभाव को भूलकर, पर भाव में जाता है,वह प्रमाद के कारण ही जाता है, यही भयंकर भूल है। भूल एक रोग है तथा प्रतिक्रमण उसकी अचूक औषधि है। यदि कोई दोष न लगा हो तो भी प्रतिक्रमण करना आवश्यक है। ऐसा करने से दोषों के प्रति अरुचि चालू रहेगी। जीव जागृत रहेगा। फलस्वरूप भविष्य में भूल होने की संभावना कम रहेगी।

(7)

1. **प्रश्न**– आलोचना कब करनी चाहिये?

उत्तर– 1. जब अपने आचार व्यवहार में प्रमादवश कोई स्खलना हो जाय तो स्वतः ही तुरन्त 'मिच्छामि दुक्कड़' बोलकर आलोचना कर लेना चाहिए।

2. यदि तुरन्त आलोचना न की हो तो सायंकालीन तथा प्रातःकालीन प्रतिक्रमण, पाक्षिक प्रतिक्रमण, चातुर्मासिक प्रतिक्रमण, सांवत्सरिक प्रतिक्रमण और बारह वर्ष बाद भी यदि अपने दोष का अनुभव हो तो आलोचना कर लेनी चाहिये। यदि फिर भी आलोचना नहीं हो सकी हो तो जीवन की अन्तिम वेला में तो अवश्य ही आलोचना कर लेनी चाहिए।

2. **प्रश्न**– जीव को संसार में भटकाने वाले कर्मों की परम्परा बढ़ाने वाले क्या कारण हैं?

उत्तर– 1. मिथ्यात्व 2. अव्रत 3. प्रमाद 4. कषाय 5. अशुभ योग।

3. **प्रश्न**– आस्रव का त्याग करने के लिए आलोचना या प्रतिक्रमण क्यों आवश्यक है?

उत्तर– मिथ्यात्व का त्याग कर सम्यक्त्व धारण करना, अविरत दशा को छोड़कर यथाशक्ति विरति को स्वीकार करना, प्रमाद का त्याग करके अप्रमत्त भाव को प्राप्त करना, कषायों का त्याग करके क्षमादि गुणों को प्राप्त करना और विकसित करना तथा संसार वर्धक योग–व्यापारों का त्याग करके आत्म–स्वरूप की प्राप्ति करनी चाहिए। यह आलोचना अथवा प्रतिक्रमण से ही संभव होता है।

(8)

1. **प्रश्न**– **'आलोयणा णाम जहा अप्पणो जाणति तहां परस्स पागडं करेइ'**

–निशीथ चूर्णि (आचार्य जिनदास गणि)

उपर्युक्त पंक्ति का अर्थ बताइये ?

उत्तर–व्यक्ति अपने विषय में जो कुछ जानता है, वह दूसरे (गुरु) के समक्ष प्रकट कर दे– इसका नाम 'आलोयणा' है।

2. **प्रश्न**– **प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत, नरश्चरितमात्मनः।**
किंतु मे पशुभिस्तुल्यं, किन्तु सत्पुरुषैरिव ।।

उपर्युक्त श्लोक का भावार्थ क्या है?

उत्तर– प्रतिदिन मनुष्य अपने आचरित को देखने का प्रयास करे, मैंने आज दिन भर कौन से कार्य पशु की तरह और कौन से कार्य सत्पुरुष के तुल्य किये हैं।

3. **प्रश्न**– **हूँ अपराधी अनादि को, जन्म–जन्म गुनाह किया भरपूर के।**
लूट्या प्राण छः कायना, सेव्या पाप अठार करूर के।।
श्री मुनिसुव्रत साहिबा।

उपर्युक्त पद्य के रचियता कौन हैं?

उत्तर– सुश्रावक श्री विनयचन्द जी (विनयचन्द्र चौबीसी से)।

(9)

1. **प्रश्न**– दोष लगने पर किसके समक्ष विशुद्धि के लिए आलोचना करनी चाहिए?

उत्तर– व्यवहार सूत्र में बताया गया है– दोष लगने पर अपने आचार्य, उपाध्याय के समक्ष आलोचना करनी चाहिये, वे न हों तो सांभोगिक बहुश्रुत के पास, उनके अभाव में समान वेशभूषा वाले बहुश्रुत के पास, उनके अभाव में विशेषज्ञ श्रावक के पास भी आलोचना कर लेनी चाहिए। यदि इनमें से कोई भी उपलब्ध न हो तो स्वयं ही अरिहन्त–सिद्ध भगवान की साक्षी से आत्म-साक्षीपूर्वक आलोचना करके दोष विशुद्धि कर लेनी चाहिए।

2. **प्रश्न**– बाह्य दृष्टि से पाप करते हुए प्राणी को आलोचना (प्रतिक्रमण) करना आवश्यक क्यों कहा गया है?

उत्तर– मनुष्य जब तक छद्मस्थ और प्रमादी है तब तक कोई भी दोष लगेगा ही नहीं, ऐसा कैसे कहा जा सकता है? तन, मन, वचन का योग परिस्पंदात्मक हैं और उसमें कहीं भी कषाय भाव का मिश्रण होने पर दोष लगे बिना नहीं रहेगा। साथ ही आलोचना या प्रतिक्रमण केवल पुराने दोषों को दूर करने के लिए ही नहीं है, परन्तु भविष्य के दोषों की संभावना कम करने के लिये भी है।

3. **प्रश्न**– अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार तथा अनाचार में आलोचना और प्रायश्चित्त का क्या विधान है?

उत्तर– शास्त्रों में प्रथम तीनों (अतिक्रम, व्यतिक्रम और अतिचार) के लिए तो आलोचना कही है, इनसे जीव शुद्ध हो सकता है, लेकिन अनाचार तक पहुंच जाने के बाद उसके लिये प्रायश्चित्त ही होता है।

-89, Audiappa Naicken Street, Chennai-79

महावीर का स्वास्थ्य-चिन्तन

श्री चंचलमल चोरड़िया

महावीर का दर्शन मौलिक रूप से स्वास्थ्य और चिकित्सा का दर्शन नहीं है, वह तो आत्मा से आत्मा को जानने का दर्शन है। परन्तु जब तक आत्मा मोक्ष को प्राप्त नहीं हो जाती तब तक आत्मा शरीर के बिना नहीं रह सकती। शरीर की उपेक्षा कर आत्म-शुद्धि हेतु साधना भी नहीं की जा सकती। महावीर की दृष्टि में शरीर का आत्म-साधना हेतु महत्त्व होता है, इन्द्रियों के विषय भोगों के लिये नहीं। उनका अधिकांश चिन्तन आत्मा को केन्द्र में रख कर हुआ है, परन्तु उन्होंने शरीर के निर्वाह हेतु केवल ज्ञान के आलोक में, जिस सम्यक् जीवन शैली का कथन किया, वह स्वतः मानव जाति के स्वास्थ्य का मौलिक शास्त्र बन गया। महावीर के स्वास्थ्य दर्शन को समझने के लिए उनके द्वारा कथित आत्मा और शरीर के संबंधों तथा एक दूसरे को प्रभावित करने वाले तथ्यों का ज्ञान आवश्यक है।

आत्म-शुद्धि और चेतना का विकास

महावीर की दृष्टि में शुद्धात्मा–अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति और अनन्त आनन्द का स्रोत होती है तथा उस अवस्था में स्वास्थ्य की कोई समस्या नहीं होती। जितनी-जितनी उसकी मलिनता, उतनी–उतनी स्वास्थ्य की समस्या। परन्तु जब वह कर्मों के आवरणों से आच्छादित हो जाती है, तो आवरण के घनत्व के अनुसार उसकी सारी शक्तियाँ सीमित हो जाती हैं तथा वह मुख्य रूप से नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव गति में भटकती रहती है। उसके जन्म और मृत्यु का चक्र चलता रहता है। कर्मों के अनुसार ही किसी भी योनि में उसे शरीर के साथ इन्द्रियाँ और मन उपलब्ध होते हैं। एकेन्द्रिय वाले जीव में मात्र स्पर्शनेन्द्रिय ही होती है। दो इन्द्रिय वाले जीवों में स्पर्शनेन्द्रिय के साथ.साथ रसनेन्द्रिय, तीन इन्द्रिय वाले जीवों में स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और घ्राणेन्द्रिय (गंध का ज्ञान कराने वाली)मिलती हैं। चार इन्द्रिय वाले जीवों को स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षुरिन्द्रिय (नेत्र) प्राप्त होते हैं। पंचेन्द्रिय जीवों को चारों इन्द्रियों के साथ श्रवणेन्द्रिय (सुनने की शक्ति) मिलती है। चेतना का और अधिक विकास होने पर उसे पांचों इन्द्रियों के साथ मन मिलता है। इस दृष्टि से मानव कर्मों से युक्त आत्म-चेतना के विकास का सर्वोच्च स्तर होता हैं।

ज्ञान-दर्शन के उपयोग युक्त चेतनामय तत्त्व जीव होता है। जिनमें ये दोनों गुण न हों, वे अजीव होते हैं। महावीर ने संसार के सारे पदार्थों का दो प्रकार से कथन किया–जीव और अजीव। जीव में अनुभव और संवेदन करने

की क्षमता होती है। स्वास्थ्य का सारा चिन्तन और समस्याएँ जीव को ही होती हैं। मृत्यु के पश्चात् शरीर में चेतना के निकल जाने के पश्चात् इसी कारण जड़--शरीर को जल्दी से जल्दी नष्ट कर दिया जाता है। क्योंकि मृत शरीर में जीव के लक्षण समाप्त हो जाते हैं। अजीव में संवेदन और अनुभव करने की क्षमता नहीं होती और न उनमें सजातीय पदार्थों को पैदा करने की क्षमता ही होती है। जीव सदैव अरूपी होता है, परन्तु उसका अनुभव किया जा सकता है। अजीव रूपी और अरूपी दोनों हो सकते हैं। जो स्थूल दृष्टि अथवा भौतिक यंत्रों से देखे जा सकते हैं, उन्हें रूपी पदार्थ, परन्तु जिनको इन माध्यमों से देखना संभव नहीं होता, वे अरूपी पदार्थ कहलाते हैं। सभी जीवों में आत्मा समान होती है, परन्तु कर्मों के आवरण के अनुसार चेतना के विकास में अन्तर होता है। इसी आधार से प्रथम पांच द्रव्य अजीव की श्रेणी में आते हैं। जबकि छठा द्रव्य जीव होता हैं। सभी द्रव्य एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं।

महावीर की शरीर संबंधी अवधारणा

महावीर की दृष्टि से जब जीव मानव योनि में आता है, तो उसे पाँच प्रकार के शरीर मिल सकते हैंः–

1. औदारिक या स्थूल शरीर–जो पंच द्रव्यों और सप्त धातुओं (अवयवों) से बनता है।

2. वैक्रिय शरीर– जिसको इच्छानुसार घटाया, बढाया अथवा छोटा–बड़ा किया जा सकता है।

3. आहारक शरीर –जिसकी संरचना उच्च साधकों द्वारा संकल्प की तरंगों से की जा सकती है, साधारण व्यक्ति नहीं कर सकता।

6. तैजस शरीर (विद्युत शरीर)– यह सूक्ष्म शरीर होता है।

5. कार्मण अथवा कर्म शरीर– यह सूक्ष्मतम शरीर होता है। जो कर्म पुद्गलों से बनता है।

वैक्रिय और आहारक शरीर की प्राप्ति मानव जीवन में चेतना की उत्कृष्ट स्थिति वाले साधकों को साधना द्वारा ही प्राप्त होती है। अतः मोटे रूप में प्रत्येक माानव को स्थूल, सूक्ष्म और सूक्ष्मतम शरीर ही प्राप्त होते हैं। तैजस और कार्मण शरीर आत्मा की मलिन अवस्था में सदैव उसके साथ रहते हैं तथा मृत्यु के समय जब तक आत्मा पूर्ण रूप से शुद्धावस्था को प्राप्त नहीं हो जाती, स्थूल शरीर ही नष्ट होता है, सूक्ष्म शरीर समाप्त नहीं होता। परन्तु अधिकांश आधुनिक प्रचलित चिकित्सा-पद्धतियाँ उपचार को मात्र स्थूल शरीर तक ही सीमित रखती हैं। रोग के मूल कारण कर्मों तक उनका सोच प्रायः नहीं होता। इसी कारण जन्मजात रोगों एवं मृत्यु का रहस्य उनके पूर्ण

समझ में नहीं आ पाता।

इन तीनों शरीरों का स्वास्थ्य के साथ गहरा संबंध होता है। शक्तिशाली सूक्ष्मदर्शक यंत्रों की खोज से भी स्थूल शरीर के रहस्यों को तो जाना जा सकता है, परन्तु सूक्ष्म और सूक्ष्मतम शरीर को अभी भी नहीं देखा जा सकता। फिर भी उनका स्थूल शरीर पर प्रभाव पड़ता है, जिसका प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है। कर्म शरीर में जितने स्पन्दन होते हैं वे स्थूल शरीर में अपना संबंध स्थापित करते हैं। स्थूल शरीर सूक्ष्म शरीर का संवादी होता है।

सूक्ष्मशरीर से कर्म-विपाक के अनुसार जो स्पन्दन आते हैं, वे चित्त को प्रभावित करते हैं। जिससे चित्त मस्तिष्क के साथ कार्य करने वाले भावों का निर्माण करता है तथा उन भावों की अभिव्यक्ति के लिये दो सहयोगी तंत्रों का निर्माण करता है, और वे होते हैं मन और वाणी। इस प्रकार मस्तिष्क –चित्त और स्थूल शरीर का संगम स्थल होता है। अतः मन और चित्त एक नहीं, अलग-अलग होते हैं। मन चंचल होता है। चित्त बुद्धि और विवेक से उस पर नियंत्रण रखने की क्षमता रखता है। मन कुछ भी नहीं होता और सब कुछ भी होता है। मन का कोई स्थायी अस्तित्व नहीं होता। जब अस्तित्व में होता है तो सब कुछ बन जाता है, परन्तु यदि हम मन को पैदा न करें तो मन कुछ भी नहीं होता। मन को विराम दिया जा सकता है। स्वास्थ्य का संबंध मन के साथ बहुत कुछ जुड़ा होता है। मन स्वस्थ तो शरीर स्वस्थ और मन अस्वस्थ तो शरीर अस्वस्थ।

प्राण ऊर्जा और ऊर्जा के स्रोत

महावीर के अनुसार, जब मानव का जीव गर्भ में आता है तो, उसे अपने कर्मों के अनुसार आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन रूपी छः मूल ऊर्जा के स्रोत अर्थात पर्याप्तियाँ ;ठपव च्वजमदजपंस म्दमतहल वनतबमद्ध प्राप्त होते हैं। प्रत्येक पर्याप्ति अपने.अपने गुणों के अनुसार पुद्गलों को आकर्षित कर मानव शरीर का विकास करती है। जिन्हें ये शक्तियाँ पूर्ण रूप से प्राप्त होती हैं, उनका सम्पूर्ण एवं संतुलित विकास होता है तथा जिन्हें ये पर्याप्तियाँ आंशिक रूप में प्राप्त होती हैं, उनका विकास आंशिक ही होता हैं।

महावीर ने चेतना के विकास में इन्द्रियों के स्वतंत्र अस्तित्व का कथन किया। जबकि अन्य दर्शनों एवं चिकित्सा वैज्ञानिकों ने उनकी शरीर के एक अवयव तक ही कल्पना की। उनका सम्बन्ध पंच-तत्त्वों में किसी तत्त्व अथवा अंग तक ही सीमित कर दिया है। ये जीवनी शक्तियाँ कार्य के अनुसार मुख्य रूप से दस भागों में रूपान्तरित हो मानव की समस्त गतिविधियों का संचालन करती हैं। जिन्हें प्राण भी कहते हैं। प्राण जीवन

शैली को शक्ति प्रदान करते हैं। प्रत्येक प्राण अपने लिये आवश्यक पुद्गलों को आसपास के वातावरण से ग्रहण कर अपन-अपने कार्य कर सकते हैं।

श्रोत्रेन्द्रिय बल प्राण– जिससे सुनने योग्य पुद्‌गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

चक्षुरिन्द्रिय बल प्राण– जिससे देखने योग्य पुद्‌गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

घ्राणेन्द्रिय बल प्राण– जिससे गंध योग्य पुद्‌गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

रसनेन्द्रिय बल प्राण– जिससे स्वाद योग्य पुद्‌गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

स्पर्शनेन्द्रिय बल प्राण–जिससे स्पर्श योग्य पुद्‌गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

श्वासोच्छ्‌वास बल प्राण–जिससे श्वसन योग्य पुद्‌गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

मन बल प्राण– जिससे मनोवर्गणा योग्य पुद्‌गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

वचन बल प्राण– जिससे भाषा वर्गणा योग्य पुद्‌गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

काय बल प्राण– जिससे हलन-चलन योग्य पुद्‌गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

आयुष्य बल प्राण – जिसके कारण जीव निश्चित अवधि तक किसी योनि में रह सकता है।

सारी प्राण शक्तियाँ आपसी सहयोग और समन्वय से कार्य करती हैं, परन्तु एक.दूसरे का कार्य नहीं कर सकती। आंख सुन नहीं सकती, कान बोल नहीं सकता, नाक देख नहीं सकती इत्यादि। सबमें आयुष्य बल प्राण मुख्य होता है तथा उसके समाप्त होते ही अन्य प्राण प्रभावहीन हो जाते हैं। आयुष्य बल प्राण का प्रमुख सहयोगी श्वासोच्छ्‌वास बल प्राण होता है।

प्राण ऊर्जा का जितना सूक्ष्म एवं तर्क विश्लेषण महावीर दर्शन में है, उतना आधुनिक चिकित्सा-पद्धति में भी नहीं किया गया। परिणाम स्वरूप उन्हें आंख, नाक, कान आदि जड़ उपकरणों की खराबियों को दूर करने में तो आंशिक सफलता मिली, परन्तु जिनमें प्राण ऊर्जा का मौलिक प्रवाह ही नहीं हो, उनको सुधार पाने में अभी तक सफलता नहीं मिली। **(क्रमशः)**

–चोरड़िया भवन, गोल बिल्डिंग रोड़, जोधपुर (राज.)

दो कविताएँ

श्री दिलीप धींग जैन

दीवारें -

रुको!
दीवारों को मत तोड़ो
इनमें मनुष्य का
उद्देश्य और श्रम है।
रुको!
दीवारों को लांघो भी मत
बन्दर बिल्ली–चीते की तरह
उद्दण्डता से
इसमें खतरे हैं।
दीवार हमारी व्यवस्था है।
दीवारों में
सही स्थान पर
द्वार बना लो,
खिड़कियां बना लो,
बन्द दरवाजे–खिड़कियां खोल दो।
ताकि हम सब
इधर–उधर
आ–जा सकें
बेहिचक–बेझिझक–बेरोकटोक
मैत्री और मनुष्य की बयार
बहती रहे
निरापद निरन्तर
चहुं ओर।

सावधान-

महाशून्य में
गतिमान
छोटा सा ग्रह पृथ्वी
जैसे आकाश में विमान।
हम सब इसके यात्री
अलग–अलग
किन्तु
सर्वथा जुड़े हुए।
सावधान!
कहीं हो न जाए
इसका अपहरण।

–बम्बोरा–313706, जिला– उदयपुर (राज.)

वृद्धावस्था में कैसे जीयें ?

श्री पूनमचन्द चौपड़ा

वृद्धावस्था का संबंध शारीरिक स्वास्थ्य तथा नीरोगता से है। एक व्यक्ति सत्तर वर्ष की आयु में भी वृद्ध नहीं लगता है तथा दूसरा व्यक्ति पचास वर्ष की आयु में ही वृद्ध हो जाता है। हर व्यक्ति को वृद्धावस्था अलग–अलग आयु में आती है। वैसे साठ साल से ऊपर के व्यक्तियों को आयु की दृष्टि से वृद्ध कह सकते हैं।

वृद्धावस्था में क्या करें तथा क्या नहीं करें-

1. सम व संतुलित रहें।
2. क्रोध बिल्कुल नहीं करें।
3. उत्साह एवं मनोबल बनाये रखें।
4. किसी से झगड़ा एवं कलह नहीं करें।
5. ईर्ष्या, द्वेष, निन्दा, आलोचना, जलन, घृणा तथा झूठ–कपट से दूर रहें।
6. तृष्णा, मोह एवं लोभ का त्याग करें।
7. किसी भी प्रकार के पाप में प्रवृत्ति नहीं करें।
8. अपने आपको हीन, दीन तथा तिरस्कृत नहीं समझें।
9. अगर आपका शरीर नीरोग है तो अपने आपको वृद्ध एवं बेकार नहीं समझें।
10. कम बोलें तथा उपयोगी बोलें। ज्यादातर चुप रहने में लाभ है।
11. बिना मांगे किसी को सलाह नहीं देवें।
12. जगह–जगह हैडमास्टरी एवं थानेदारी नहीं करें।
13. किसी को भी अपशब्द व गाली गलौज नहीं करें।
14. किसी का भेद प्रकट नहीं करें तथा कटु सत्य भी नहीं बोलें।
15. दोषारोपण सही हो तो भी नहीं करना है, लेकिन झूठा दोषारोपण तो बिल्कुल नहीं करें।
16. हर किसी के काम में साधक बनें, बाधक नहीं बनें।
17. सब जगह अपना रोना नहीं रोवें।
18. अपनी जरूरत की हर वस्तु को संभालकर यथास्थान रखें।
19. घर के सदस्यों की स्वतन्त्रता में बाधक नहीं बनें।
20. जहां तक बन सके अपना काम स्वयं करें, स्वावलम्बी बनें।
21. निठल्ले नहीं बनें। काम–काज करते रहें। अकर्मण्यता घातक है।
22. किसी से आशा, इच्छा, कामना नहीं रखें ताकि निराशा नहीं होवे।
23. आलस्य, प्रमाद, फिजूलखर्ची, व्यसन तथा लापरवाही से दूर रहें।
24. जानबूझ कर ऐसे कार्य न करें जिनके कारण आपके अपने व्यक्ति आपसे घृणा करने लगें तथा किनारा करके जाने लगें।
25. अंधविश्वास में विश्वासघात है, इसलिए अंधविश्वास मंत करो।

अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,
अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् की

कार्यकारिणी एवं आमसभा बैठक सूचना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की कार्यकारिणी एवं वार्षिक संयुक्त साधारण सभा मुम्बई में आश्विन शुक्ला अष्टमी, रविवार तदनुसार 13 अक्टूबर, 2002 को निम्नानुसार होंगी जिसमें आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थित है—

कार्यकारिणी बैठक दिनांक 13-10-2002 को मध्याह्न 3 बजे से

नोट:—संघ, मण्डल, श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के बैठक स्थलों के घोषणा प्रात: प्रवचन सभा में तो की जायेगी ही, बालकेश्वर स्थानक कार्यालय के श्यामपट्ट पर भी प्रदर्शित होगी।

वार्षिक संयुक्त साधारण सभा दिनांक 13-10-2002 को सांय 7 बजे से

नोट:-सभी संस्थाओं की संयुक्त बैठक स्थल की सूचना प्रवचन सभा में एवं बालकेश्वर स्थानक में श्याम पट्ट पर प्रदर्शित होंगी।

विषय सूची :—कार्यकारिणी एवं वार्षिक साधारण सभा में निम्न विषयों पर विचार किया जायेगा—

1. गत बैठक की कार्यवाही का पठन एवं अनुमोदन।
2. वर्ष 2001-2002 के आय-व्यय का अनुमोदन एवं वर्ष 2002-2003 के प्रस्तावित बजट की स्वीकृति।
3. वार्षिक प्रगति विवरण की प्रस्तुति।
4. प्रवृत्तियों के विस्तार पर विचार।
5. अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से अन्य विषयों पर विचार।

नोट:—1. बालकेश्वर-मुम्बई पधारने पर परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि सन्त-मुनिराजों के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सत्संग सेवा का लाभ प्राप्त होगा।

2. सदस्य महानुभाव अपने सुझाव लिखित में 30 सितम्बर, 2002 तक सम्बन्धित संस्था कार्यालय तक पहुँचा सकते हैं।

3. मुम्बई पधारने वाले अपने कार्यक्रम की पूर्व सूचना अवश्य करने का कष्ट करें।

सम्पर्क सूत्र :—

श्री मोफतराज जी मुणोत	–	2401552 (O) 3648004 (R)
श्री कैलाशचन्द जी हीरावत	–	3586740 (O) 3670645 (R)
श्री नवरतनमल जी मुणोत	–	3684939, 4640189
श्री पारसचन्द जी हीरावत	–	3630320 (O) 3676581 (R)

अरूण मेहता
महामन्त्री

सूचना

नोट :—पेज नं. 73 पर प्रकाशित कार्यकारिणी बैठक सूचना को निरस्त समझा जावे। सभी कार्यक्रम उपरोक्तानुसार होंगे

अरूण मेहता
महामन्त्री

उत्तराध्ययन सूत्र : छत्तीसवाँ अध्ययन (४)

प्रो. चांदमल कर्णावट

जिनवाणी पत्रिका के सितम्बर 1998 के अंक से उत्तराध्ययन सूत्र का परिचय प्रारम्भ हुआ था। मूल सूत्रों में परिगणित इस महत्त्वपूर्ण आगम के अन्तिम 36वें अध्ययन के समापन के साथ ही इस आगम का परिचय पूर्णता को प्राप्त हो रहा है। आगम–परिचय की इस शृंखला हेतु प्रो. कर्णावट सा. को शतशः धन्यवाद कि उन्होंने बिना किसी विलम्ब के निष्ठापूर्वक अपने लेखन से पाठकों को लाभान्वित किया।–**सम्पादक**

पंचेन्द्रिय तिर्यंच–ये जीव समूर्च्छिम एवं गर्भज की अपेक्षा 2 प्रकार के कहे गए हैं। ये दोनों पुनः जलचर,स्थलचर एवं नभचर की अपेक्षा 3-3 प्रकार के हैं।

समूर्च्छिम– बिना माता–पिता के संयोग से जन्मने वाले, मनःपर्याप्ति रहित मूर्च्छित अवस्था में रहने वाले जीव समूर्च्छिम कहलाते है।

जलचर–इनके ग्राह (घड़ियाल) मत्स्य, कच्छप, मकर (मगरमच्छ) एवं सुंसुमार 5 भेद हैं। इन सभी का समावेश समग्र लोक में न होकर लोक के एक भाग में है। **स्थिति**– जघन्य अंतर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट 1 करोड़ पूर्व की है। कायस्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो से नौ करोड़ पूर्व की है। वर्ण एवं गंध आदि की अपेक्षा हजारों भेद हैं।

स्थलचर– ये चतुष्पद एवं परिसर्प रूप से 2 प्रकार के हैं। चतुष्पद में एक खुरा (घोड़ा) दो खुरा (गाय, बैलादि) गंडीपद(हाथी) सनखपदा(शेर) तथा परिसर्प में उरपरिसर्प (सर्पादि) तथा भुजपरिसर्प में चूहा–नेवला आदि आते हैं। फिर एक एक के अनेक भेद होते हैं। **स्थिति**–प्रवाह से अनादि अनंत, स्थिति से सादि सान्त। **आयुस्थिति**– जघन्य अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट तीन पल्योपम की है। **कायस्थिति**–जघन्य अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट 2 से 9 कोटि पूर्व अधिक 3 पल्योपम कही गई है। **अंतर**–अंतर्मुहूर्त एवं अधिकाधिक अनंतकाल का है।

नभचर– इनके चर्मपक्षी (जैसे चमगादड़), रोमपक्षी (हंसादि) समुद्ग पक्षी तथा विततपक्षी क्रमशः डिब्बे बंद पंख वाले, खुले फैले पंख वाले के भेद से 4 प्रकार के हैं। **स्थिति**– आयुस्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग **कायस्थिति**–जघन्य अंतर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग अधिक पूर्वकोटि पृथक्त्व बताई गई है।

मनुष्य–गर्भज और समूर्च्छिम रूप से मनुष्य दो प्रकार के हैं। इनमें गर्भज कर्मभूमि, अकर्मभूमि एवं अंतरद्वीप रूप से तीन प्रकार के हैं। इनके भेद क्रमशः 15,30 एवं 56 कुल 101, फिर पर्याप्त अपर्याप्त से 202 तथा समूर्च्छिम के 101 भेद मिलाकर मनुष्य के 303 भेद होते हैं। **स्थिति**–आयुस्थिति–जघन्य

अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट 3 पल्योपम की है। **कायस्थिति**–जघन्य अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट पूर्वकोटि पृथक्त्वाधिक 3 पल्योपम की है। **अंतर**–जघन्य अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट अनंतकाल बताया गया है।

देव–4 प्रकार के हैं। प्रायः भवनों के वासी अधोलोक में रहने वाले भवनपति 10 प्रकार के हैं। वाणव्यंतर प्रायः वनों, गुफाओं व वृक्ष विवरों में रहने वाले तिरछे या मध्यलोक के वासी देवों के 8 भेद या 26 भेद बताए गए हैं। तिर्यक् लोक में या मध्यलोक में अपनी ज्योति से प्रकाश फैलाने वाले ज्योतिषी हैं। ये अढाई द्वीप में गतिशील एवं बाहर स्थिर हैं। **वैमानिक**– विमानवासी देव ऊर्ध्वलोक में रहने वाले कल्पोपपन्न एवं कल्पातीत रूप से 2 प्रकार के हैं। स्वामी–सेवक के भेद वाले कल्पोपपन्न 12 देवलोक के देव वैमानिक कहलाते हैं। कल्पातीत में स्वामी–सेवक का भेद नहीं होता। वे अहमिन्द्र होते हैं। बारह देवलोक से ऊपर के देव नौग्रैवेयक एवं पाँच अनुत्तर विमान के देव कल्पातीत कहलाते हैं। **स्थिति**– कायस्थिति और भवस्थिति दोनों समान हैं, क्योंकि देव मरकर सीधे देव नहीं बन सकते।

आयुस्थिति–भवनवासी– जघन्य 10 हजार वर्ष, उत्कृष्ट 1 सागर की। **वाणव्यंतर**–जघन्य 10 हजार वर्ष उत्कृष्ट 1पल्योपम। **ज्योतिषी**–जघन्य पल्य के 8वें भाग उत्कृष्ट 1 लाख वर्ष अधिक 1 पल्योपम की। **वैमानिक**–जघन्य 1 पल्योपम उत्कृष्ट 2 सागर। इस प्रकार उत्तरोत्तर वृद्धिंगत होते अनुत्तर विमान की जघन्य 31 सागर एवं उत्कृष्ट 33 सागर की बताई गई है।

श्रमणवर्ग का कर्त्तव्य– (गाथा 248 से 249) उक्त दो गाथाओं में उपसंहार के साथ बताया गया है कि साधक जीव-अजीव विभाजन को सम्यक् प्रकार से जानकर श्रद्धा करे और संयम में रमण करे।

संलेखना– (गाथा 250 से 255) साधक की अंतिम आराधना है। श्रमण बहुत वर्षों तक संयम पालन करके मारणांतिक कष्ट होने पर अत्यंत रुग्ण होने अथवा शरीर के अत्यंत अशक्त होने पर संलेखना करे। संलेखना उत्कृष्ट 12 वर्ष, मध्यम 1 वर्ष एवं जघन्य 6 माह की बताई गई है।

समाधिमरण में बाधक-साधक तत्त्व–(गाथा 256 से 267)–समाधिमरण में मिथ्यादर्शन, निदान, हिंसापरायणता तथा कृष्णलेश्या में प्रवेश–ये 4 दोष बताये हैं। ये समाधिमरण के बाधक हैं, साधक इनसे बचे। **कान्दर्पी** (कन्दर्प क्रियाएँ), आभियोगी मंत्रतंत्रादि, **किल्विषी भावना**–दोषदर्शन केवली, अरिहंतादि का अवर्णवाद आदि एवं **आसुरी भावना**–क्रूरता, हिंसादि प्रवृत्तियाँ एवं **मोही भावना**–मिथ्यामोह, शरीरादि पर मोह ये भावनाएँ भी समाधिमरण हेतु त्याज्य हैं।

साधक तत्त्व–1.सम्यग्दर्शन में दृढ़ता, लीनता, 2. अनिदानता 3. शुक्ललेश्या में लीनता 4. जिनवचन में अनुरक्ति 5. जिनवचनों की भावपूर्वक क्रियान्विति

6.आलोचनादि द्वारा आत्मशुद्धि ये 6 साधक तत्त्व हैं। इनकी सम्यक् आराधना करके साधक समाधि-मरण की सफल साधना कर सकता है।

अन्त में (गाथा 268) में बताया गया है कि भगवान महावीर इस प्रकार 36 उत्तर अध्ययन प्रकट करके मुक्ति को प्राप्त हुए। **(समाप्त)**

—35 अहिंसापुरी, उदयपुर (राज.)

भक्तपान विच्छेद : एक अतिचार

श्री लालचन्द्र जैन

गांधार देश के पांडुया गांव में धरण सेठ रहता था। उसने श्रावक के अणुव्रत स्वीकार किये थे और अपनी दुकान पर बैठ कर व्यापार से अपना जीवन चलाता था। उस सेठ के खेमिल नामक एक नौकर था। वह पानी आदि पिलाता था और व्यापार में सेठ की सहायता भी करता था। वह घर का काम भी कर देता था तथा दुकान और घर के बीच चक्कर लगाता ही रहता था।

एक समय अकाल पड़ा। लोगों ने अनाज और पैसा जमा करके रखा था, वह सब समाप्त हो गया। अनाज महँगा हो गया। सीमा पर रहने वाले लोग बहुत कष्ट में पड़ गये और घास पत्ते खाकर जीवन यापन करने लगे।

ऐसे समय में एक दिन एक ग्रामीण तीन द्रम (सिक्के) लेकर धरण सेठ के पास आया और उससे तीन द्रम का अनाज मांगा। उससे सिक्के लेकर सेठ ने खेमिल से कहा, "तीन द्रम का अनाज इसे दे दो।" अकाल के कारण खेमिल का चित्त भी स्थिर नहीं था, इसलिये उसने भूल से तीन के बजाय चार द्रम का अनाज उस ग्रामीण को तौल कर दे दिया। अनाज लेकर ग्रामीण अपने गांव चला गया।

शाम को जब धरण सेठ दिन भर के आय-व्यय का हिसाब करने बैठा तो हिसाब में एक द्रम का फरक आने लगा और अनाज भी कम दिखाई दिया। उसने खेमिल से पूछा "तुमने ग्रामीण को कितने द्रम का अनाज दिया है।"

खेमिल ने कहा – "भूल से उसे चार द्रम का अनाज दे दिया है।"

सेठ को गुस्सा आ गया, बोला– "अरे मूर्ख! अब अपनी भूल को तूं ही भुगत। आज तुझे खाना नहीं मिलेगा, तभी मेरा एक द्रम वसूल होगा।"

खेमिल का खाना-पानी बंद करने से वह रात भर भूख से तड़पता रहा। धरण सेठ को 'खानपान निषेध' का अतिचार लगा और उसका व्रत भी खण्डित हो गया। **—10/595, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर**

मीठे मीठे काम भोग में

मीठे-मीठे काम भोग में, फंसना मत देवाणुप्पिया।
बहुत बहुत कड़वे फल पीछे, होते हैं देवाणुप्पिया।।टेर।।

जो वीणा के मधुर स्वर में, मुग्ध हरिण हो जाता है।
फंस जाता वह व्याघ्र जाल में, चर्म उधेड़ा जाता है।
तुझको प्रिय संगीत है कितना, कर चिन्तन देवाणुप्पिया।।१।।

जो ज्योति के स्वर्ण दृश्य में, मुग्ध पतंगा होता है।
जल जाता वह अग्नि चिता में, तड़फ तड़फ कर मरता है।
तुझको प्रिय नाटक है कितना, कर मन्थन देवाणुप्पिया।।२।।

जो केतकी की सुरभिगन्ध में, मुग्ध सर्प हो जाता है।
पीटा जाता लठ पत्थर से, बुरी तरह मर जाता है।
तुझको प्रिय तैलादिक कितने, करो ध्यान देवाणुप्पिया।।३।।

जो पाकर एक मांस-खण्ड को, मच्छ मुग्ध हो जाता है।
छिद जाता वह तीक्ष्ण शस्त्र से, फिर चूल्हे पर पकता है।
तुझको प्रिय भोजन है कितना, करो मनन देवाणुप्पिया।।४।।

जो पानी के शीत स्पर्श में, मोहित भैंसा होता है।
खिंच जाता वह मगर आंत से, दाढ़ बीच में आता है।
तुझको प्रिय प्रसाद है कितना, कर विचार देवाणुप्पिया।।५।।

हो हथिनी के काम भोग में, मोहित हाथी होता है।
गिर जाता गहरे गड्ढे में, साकल में बंध जाता है।
तुझको प्रिय नारी है कितनी, पूर्ण सोच देवाणुप्पिया।।६।।

एक एक विषय गृद्धि से भी, जब यह फल होता है।
जो सब में आसक्त बना वह, कितना कटु फल पाता है।
केवल कहते 'पारस' सुन रे, हो विरक्त देवाणुप्पिया।।७।।

जिनवाणी पर अभिमत

मैं कुछ समय पहले ही 'जिनवाणी' का आजीवन सदस्य बना हूँ। जिनवाणी से काफी प्रभावित हुआ।

दिनांक 21.5.2002 **प्रवीण आर. लोढ़ा, अहमदाबाद**

जिनवाणी पत्रिका में उत्कृष्ट सामग्री देने के लिए हार्दिक धन्यवाद। जून 2002 के अंक में श्री कन्हैयालाल लोढ़ा का लेख 'मुक्त होना सरलतम व कठिनतम' एवं नवलसिंह जैन की एकांकी 'मम्मी तुम डायन हो' बहुत अच्छे लगे।' भ्रूण हत्या जैसे मानवीय पहलू पर एकांकी विधा में पहली रचना पढ़ी, वह भी किसी जैन पत्रिका में। आप केवल निबंध और कविता ही नहीं देकर विविध साहित्यिक रचनाएँ देते हैं। यह अत्यधिक हर्ष का विषय है।

जून 2002 **सुनील कुमार जैन, पत्रकार, हरनांवा (नागौर)**

"मम्मी तुम डायन हो" श्री नवलसिंह जैन 'नवीन' द्वारा लिखित भ्रूण हत्या पर एकांकी काफी प्रभावशाली है। पंचेन्द्रिय जीव की जब कोई हत्या करता है, तो उससे पूर्व वह स्वयं को आत्मघाती बनाता है, जिसका फल 'नरक' बताया गया है। आजकल एक फैशन सा चल पड़ा है और नारी जाति को नारी द्वारा ही समाप्त किया जाना आश्चर्यकारी है। निकट भविष्य में बालिकाओं का भयंकर अकाल होने वाला है, जो सरकार के आंकड़े दर्शाते हैं। अब 1000 पुरुष के पीछे 772 बालिकायें ही जन्म ले रही हैं। इसे रोका जा सकता है–यदि हमारे धर्म गुरु इस ओर कुछ सख्त हो जावें। यह सत्य है कि भ्रूण हत्या करने वाला भी मनुष्य मारक ही होता है– अर्थात् कसाई। अतएव भ्रूण हत्यारों के घरों का पानी पीना भी हराम होना चाहिये। उसे समाज में "कसाई" के रूप में ही देखा जाना चाहिए। परन्तु खेद है समाज में हो रहा है इससे उलटा। अतः जैसे ही यह ज्ञान हो जावे, हमारे धर्मगुरुओं को ऐसे घरों से आहार पानी लेना बन्द कर देना चाहिये, जिससे समाज में एक वातावरण बने।

दिनांक 19.6.2002 **घेवरचन्द गोदीका, जयपुर**

मैं जिनवाणी का नियमित पाठक हूँ। प्रतिमाह पत्रिका प्राप्त करने के बाद इसे भली प्रकार से पढ़ता हूँ तथा मेरे पारिवारिक सदस्य भी इसे चाव से पढ़ते हैं।

माह जुलाई अंक में संपादकीय लेख "सेवा श्रेष्ठ या सामायिक?" आद्योपांत पढ़ा तथा अति उत्तम लगा। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह लेख पाठकों के मन में उठे कई प्रश्नों का भली प्रकार समाधान करता है अतः इस हेतु आपको बहुत बहुत साधुवाद।

दिनांक 26.7.2002 **जौहरीमल छाजेड़, जोधपुर**

जैन "आगम–साहित्य" विशेषांक प्राप्त हुआ। शान्त मन से पढ़ने पर एक अनूठा आनंद व ज्ञान प्राप्त होता है। विषय अनुक्रमणिका से भी बहुत ज्ञान होता है। अब चातुर्मास में पूज्य महासतियां जी विराजमान हैं कुछ शंका होगी तो मैं उन्हीं से समाधान कर लूंगा।

दिनांक 17.07.2002 **–हरकचन्द फूलचन्द मुथा, लासूर स्टेशन**

यथासमय आपने आगम विशेषांक जो भेजा, मिला। आपके इस अद्भुत प्रयास का बहुत बहुत धन्यवाद! साधुवाद! सबसे पहले, इस आपके सोच का, कि ऐसा विशेषांक निकाला जाय, जिसमें आगम ज्ञान (द्वादशांगी) की संक्षिप्त जानकारी मिले। इस श्रुत सेवा के लिये, आपका तथा आपके प्रयास का हार्दिक धन्यवाद।

दूसरा धन्यवाद उन सभी संत–सतीवृन्द का तथा श्रावक–श्राविकाओं का करना चाहूंगा, जिन्होंने अपने सम्यक् श्रुतज्ञान को इस प्रकार लिपिबद्ध किया कि जिसके कारण सर्वसाधारण को संक्षेप में यह जानने का सुअवसर मिला कि हमारे इस, वर्तमान में उपलब्ध जो ज्ञान का खजाना, हमारे पास है, उसमें कितने हीरे मोती हैं?

संत–सतीवृन्द को तो प्रायः अवसर मिलता है कि वे स्वाध्याय शील बनें, ज्ञानार्जन करें, ज्ञान का विस्तार करें, श्रावक वर्ग भी उनके इस श्रुतज्ञान की वृद्धि में पूरा पूरा सहयोग देता रहा है और देता है। लेकिन गृहस्थ का जीवन जीने वाले श्रावकों को प्राकृत, संस्कृत अथवा अर्धमागधी आदि भाषाओं का ज्ञान सहज उपलब्ध नहीं हो पाता,क्योंकि उनके समक्ष परिवार है उनकी आर्थिक समस्याएँ होती हैं। फिर भी ऐसे नर–रत्न श्रावक–श्राविकाएँ जिन्होंने इतना ज्ञानार्जन किया है, यह उनका विशेष क्षयोपशम है।

मैं कामना करता हूँ कि उनका क्षयोपशम भाव क्षायिक भाव में परिणत हो। उनका तथा उनके द्वारा सबका कल्याण हो। जैन आगमों या भगवान महावीर की वाणी, आत्म-कल्याणकारी वाणी पर, विशेष शोध करने वालों के लिये भी यह 'विशेषांक' विशेष लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

27.7.2002 **–पदमचन्द जैन, दिल्ली**

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका जैन समाज में 59 सालों से सेवा दे रही है। इस पत्रिका में किसी प्रकार की आलोचना नहीं होती है। जिनवाणी की बहुत बड़ी विशेषता रही है। जिनवाणी का "जैनागम–साहित्य विशेषांक" स्वाध्यायियों के लिए बहुत ही उपयोगी है। मैं सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन का आभार व्यक्त करता हूँ तथा आपसे अनुरोध करता हूँ कि यह पत्रिका 5 तारीख तक पहुंच जावे, हमें इसका बेसब्री से इन्तजार रहता है। इसमें प्रवचन, कथा, कविता स्तम्भ सभी सामग्री एक से एक बढ़कर है।

30.7.2002 **दुलीचन्द बोहरा, चेन्नई**

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

आरोग्य आपका– *डॉ. चंचलमल चोरड़िया,* ***प्रकाशक***– *कल्याणमल चंचलमल चोरड़िया ट्रस्ट, चोरड़िया भवन, गोलबिल्डिंग रोड़, जोधपुर–342003,* ***पृष्ठ*** *360,* ***मूल्य***–*260 रुपये(सहयोग राशि), जुलाई 2002*

डॉ. चंचलमल जी चोरड़िया अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों पर अगाध आस्था रखते हैं। विभिन्न पद्धतियों का अध्ययन करने के पश्चात् उनका अपने जीवन में उन्होंने प्रयोग भी किया है। अध्ययन, प्रयोग और अनुप्रेक्षा के अनन्तर डॉ. चोरड़िया जी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इन अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों की जानकारी अधिकाधिक लोगों को हो, तो वे परावलम्बी, हिंसक एवं खर्चीली पद्धतियों को छोड़कर स्वावलम्बी एवं अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धति को अपना सकते हैं। पुस्तक में तीस से अधिक अध्यायों में स्वस्थ जीवन, पंच महाभूत सिद्धान्त, स्वर विज्ञान, जल चिकित्सा, अष्टांग योग, यिन–यांग, ऊर्जा संतुलन, मेथी चिकित्सा, हास्य चिकित्सा, एक्यूप्रेशर चिकित्सा, शिवाम्बु, चुम्बकीय चिकित्सा, सूर्य किरण-चिकित्सा, रंग चिकित्सा, सौर ऊर्जा चिकित्सा आदि विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों पर विस्तार से प्रायोगिक चित्र देते हुए प्रकाश डाला है। चोरड़िया साहब ने भगवान महावीर के स्वास्थ्य विषयक चिन्तन को भी एक अध्याय में प्रस्तुत किया है। अन्तःस्रावी ग्रन्थियों, नाभि संतुलन, मस्तिष्क शोधन, तेल-चिकित्सा, चैतन्य चिकित्सा एवं बिना दवा के हृदय रोग, मधुमेह और दमा के उपचार को प्रस्तुत किया है। स्वास्थ्य संबंधी विशद बोध और विभिन्न प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों के संबंध में एक स्थान पर जानकारी प्राप्त करने के लिए यह पुस्तक अद्वितीय है।

तपागच्छ का इतिहास (भाग 1 खण्ड 1)– *डॉ. शिवप्रसाद,* ***प्रकाशक***– *1. पार्श्वनाथ विद्यापीठ, आई.टी.आई. रोड़, करौंदी, वाराणसी–221005, 2. प्राकृत भारती अकादमी, 13–ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर–302017,* ***पृष्ठ*** *10+329,* ***मूल्य*** *500 रुपये,* ***सन्*** *2000*

श्वेताम्बर मूर्तिपूजक सम्प्रदाय में ईस्वीय सन् की ग्यारहवीं शताब्दी से विभिन्न गच्छों का उदय हुआ। उन गच्छों में वर्तमान में तीन गच्छ प्रमुख हैं– तपागच्छ, खरतरगच्छ और अचलगच्छ। सर्वाधिक प्राचीन बृहद्गच्छ माना जाता है। बृहद्गच्छीय आचार्य जगत्चन्द्र सूरि अपने गच्छ में व्याप्त शिथिलाचार को देखकर तत्कालीन चैत्रगच्छीय आचार्य भुवनचन्द्र सूरि के शिष्य देवभद्रगणि से उपसम्पदा ग्रहणकर उग्र तपश्चर्या में संलग्न हो गए

जिससे प्रभावित होकर आषाढ़पुर के शासक जैत्रसिंह ने विक्रम सम्वत् 1285 में उन्हें 'तपा' विरुद से अलंकृत किया, जिसके आधार पर उनकी शिष्य परम्परा तपागच्छीय कहलायी। इस गच्छ में देवेन्द्रसूरि, सोमसुन्दर सूरि, मुनिचन्द्र सूरि, अकबर प्रतिबोधक आचार्य हीरविजय सूरि, उनके शिष्य विजयसेन सूरि, प्रशिष्य विजयदेव सूरि, उपाध्याय यशोविजय जी आदि अनेक प्रभावक आचार्य एवं मुनिजन हो चुके हैं। आज भी बड़ी संख्या में इस गच्छ के साधु-साध्वी विद्यमान हैं। गच्छों के इतिहास पर शोध कार्य की ओर पार्श्वनाथ विद्यापीठ ने अपना ध्यान केन्द्रित किया। उसी का सुपरिणाम तपागच्छ के इतिहास के प्रथम भाग का यह प्रथम खण्ड है।

इसमें लेखक ने बीसवीं शती तक की तपागच्छीय परम्परा का इतिहास प्रस्तुत किया है। इतिहास लेखन में सूचीकरण एवं संक्षिप्तता की शैली को अपनाया गया है। पुस्तक में चार अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में गच्छों के मूल स्रोत की चर्चा की गई है। द्वितीय अध्याय में जगत्चन्द्र सूरि से मुनि सुन्दरसूरि तक के तपागच्छीय इतिहास पर प्रकाश डाला गया है। तृतीय अध्याय में रत्नशेखर सूरि (विक्रम सम्वत् 1457-1517) से बीसवीं शती तक के तपागच्छीय आचार्यों की परम्परा का वर्णन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में तपागच्छ की बृहद् पौशालिक शाखा, कमल कलश शाखा, कुतुबपुरा शाखा, लघु पौशालिक शाखा, सागर शाखा, विजयानन्द सूरि शाखा, राजविजय सूरि शाखा (रत्न शाखा) और विमल शाखा पर प्रकाश डाला गया है। इस इतिहास में तपागच्छीय आचार्यों की कृतियों, उनके द्वारा प्रस्थापित जिन प्रतिमाओं एवं अभिलेखों का प्रामाणिक स्रोतों से विवरण दिया गया है। तपागच्छ का इतिहास प्रस्तुत करने की दिशा में डॉ. शिवप्रसाद जी ने प्रो. एम.ए. ढाकी, डॉ. सागरमल जैन और महोपाध्याय विनयसागर जी के परामर्श से यह कार्य सम्पन्न किया है।

अचलगच्छ का इतिहास– *डॉ. शिवप्रसाद,* ***प्रकाशक***–*1. पार्श्वनाथ विद्यापीठ, आई.टी.आई. रोड़, करौंदी, वाराणसी-221005 2. प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए मेन, मालवीय नगर, जयपुर-'302017,* ***पृष्ठ*** *18+212,* ***मूल्य*** *250 रुपये,* ***सन्*** *2001*

श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक गच्छों में अचलगच्छ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसका पूर्व नाम विधिपक्ष और अंचलगच्छ भी स्वीकार किया गया है। इस गच्छ का प्रारम्भ आर्यरक्षित सूरि से माना जाता है। बृहद्गच्छीय आचार्य जयचन्द्रसूरि के शिष्य विजयचन्द्र गणि अपर नाम आर्यरक्षित सूरि ने विक्रम सम्वत् 1169 में विधिमार्ग की प्ररूपणा की थी, उसी के अनन्तर यह गच्छ अस्तित्व में आया। इस गच्छ में जयसिंह सूरि, धर्मघोष सूरि, महेन्द्रसिंह सूरि,

धर्मप्रभ सूरि, महेन्द्रप्रभ सूरि, जयशेखर सूरि, मेरुतुंग सूरि, जयकेशरी सूरि, धर्ममूर्त्ति सूरि, कल्याण सागर सूरि आदि प्रभावक जैनाचार्य और विद्वान मुनिजन हुए हैं। यह अचलगच्छ आज भी क्रियाशील है। लेखक ने ग्रन्थ प्रशस्तियों, जिन प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों और सम्बद्ध ग्रन्थ की पट्टावलियों का उपयोग करते हुए यह इतिहास ग्रन्थ लिखा है। इसमें कीर्ति शाखा, पालिताना शाखा, गोरक्ष शाखा, लाभ शाखा, सागर शाखा और चन्द्र शाखा प्रमुख शाखाएँ है। इस पुस्तक में चार अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में अचलगच्छ के इतिहास के स्रोत की चर्चा की गई है। द्वितीय अध्याय में 101 पृष्ठों में अचलगच्छ का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान गच्छाधिपति गुणोदयसागरसूरि और आचार्य कलाप्रभ सूरि जी के योगदान की भी इसमें चर्चा है। तृतीय अध्याय में अचलगच्छ की विभिन्न उपशाखाओं का परिचय एवं इतिहास दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में अचलगच्छीय मुनिजनों के साहित्य अवदान का विवरण दिया गया है। परिशिष्ट में श्री गुणसागर सूरि द्वारा रचित और कलाप्रभ सागर सूरिजी द्वारा रचित एवं अन्य साधु–साध्वियों के मार्गदर्शन से प्रकाशित ग्रन्थों की सूची दी गई है।

नमो मन्त्र से अहंता-ममता का त्याग

पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजय जी म.सा.

अहंता अथवा ममता संसार में भटकाने वाली वस्तु है। अहंता का अर्थ है 'कर्म का कर्ता मात्र में ही हूँ' ऐसी बुद्धि। ममता का अर्थ है 'कर्मफल का अधिकारी मैं हूँ' ऐसी बुद्धि। इन दोनों को निवारने हेतु कर्म का कर्ता केवल मैं नहीं, किन्तु काल, स्वभाव, भवितव्यता एवं पूर्वकृत कर्म वगैरह के सहयोग से कर्म हो रहा है ऐसा विचार करना एवं कर्म फल भी सब के सहयोग का परिणाम है, उस पर मात्र मेरे अकेले का अधिकार नहीं, ऐसा विचार करना है। नमस्कार के आराधक को अपने सभी कर्म एवं उनके फल, जिनको नमस्कार करता है, उन नमस्कार्यों को समर्पित कर देना चाहिए, क्योंकि निमित्त कर्तृत्व उनका है। उनके अवलम्बन से ही कर्म एवं उसके फल में श्रेष्ठता आती है। प्रत्येक शुभ कर्म एवं उसका श्रेष्ठ फल जिसके अवलम्बन से शुभ एवं श्रेष्ठ बनता है। उनके स्वामित्व का है, ऐसा व्यवहार नय कहता है। इससे दोनों पर स्वामित्व उनका है ऐसी वृत्ति धारण करनी चाहिये। उसके परिणाम स्वरूप अहंत्व–ममत्व गल जाता है एवं नम्रता, निरभिमानता, सरलता, संतोष आदि गुणों की उत्पत्ति होती है तथा भक्ति के सुमधुर फलों का अधिकारी बन जाता है।

-प्रेषक– श्री नवरतनमल डोसी, जोधपुर

समाचार-संकलन

आचार्यप्रवर के चातुर्मास के सुयोग से बालकेश्वर मुम्बई में धर्म साधना-आराधना के प्रति अपूर्व उत्साह

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा,. महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 8 का बालकेश्वर स्थानक में 18 जुलाई 2002 को चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश विशाल जनमेदिनी के जय–जयकारों के साथ अत्यन्त भव्यता से हुआ। चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश के पावन प्रसंग पर आचार्यप्रवर ने अपने उद्बोधन में श्रावक संघ को आह्वान करते हुए कहा कि आप संयम-साधकों की साधना में सहयोग का आदर्श उपस्थित करें, बालकेश्वर श्री संघ ने संयम मर्यादानुकूल सभी व्यवस्थाएँ सुनिश्चित करने में रुचि दिखाई। परिणाम स्वरूप धर्मस्थान में प्रवेश करने के साथ दर्शन–वन्दन करने वाले मुखवस्त्रिका का स्वतः उपयोग रखते हैं और मोबाइल तथा सैल की घड़ी अलग रखकर आते हैं। धर्म साधना–आराधना की दृष्टि से बालकेश्वर स्थानक में प्रथम चातुर्मासिक चतुर्दशी पर धर्मचक्र, दया–संवर और उपवास–पौषध की साधना में सौ के लगभग श्रावकों की उपस्थिति अपने–आपमें एक कीर्तिमान कही जा सकती है, जो इसके पूर्व कभी देखने को नहीं मिली। चतुर्दशी को करीब ढ़ाई सौ श्रावकों ने प्रतिक्रमण किया। वह भी एक अच्छी उपलब्धि कही जा सकती है। मुम्बई नगर में धर्मचक्र तप में अनेक नये सदस्यों ने भाग लिया।

आचार्यप्रवर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से धर्म के मूल और गुणों के आधार विनय पर प्रवचन फरमा रहे हैं, जिसका जन साधारण पर व्यावहारिक दृष्टि से और आध्यात्मिक दृष्टि से अनुकूल प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. तात्त्विक चिंतन को वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में इस युक्ति से प्रस्तुत करते हैं, जिससे बौद्धिक ज्ञान के साथ जन–जन के मन में धर्म के प्रति अटूट आस्था बन रही है। प्रवचन में नब्बे प्रतिशत लोग सामायिक साधना के साथ प्रवचन श्रवण का लाभ लेते हैं। शनिवार–रविवार आदि अवकाश के दिन विभिन्न उपनगरों के श्रद्धालु प्रवचन श्रवण करने पहुंचते हैं।

तपाराधन के क्षेत्र में चातुर्मास प्रारम्भ से श्रावक-श्राविकाओं का बना उत्साह उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। 25,23,22,20,15,11 और अनेक अठाइयों के नित्य प्रति प्रत्याख्यान से लगता है कई श्रावक–श्राविकाएँ मासखमण और उसके आगे तप में पुरुषार्थ प्रकट करने के लिए तत्पर हैं। बालकेश्वर में श्रावकों ने पचरंगी करने में अच्छी रुचि दिखाई। अभी तक चार मासखमण हो चुके हैं।

ज्ञानाराधन के क्षेत्र में आचार्यप्रवर आदि संतों की प्रेरणा से आबाल वृद्ध में सामायिक, प्रतिक्रमण, बोल–थोकड़ों के साथ आगम-शास्त्र स्वाध्याय की

भावना दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। मध्याह्न 2 से 3 बजे तक आचार्यप्रवर आचारांग सूत्र की वाचना देते हैं जिसमें संत-मुनिराजों के साथ ज्ञान-पिपासु श्रद्धा से भाग लेते हैं। युवक संघ के सक्रिय युवारत्नों ने प्रतिदिन दस संवर करने का बीड़ा उठाया है। युवारत्न बन्धु आवास-भोजनादि व्यवस्था में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

देश की आर्थिक राजधानी मुम्बई में ज्ञान-क्रिया के संगम आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराजों के प्रति जन-जन के मन में अटूट आस्था की सुपरिणति है कि प्रार्थना,प्रवचन,प्रश्नचर्चा,प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रमों के साथ बालक-बालिकाओं के रविवारीय संस्कार निर्माण शिविर एवं समय-समय पर बहिनों के ज्ञानाभ्यास शिविर उत्साह से चल रहे हैं। ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप और साधना-आराधना के कार्यक्रमों में प्रभावना का रूप नहीं होने पर भी रुचि और भावना के सुन्दर रूप से लगता है कि मुम्बईवासी चातुर्मास के सुयोग का पूरा-पूरा उपयोग करते हुए इस चातुर्मास को स्मरणीय बनाने के लिए कृत संकल्प हैं। इस चातुर्मास में 29 अगस्त तक सम्पन्न बड़ी तपस्याओं का विवरण इस प्रकार हैं–

मासखमण पूर्ण करने वालों के नाम

1. श्री पूनमचन्द जी दुग्गड़, जयपुरवाले
2. श्रीमती मोनिका महेन्द्र जी डागा
3. श्रीमती चंचलदेवी धर्मचन्द जी बोथरा
4. श्रीमती सुमनदेवी विमलचन्द जी कांसवा

अन्य बड़ी तपस्या वालों के नाम

1. श्री राजमलजी जैन–अलीगढ़ रामपुरा वाले (31 उपवास पूर्ण ता. 28.8.2002 एवं 36 के पच्चक्खाण हो चुके है)
2. श्रीमती निर्मला हुकमचन्द जी मांडलेचा–जामनेर (21 उपवास का पारणा)
3. श्रीमती गुणवंतीबेन दिलीपकुमार जी सुकलेचा (17 उपवास का पारणा)
4. श्रीमती रेखा सुपार्श्वकुमारजी सुजंती (17 उपवास का पारणा)
5. श्रीमती सीमा ज्ञानचन्दजी पालरेचा–भायंदर (15 उपवास का पारणा)
6. श्रीमती रेखा सुरेशचन्द जी बंब (15 उपवास का पारणा)

होलनान्था में उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास में अपूर्व धर्माराधना

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास धर्माराधना के साथ होलनांथा में चल रहा है। 16 जुलाई 2002 को आपका चातुर्मासार्थ प्रवेश उत्साहित श्रावक-श्राविका समुदाय की जयकारों से होलनांथा नगर में हुआ। उस दिन से त्याग, तपस्या, प्रत्याख्यान की झड़ी लगी हुई है। होलनांथा में जैनों के सिर्फ 22 घर होते हुए भी व्याख्यान के समय में सभी अपना पूरा व्यवसाय एवं दुकानें बंद कर बच्चे, युवा परिषद् के सदस्य, बूढ़े, महिलायें, बहूमंडल की महिलायें सभी विशेष कर सामायिक में देखने को मिलते हैं।

आज तक अनेक संघों ने आकर गुरुदेव के व्याख्यान, त्याग–प्रत्याख्यान व तपश्चर्या का लाभ लिया। चेन्नई, बैंगलोर, जयपुर, जोधपुर, रायपुर, यादगिरी, कोसाणा, पीपाड़, पाली, देहली, मुम्बई, सवाईमाधोपुर संघों के सदस्य उपस्थित हुए हैं तथा निकटवर्ती संघों (जलगांव, धुलिया, शिरूड़, निझर, नंदूरबार, नाशिक रोड़ इत्यादि)का तांता लगा रहता है। आज तक संघ में उपाध्यायप्रवर के सदुपदेश से अनेक तपस्याएँ हुई हैं। चातुर्मास प्रारंभ के प्रथम दिन 55 दया, 24 पौषध और अनेक उपवास हुए। विशेष हर्ष की बात यह है कि 22 अगस्त को रक्षाबंधन के दिन गुरुभगवंतों को तपस्या की तथा त्याग, प्रत्याख्यान रूप राखी बांधकर श्रीसंघ की शोभा बढ़ाई। राखी पूर्णिमा के दिन ही सौ. सुशिलाबाई प्रेमचन्द जी नागसेठिया के 31 उपवास के पच्चक्खाण हुए और उनका सम्मान सौ. ललिताबाई गेंदमल जी सुराणा ने तप-स्वीकार कर किया। संघ में 1 मासखमण पूरा हो चुका है और दूसरा पूरा होने की दिशा में है।

पूज्य सागरमुनि जी म.सा. का स्मृति दिवस, पक्खी एवं आचार्य श्री पूज्य शोभाचन्द जी म.सा. की पुण्यतिथि भाइयों एवं बहनों ने दया की पचरंगी करके मनायी। अब तक तेले की तपस्या 9, अठाई 8, ग्यारह 3, सोलह 1, मासखमण 1 आदि तपस्याएँ हुई हैं।

पालासनी में ज्ञानाराधन व धर्माराधन का ठाट

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. एवं तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. ठाणा 2 का चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ तब से ही सम्पूर्ण पालासनी ग्राम के निवासी अपने गांव के जाये जन्मे सन्त को पाकर द्विगुणित उमंग एवं उल्लास के साथ ज्ञानाराधन एवं धर्माराधन में तत्पर हैं। पूज्य श्री सागरमल जी म.सा. एवं पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की पुण्य तिथि के पावन प्रसंग पर भाई–बहनों ने दयाव्रत की पचरंगी कर श्रद्धा-भक्ति का अनूठा परिचय दिया है। प्रवचन सभा की छटा तो निराली है। श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. के सरल एवं सरस भाषा में सारगर्भित प्रवचन सुनने में जैन–जैनतर सभी लोग अपने आपको सौभाग्यशाली समझ रहे हैं। जिसने एक बार प्रवचन श्रवण कर लिया वह पुनः उपस्थित होकर प्रवचन-श्रवण के लिये लालायित रहता है।

मुनिश्री के प्रवचन से प्रेरणा पाकर अनेक ग्रामवासियों ने शराब, गुटखा आदि व्यसनों का त्याग कर दिया है। वे अपने जीवन को व्रत-प्रत्याख्यान अपनाकर सार्थक कर रहे हैं। प्रवचन प्रातः 9:15 से 10:15 बजे तक होता है।

यद्यपि वर्षा न होने के कारण मौसम तपस्या के अनुकूल नहीं है, फिर भी नौ, अठाई, तेले आदि की तपस्याएँ चातुर्मास की यशस्विता को बढ़ा रही हैं। विशेष पर्व तिथियों पर दया, संवर, पौषध तथा विविध प्रत्याख्यान के साथ निरन्तर ज्ञानार्जन का लाभ ग्रामवासी प्राप्त कर रहे हैं। प्रवचन के पश्चात् प्रवचन से संबंधित चार प्रश्न श्रोताओं (जिनमें दो भाइयों एवं दो बहनों) से पूछे जाते हैं। यह कार्यक्रम अत्यन्त आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक प्रश्नमंच के रूप में

निरन्तर चल रहा है। मुनिद्वय के विराजने से जैन एवं जैनेतर सभी ग्रामवासी धर्म रंग से सराबोर नजर आ रहे हैं।

साध्वी-मण्डल के चातुर्मासों में अच्छा धर्माराधन

जोधपुर—पावटा स्थानक में साध्वी प्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में,घोड़ों का चौक में सरलहृदया महासती श्री सायरकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं नेहरूपार्क में शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में ज्ञानाराधना एवं धर्माराधना का कार्यक्रम उत्साह के साथ चल रहा है। शासनप्रभाविकाजी म.सा. के मुखारविन्द से दो आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान हुए है। तीनों स्थानों पर प्रवचन के समय अच्छी उपस्थिति रहती है। श्रावक-श्राविकाओं ने अभी तक अनेक व्रत-नियम अंगीकार किये हैं। तीनों जगह श्राविका मण्डल की ओर से प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन भी किया जाता है। अठाई, 11 दिवसीय तप एवं पांच पचरंगियाँ हो चुकी हैं।

धनारीकलां—सेवाभावी महासती श्री संतोष कंवर जी म.सा. आदि ठाणा सुख शान्ति पूर्वक विराजमान हैं, धर्मध्यान का ठाट लगा हुआ है। जैन जैनेतर सभी ग्रामवासी प्रवचन का लाभ ले रहे हैं।

भोपालगढ़— शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शान्तिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में भोपालगढ़वासी धर्माराधन का अच्छा लाभ ले रहे हैं। महासती रुचिता जी म.सा. एवं महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. चातुर्मास के पूर्व ही जोधपुर पधार गए थे तथा अभी घोड़ों का चौक स्थानक में सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा. के सान्निध्य में विराज रहे हैं। महासती श्री विवेकप्रभा जी के स्वास्थ्य में सुधार है।

तोण्डापुर— मधुर व्याख्यानी महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 सुख शान्ति पूर्वक विराजमान हैं। धर्मध्यान का अनुपम ठाट लगा हुआ है। अब तक 11, 8, 5, 4, 3 की तपस्या चल रही है। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही तेले की लड़ी चल रही है। छोटी–मोटी अनेक तपस्याएँ चल रही हैं। महासती श्री उदितप्रभा जी के मासखमण तप पूर्ण हो गया है।

अहमदाबाद—तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में मणिनगर स्थित स्थानक भवन में धर्माराधन उत्साहपूर्वक चल रहा है। धार्मिक जागृति अच्छी है। प्रतिदिन व्याख्यान, प्रतिक्रमण, नमस्कार मंत्र का जाप चलता है। तेले की तपस्या की लड़ी, एकाशन, उपवास, दयाव्रत, आयम्बिल आदि निरन्तर चल रहे हैं। प्रत्येक रविवार को धर्म–शिक्षण हेतु शिविर का आयोजन होता है।

ताहराबाद (जिला–नासिक)— विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3 के पावन सान्निध्य में धर्माराधन, तपाराधन एवं ज्ञानाराधन की निरन्तरता बनी हुई है।

मेड़ता सिटी— व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 के

सान्निध्य में अच्छी धर्माराधना हो रही है। अब तक दया, उपवास की पचरंगी, 17 तेले, अठाई एवं 15 दिवसीय तपस्याएँ हो गई हैं। दया, उपवास एवं तपस्या का क्रम चल रहा है। रविवार, अष्टमी व चतुर्दशी को पूरे दिन नवकारमन्त्र का जाप चल रहा है। रविवार को प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम चलता है। पूरे जैन समाज में एक ही चातुर्मास होने से प्रार्थना, प्रवचन, जाप आदि कार्यक्रमों में मन्दिरमार्गी, तेरहपंथी एवं अजैन भाई–बहनों की भी अच्छी उपस्थिति रहती है।

मुकटी (जिला–धुले)– व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 सुख शान्ति से विराजमान हैं तथा आपकी प्रेरणा से यहां उत्साहपूर्वक धर्माराधन एवं ज्ञानाराधन चल रहा है।

पाली–मारवाड़– मधुर व्याख्यानी महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 3 सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। धर्मध्यान का अनुपम ठाट लगा हुआ है। भाई बहन उत्साहपूर्वक सभी कार्यक्रमों में भाग ले रहे हैं। अभी तक भाइयों में 2 व बहनों में 5 पचरंगी हुई है। प्रवचन सभा में लगभग सभी श्रोता सामायिक ग्रहण करके ही प्रवचन श्रवण करते हैं।

गंगापुर सिटी– विदुषी महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 3 सुख शान्ति पूर्वक विराजमान हैं। महासतीजी के पधारने के साथ ही भाई–बहनों, युवकों व बच्चों में अच्छा धार्मिक उत्साह चल रहा है। अब तक दो आजीवन शीलव्रती बने हैं। 2 अठाई की तपस्या हो चुकी है एवं तेले व आयम्बिल की लड़िया चल रही हैं। जैन, जैनेतर भाइयों ने चार मास के लिये रात्रि भोजन त्याग, जमीकन्द का त्याग एवं लीलोतरी का त्याग किया है। प्रत्येक रविवार को प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम चल रहा है। अनेक भाई–बहिनें धर्माराधना के साथ ज्ञानार्जन कर रहे हैं।

जरखोदा (जिला–बून्दी)–व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यावती जी म.सा. आदि ठाणा 3 जरखोदा में सुख शान्ति पूर्वक विराजमान हैं। प्रवचन के माध्यम से प्रेरणा प्राप्त कर सभी ग्रामवासी धर्माराधना एवं ज्ञानार्जन का लाभ ले रहे हैं। अभी तक धर्मचक्र और श्रावक एवं श्राविकाओं की पचरंगी कार्यक्रम हुए हैं। 6 आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान हुए हैं। प्रतिदिन आयम्बिल की लड़ी चल रही है। 3 अठाइयाँ, पचोला 1, तेला, बेला आदि तपस्या हो चुकी है। धर्मचक्र एवं श्रावक-श्राविकाओं की अलग-अलग पंचरंगियाँ हुई हैं। युवकों एवं प्रौढ़ों ने चार माह का ब्रह्मचर्य व्रत लिया है। सबने रात्रि भोजन एवं सचित्त पानी का त्याग किया है। प्रवचन के समय दुकानें बंद रखकर जैन–अजैन सभी लाभ उठाते हैं। तप-त्याग का क्रम चालू है। ग्रामीणवासियों ने व्यसनों का त्याग किया है। महासतीजी की प्रेरणा से निम्नांकित ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है–

1. श्री दलीचन्द जी जैन एवं श्रीमती धापू बाई जी, जरखोदा
2. श्री हरनाथ जी धाकड़ एवं श्रीमती जग्गी बाई जी, जरखोदा
3. श्री मोतीलाल जी सोनी एवं श्रीमती मनभर बाई जी, करवर
4. श्री छीतरमल जी जैन एवं श्रीमती कलावतीबाई जी, बजरिया

5. श्री गोपीलाल जी मीणा एवं श्रीमती मोतीबाई जी, शेरगंज
6. श्री बजरंगलाल जी मीणा एवं श्रीमती झूमरबाई जी, शेरगंज

लासूर स्टेशन– साध्वी श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 सुख शान्ति पूर्वक विराजमान हैं। लासूरवासियों के लिये यह चातुर्मास एक नयी सौगात लाया है। यहां पर धर्माराधना का अच्छा ठाट लगा हुआ है। सभी ग्रामवासी धर्माराधना एवं ज्ञानाराधना का लाभ ले रहे हैं।

–अरूण मेहता, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् की केन्द्रीय कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की केन्द्रीय कार्यकारिणी की 31वीं बैठक रविवार दिनांक 18 अगस्त 2002 को जयपुर में अध्यक्ष श्री अनिलजी बोहरा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। परिषद् द्वारा भगवान महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक वर्ष के पावन अवसर पर 'जिनवाणी' के राष्ट्रिय अभियान के तहत 2713 आजीवन सदस्य बनाने की जानकारी से सदन को अवगत कराया। बैठक में निर्णय लिया गया कि जिनवाणी मासिक पत्रिका के लिए 250 स्तम्भ सदस्य एवं संरक्षक सदस्य युवक परिषद् द्वारा बनाए जाएंगे, साथ ही युवक परिषद् के प्रयासों से 81बारह व्रतधारी युवक तैयार कर स्वाध्याय संघ को दिए जायेंगे। गजेन्द्र निधि मुम्बई को युवक परिषद् द्वारा 51 आधार स्तम्भ सदस्य बनाकर दिए जाने के संकल्प को भी दोहराया गया। बैठक में वित्तीय वर्ष 01–02 के खातों को प्रस्तुत किया गया तथा चालू वर्ष के बजट को भी सर्वसम्मति से पारित किया गया। बैठक में संघ महामंत्री श्रीमान् अरूण सा मेहता एवं परिषद् के जयपुर निवासी अनेक पूर्व पदाधिकारीजन विशेष आमन्त्रित सदस्यों के रूप में उपस्थित रहे। **–डॉ. राकेश कांकरिया, महासचिव**

स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर जलगांव में सम्पन्न

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के तत्त्वावधान में पर्युषण पर्वाधिराज के पूर्व दिनांक 15.08.2002 से 19.08.2002 तक स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन महाराष्ट्र प्रवर्तक श्री कुन्दनऋषिजी म.सा. ठाणा 2 तथा मालवकीर्ति महासती श्री कीर्तिसुधाजी म.सा. ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में जलगांव में आयोजित किया गया।

शिविर में नागद, मुकटी, शिरपुर, तोंडापुर, चिंचाला, सौंदाणा, नांदगांव, चालीसगांव, जलगांव आदि स्थानों से 125 युवक–महिलाओं ने भाग लिया। शिविर में पर्युषण पर्व सम्बन्धी विषयों पर सुव्यवस्थित ढंग से अभ्यास कराया गया। सन्त–सतीमण्डल एवं श्री चंचलमल जी चोरड़िया, श्री नवरतनमल जी डोसी, जोधपुर, श्री प्रकाशचन्द जी जैन, श्री हीरालाल जी मण्डलेचा, श्री मनोज जी संचेती, श्री माणकचन्द जी गादिया आदि प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

शिविर में उपस्थित रहने वाले सभी अध्यापकों व शिविरार्थियों को सम्मान-पुरस्कार प्रदान किया गया। शिविर में श्री रतनलाल सी-बाफना एवं श्री दलीचन्द जी चोरड़िया का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा १९ जनवरी २००३ को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा कक्षा 1 से 8 तक की आगामी परीक्षा दिनांक **19 जनवरी 2003**, रविवार को दोपहर 12 से 3 बजे तक आयोजित की जायेगी। आवेदन पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय में जमा कराने की अन्तिम तिथि 30 नवम्बर 2002 रखी गयी है।

सभी केन्द्राधीक्षकों से विनम्र अनुरोध है कि अपने-अपने क्षेत्र के परीक्षार्थियों से आवेदन-पत्र समय पर भरवाकर बोर्ड कार्यालय को भिजवाने की कृपा करावें।

28 जुलाई 2002 को सम्पन्न हुई कक्षा 1 से 10 तक की परीक्षा के परिणाम की जानकारी आगामी अंक में दी जायेगी। कक्षा 9 से 11 तक की आगामी परीक्षा 19 जनवरी 2003 को न होकर जुलाई 2003 में आयोजित होगी। **आठवीं कक्षा से ऊपर की सभी कक्षाओं की परीक्षा वर्ष में एक बार जुलाई माह में ही आयोजित की जायेंगी।**

आवेदन पत्र निम्नांकित पते पर भिजवाने का श्रम करावें-**अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, प्रधान कार्यालय घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) फोन नं. 630490**

-विमला मेहता-संयोजक, नवरतन डागा-सचिव

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-२ परीक्षा-परिणाम

युगपुरुष आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा लिखित जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-2 की परीक्षा रतनलाल सी.बाफना फाउण्डेशन ट्रस्ट द्वारा 16 जून 2002 को देश के विभिन्न केन्द्रों पर आयोजित की गई। परीक्षा के लिए 3400 लोगों ने आवेदन किया था, जिनमें से 1415 आवेदक ही परीक्षा में शामिल हुए हैं। परिणाम इस प्रकार रहा-

प्रौढ़ वर्ग

नाम	अ	ब	कुल	पुरस्कार राशि
प्रथम-				
कुमकुम त्रिलोकचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर	29	69.5	98.5	11000/-
द्वितीय-				
श्रीमती विद्या अशोककुमार जी संघवी, बदनावर	27.5	70	97.5	4500/-
श्री विजेन्द्र बाबुलाल जी रूणवाल, धार	27.5	70	97.5	4500/-
तृतीय-				
श्री गौतमचन्दजी चिरंजीलाल जैन, स.माधोपुर	28	69	97	3500/-
सौ. विमला ज्ञानचन्दजी बरडिया, बोदवड़	29	68	97	3500/-

युवा वर्ग

प्रथम- श्रद्धा रमेशचन्दजी लोढ़ा, यवतमाल	29.5	68	97.5	11000/-

द्वितीय–शिल्पी प्रेमबाबूजी जैन, सवाईमाधोपुर	27	68	95	9000/–
तृतीय–नितीन प्रकाशचंदजी कांकरिया, जलगांव	26	68	94	7000/–
प्रोत्साहन				
डॉ. संतोषजी मेहता, दाहोद	29	67	96	1500/–
श्री राजेन्द्रकुमार जी पटवा, जयपुर	28	68	96	1500/–
श्रीमती आभा अजय जी जैन, शाजापुर	29	66	95	1500/–
सौ. किरण प्रकाशचन्द जी कोठारी, बोदवड़	25	70	95	1500/–
सौ. कंचन मिश्रीलाल जी चौपड़ा, जलगांव	25	70	95	1500/–

पुरस्कार विभाजन	**परीक्षार्थी**	**पुरस्कार राशि**
39.5 तक अंक प्राप्त करने वाले अनुत्तीर्ण	168	0/–
40 से 50.5 तक अंक प्राप्त करने वाले उत्तीर्ण	187	50/–
51 से 60.5 तक अंक प्राप्त करने वाले उत्तीर्ण	204	100/–
61 से 74.5 तक अंक प्राप्त करने वाले उत्तीर्ण	366	200/–
75 से 80.5 तक अंक प्राप्त करने वाले उत्तीर्ण	212	300/–
81 से 90.5 तक अंक प्राप्त करने वाले प्रोत्साहन पर	232	400/–
91 से 94 तक अंक प्राप्त करने वाले प्रोत्साहन पर	31	1000/–
95 से उपर अंक प्राप्त करने वाले पर प्रोत्साहन पर	5	1500/–
तृतीय (प्रौढ़ 3 व युवा 1) (म.सा.1)	4	
द्वितीय (प्रौढ़ 3 व युवा 1) (म.सा. 1)	4	
प्रथम (प्रौढ़ व युवा)	2	
	1415	

40 से 94 अंक प्राप्त करने वाले उत्तीर्ण तथा प्रोत्साहन पर पुरस्कार एम.ओ. द्वारा भेजे जा रहे हैं। 95 से अधिक अंक प्राप्त करनेवालों को समारोह पूर्वक पुरस्कार व स्मृति चिह्न मान्यवरों के शुभहस्ते दि. 29.9.2002 रविवार सुबह 9 बजे नवजीवन मंगल कार्यालय, जलगांव में प्रदान किये जायेंगे।

उत्तराध्ययन सूत्र भाग-3 परीक्षा रूपरेखा

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा अनूदित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) द्वारा प्रकाशित उत्तराध्ययन सूत्र भाग–3 सम्पूर्ण पुस्तक पर परीक्षा ली जायेगी, जिसमें गाथा, शब्दार्थ, विशेषार्थ, विवेचन, सारांश, प्रश्नोत्तर, कथा आदि से संबंधित प्रश्न रहेंगे।

कंठस्थ गाथाएँ– 28वाँ अध्ययन सम्पूर्ण।
29 वाँ अध्ययन 1 से 5 सूत्र तक
32 वाँ अध्ययन 1 से 34 गाथा तक

परीक्षा की तारीख– जून 2003 का दूसरा रविवार

परीक्षा– दो प्रश्न पत्र होंगे। प्रथम अ भाग 30 अंक का, समय–30 मिनिट। ब भाग 70 अंक का एवं समय 2.30 घण्टे का रहेगा।

केन्द्र–	10 परीक्षार्थी होने पर केन्द्र बनाया जायेगा।
पुरस्कार–	प्रथम–7000/–, द्वितीय–6000/–, तृतीय 5000/– तथा सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को आकर्षक पुरस्कार।
आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तिथि–	30 अप्रेल 2003 (आवेदन पत्र के साथ अपना पासपोर्ट आकार का फोटो भेजना अनिवार्य है)
सम्पर्क सूत्र–	रतनलाल सी. बाफना, नयनतारा, सुभाष चौक, जलगांव–425001 (महा.)

२६००वें जन्म-कल्याणक वर्ष में १०० करोड़ के व्यय का विवरण

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भगवान महावीर 2600वें जन्म-कल्याणक महोत्सव के लिए 100 करोड़ रुपये का अनुदान स्वीकृत किया था। वर्ष 2001–2002 तथा वर्ष 2002–2003 में अभी तक संस्कृति मंत्रालय ने विभिन्न प्रोजेक्ट्स के लिए निम्न अनुदान स्वीकृत किये हैं–

पशु–पक्षी संरक्षण	10 करोड़ रु.
महावीर वनस्थली, नई दिल्ली	5 करोड़ रु.
30 जैन मोनूमेन्ट्स–केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा	19.31 करोड़ रु.
54 जैन मोनूमेन्ट्स– भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा	10.97 करोड़ रु.
जैन विश्व भारती, लाडनूं	1.97 करोड़ रु.
टी.वी. सीरियल–टेम्पस्ट फिल्मस्–मंजू सिंह द्वारा	.62 करोड़ रु.
	47.87 करोड़ रु.

इस वर्ष भी संस्कृति मंत्रालय लगभग 50 करोड़ रु. का अनुदान विभिन्न योजनाओं के लिए स्वीकृत करेगा। जो योजनाएँ प्राप्त हुई हैं (या आने वाले दिनों में प्राप्त होंगी) उन पर मंत्रालय विचार कर रहा है।

इस अवसर पर जो कार्यक्रम सम्पन्न हो रहे हैं उसकी विशेष सामग्री का संग्रह भी किया जा रहा है ताकि एक विशेष रिपोर्ट हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रकाशित की जा सके। यह प्रकाशन इस ऐतिहासिक वर्ष की उपलब्धियों का एक जीवन्त स्वरूप पेश करे ऐसा प्रयत्न किया जायेगा। इस दृष्टि से आप अपने क्षेत्र में सम्पन्न रचनात्मक, प्रचारात्मक तथा लोक-कल्याणकारी कार्यों की विस्तृत रिपोर्ट भिजवाने का कष्ट करें। **–एल.एल. आच्छा, महामंत्री**

भगवान महावीर के २६००वें जन्म-कल्याणक पर सिक्के

भगवान महावीर के 2600वें जन्म-कल्याणक महोत्सव की स्मृति में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा लोकार्पित एवं भारत सरकार द्वारा जारी सिक्कों के संबंध में ताज़ा जानकारी निम्न प्रकार है–

1. भारत सरकार–5 रुपये के चलन सिक्के

भारत सरकार ने 5 रुपये के दो करोड़ सिक्के मिन्ट कर लिए हैं। ये

सिक्के देश में रिजर्व बैंक की सभी शाखाओं पर प्राप्त हैं। आप अपने समीप रिजर्व बैंक के कोइन काउन्टर से संपर्क करें। दिल्ली तथा मुम्बई में संपर्क के लिए सम्पर्क सूत्र निम्न प्रकार हैं–

1. कोइन काउन्टर बेसमेंट, रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया, संसद मार्ग, नई दिल्ली, फोन: 3711942, 3710538, एक्सटेंशन 4034
2. श्री जिनेश जैन, क्रिसेन्ट सिक्यूरीटिज लिमिटेड, के–37, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली– 110016, फोन नं. 6510726, 6510727, 6513860,
3. कोइन काउन्टर, रिजर्व बैंक ऑफ इन्डिया, काउन्टर नं. 57, फिरोजशाह मेहता रोड़, मुम्बई, फोन 2663788

अधिक मात्रा में आवश्यकता होने पर एक दिन पहले ट्रेजरार को फोन द्वारा सूचित करें। दिल्ली में श्री वेदप्रकश–ट्रेजरार, फोन 3711942 तथा मुम्बई में श्री फर्नान्डिज– ट्रेजरार, फोन 2663788। यदि कोई असुविधा हो तो हमें सूचित करने का कष्ट करें।

2. भारत सरकार– 100 रुपये के स्मृति सिक्के–एलबम सेट

9 जुलाई को टाइम्स ऑफ इण्डिया, हिन्दुस्तान टाइम्स तथा अन्य 25–30 समाचार पत्रों में इन सिक्कों की बुकिंग के संबंध में एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ है। इन सिक्कों की बुकिंग के लिए फार्म भी उस विज्ञापन में दिया हुआ है। विज्ञापन के अनुसार भुगतान की राशि महाराष्ट्र एवं महाराष्ट्र के बाहर अलग–अलग है।

पंजाब सरकार ने 10 ग्राम सोने तथा 50 ग्राम चांदी के मेडेलियन निकाले हैं। इस समय इनकी बिक्री बंद है। नेपाल सरकार ने 18 ग्राम चांदी के सिक्के निकाले हैं, उनकी बिक्री समाप्त हो गई हे।**–एल.एल. आच्छा, महामंत्री**

अहिंसा पुरस्कारों के आवेदन की अंतिम तिथि ३० सितम्बर

अहिंसा, सदाचार, शाकाहार, निर्व्यसनता, जीव रक्षा तथा समाजसेवा के क्षेत्र में कार्यरत कार्यकर्ताओं के सम्मान एवं उत्साहवर्द्धन की भावनाओं के साथ अखिल भारतीय सुधर्म अहिंसा प्रचार समिति भवानीमण्डी द्वारा उत्कृष्ट कार्य संपादन करने वाले 11 कार्यकर्ताओं तथा तीन चेतनाशील पत्रकारों को "सर्वश्रेष्ठ अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड–2002" तथा 'श्रेष्ठ रचनाकार अवार्ड–2002" से सम्मानित करने का निर्णय लिया गया है। जिसके फलस्वरूप प्रत्येक कार्यकर्ता को पांच हजार रुपये नकद, प्रेरक प्रशस्ति पत्र एवं आकर्षक स्मृति चिह्न प्रदान किया जायेगा। उक्त पुरस्कारों के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 30 सितम्बर 2002 है। पुरस्कारों संबंधी अधिक जानकारी एवं पुरस्कार प्रविष्टि आवेदन–प्रारूप की प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें– **प्राणिमित्र नितेश नागोता जैन, 175, जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमण्डी–326502(राज.)**

प्रो. प्रेमसुमन जैन सेवानिवृत्त

उदयपुर– सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग के आचार्य एवं पूर्व अध्यक्ष डॉ. प्रेमसुमन जैन 31 जुलाई 2002 को सेवाननिवृत्त

हो गए हैं। डॉ. जैन को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर्यकुमार सिंह के मुख्यातिथ्य में विदाई दी गई। वे बौद्ध अध्ययन एवं अहिंसा केन्द्र के निदेशक तथा कला महाविद्यालय के अधिष्ठाता पद पर कार्यरत थे।**–रजनीश शुक्ल**

संक्षिप्त-समाचार

खेरली (अलवर)– यहाँ प्राथमिक–माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में अहिंसा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 230 विद्यार्थियों ने भाग लिया।**–नितेश नागोता 'जैन', भवानीमण्डी**

नागपुर– श्री जैन सेवा मण्डल एवं श्रीमती पद्मादेवी मोहनलाल कटारिया चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। समस्त रक्तदाताओं को संस्था द्वारा स्मृति चिह्न तथा सम्मान पत्र दिया गया। गत 7 वर्षों से पूज्य कटारिया जी के जन्म-दिन पर रक्तदान शिविर आयोजित किया जाता है। **– महेन्द्र कटारिया**

अहमदनगर–श्री तिलोक रत्न स्था. जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, आचार्य श्री आनन्दऋषि जी मार्ग, अहमदनगर–414001 द्वारा 8 नवम्बर 2002 से विभिन्न धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है। आवेदन-पत्र कार्यालय से मंगाकर 15 सितम्बर 2002 तक प्रेषित किए जा सकते हैं।

– पं. चन्द्रभूषण मणि त्रिपाठी, रजिस्ट्रार

बैंगलोर– श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, बैंगलोर ने अपने मासिक मुखपत्र 'स्वाध्याय सुमन' का प्रकाशन प्रारम्भ किया है। सम्पादक श्री शान्तिलाल जी बोहरा हैं। जुलाई 2002 का प्रवेशांक बड़े आकार के चार पृष्ठों में लेख एवं सूचनाओं से सम्पृक्त है।

अहमदाबाद– श्रमणसंघीय महामंत्री श्री सौभाग्यमुनि जी 'कुमुद' एवं उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी 'वागीश' आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में उपाध्यायश्री कन्हैयालाल जी 'कमल' द्वारा सम्पादित गणितानुयोग भाग–2 का लोकार्पण श्री बच्चुभाई बलदेवभाई पटेल ने किया। उपाध्याय श्री की स्मृति में चारों अनुयोगों के हिन्दी सेट एवं गुजराती सेट अर्धमूल्य में दीपावली तक देने का निर्णय लिया गया है।

बधाई / चुनाव

जोधपुर– श्री मुदित कुम्भट सुपुत्र श्री प्रवीण जी कुम्भट एवं सुपौत्र श्री

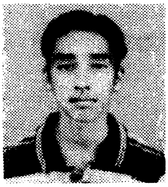

कनकराज जी कुम्भट ने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सीनियर सैकेण्डरी (वाणिज्य) परीक्षा में 88 प्रतिशत अंक प्राप्त कर राज्य में चतुर्थ एवं जोधपुर जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। प्रतिभाशाली छात्र मुदित को भगवान महावीर 2600वें जन्म-कल्याणक वर्ष पर आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के कर कमलों से पुरस्कृत किया गया। ओसवाल सिंह सभा की ओर से 1100 रुपये एवं प्रशस्ति पत्र दिया गया। आगामी 19 अक्टूबर को राज्यपाल महोदय द्वारा 5000 रुपये की राशि से पुरस्कृत कर

प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा।

अजमेर– श्री राहुल गांधी सुपुत्र श्री चन्द्रप्रकाश जी गांधी एवं सुपौत्र स्व. श्री

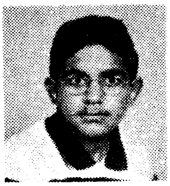

नेमीचन्द जी गांधी (मूल निवासी थांवला) का भारतीय तकनीकी संस्थान (I.I.T.) कानपुर में अध्ययन हेतु चयन हुआ है। उन्हें । Aerospace Engineering शाखा मिली है। राहुल गांधी ने इसी वर्ष 12वीं कक्षा CBSE से 77 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की है। श्री गांधी ने चयन के पश्चात् आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. से सप्त कुव्यसन के प्रत्याख्यान किए। वे जिनवाणी के नियमित पाठक हैं तथा प्रत्येक रविवार को सामायिक करते हैं।

चेन्नई– भगवान महावीर अहिंसा प्रचार संघ, चेन्नई की नई कार्यकारिणी में श्री पी.एम.. चोरड़िया को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। श्री इन्दरचन्द जी मेहता, श्री पी. मीठालालजी , श्री जी.एल. सुराना एवं श्री रतनलाल जी रांका को उपाध्यक्ष चुना गया है। सचिव श्री के.सी. सेठिया, सह सचिव श्री सज्जनराज जी सुराना, कोषाध्यक्ष श्री एस.संतोष कुमार जी पुगलिया एवं सह कोषाध्यक्ष श्री जीवनचन्द जी छाजेड़ है।– **के.सी. सेठिया**

श्रद्धाञ्जलि

बैंगलोर– सुश्रावक श्री किशनलाल जी भण्डारी का 78 वर्ष की वय में 17 जून

2002 को रात्रि में संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। आप सरलमना, दृढ़मनोबली, मृदुभाषी, मिलनसार एवं श्रद्धानिष्ठ श्रावकरत्न थे। आप नियमित धर्मध्यान, एवं सामायिक स्वाध्याय करते थे। संयमनिष्ठ साधु-साध्वियों की सत्संग आपको प्रिय थी। धर्म के प्रति अटूट आस्थावान् भण्डारी जी कर्नाटक गजकेसरी श्री गणेशीलालजी म.सा. एवं आचार्यभगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के प्रति विशेष श्रद्धावान् थे। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के रायचूर वर्षावास में भण्डारी जी की सेवाएँ सदैव स्मरणीय रहेंगी। आप वर्षों तंक गुरु गणेश जैन शिक्षण समिति औरंगाबाद के अध्यक्ष रहे तथा रायचूर श्री संघ के वरिष्ठ पदों पर सक्रिय सेवाशील रहे। आप आदर्श धर्मसहायिका श्रीमती ताराबाई, सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द जी एवं श्री सुरेशचन्द जी सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं। भण्डारीजी के पूज्य पिताश्री धनराज जी भण्डारी मरुधरा के पीपाड़ से 100 वर्ष पूर्व रायचूर आए थे जहां भण्डारी परिवार ने भण्डारी कॉटन कम्पनी प्रारम्भ की।

अलीगढ़ (टोंक)– सुश्रावक श्री कालूलाल जी जैन का 15 अगस्त 2002 को 86 वर्ष की आयु में संथारापूर्वक देहावसान हो गया। आप नियमित सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे। स्थानीय संघ के आप अध्यक्ष भी रहे। आप अपने पीछे संस्कारशील भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं। परिवार की आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त–सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति है।

जयपुर– श्री प्रभुचन्द जी महता का 24 जुलाई 2002 को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यपरायण एवं सन्त–सतियों की सेवा में अग्रणी रहने वाले श्रावक थे। आप यूको बैंक के चीफ कैशियर पद से सेवानिवृत्त हुए थे।

जोधपुर– श्रद्धानिष्ठ, गुरुभक्त, सेवाभावी सुश्रावक श्री बंशीलाल जी लुणावत

का 19 अगस्त 2002 को स्वर्गवास हो गया। आपने अपने अन्तिम समय में 12 व्रत के पच्चक्खाण अंगीकार किये। आप सामायिक-स्वाध्याय आदि धार्मिक कार्यक्रमों में सदा तत्पर रहते थे। आपका जीवन सरलता, सादगी, उदारता, सहिष्णुता जैसे सद्गुणों से सुशोभित रहा। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उनके आज्ञानुवर्ती सन्त–सतियों के प्रति आपकी अगाध आस्था एवं दृढ़ श्रद्धाभक्ति थी। आप संघ–सेवा और सन्त–सेवा में समर्पित थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर– गुरुभक्त संघसेवी सुश्रावक श्री सोहनमल जी गांग सुपुत्र स्व. श्री

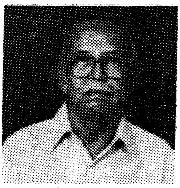

मोहनमल जी गांग का 6 दिवसीय तिविहार संथारे के साथ 21 अगस्त 2002, बुधवार श्रावक शुक्ला चतुर्दशी को समाधिमरण हो गया। आचार्यभगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त–सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध आस्था एवं श्रद्धा भक्ति थी। संघ-सेवा एवं सन्त-सती-सेवा के प्रति आप सदैव समर्पित रहे। गुप्तचर पुलिस में 27 वर्षों तक सेवा करते हुए भी आपने समाज सेवा एवं संघ सेवा में समर्पित भाव से कार्य किया। आप धर्माराधन हेतु सदैव तत्पर रहते थे। सेवानिवृत्ति के पश्चात् आप घोड़ों का चौक स्थानक में नियमित धर्मध्यान करते हुए सक्रिय रहे। आप अपने पीछे धर्मपत्नी कल्याणकंवर पुत्र सुरेश जी, नरेश जी एवं दो पुत्रियों (उषा एवं मधु)सहित भरा–पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

प्रतापगढ़ (राजस्थान)– श्रीमती कोमलबाईजी मोदी धर्मपत्नी स्व. श्री चांदमल

जी मोदी एडवोकेट का स्वर्गवास 79 वर्ष की आयु में दिनांक 14 मई 2002 को हो गया। लोकप्रिय, मृदुभाषी एवं धर्मपरायण श्राविका रत्न प्रतिदिन 5 सामायिक एवं स्वाध्याय करती थी और व्रत–नियमों का पालन करने में अग्रसर थी। श्रीमती मोदी एक कुशल गृहिणी, आदर्श माता एवं दादी माँ थी, जिन्होंने सम्पूर्ण परिवार पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।–**जयन्तीलाल मोदी**

भूल सुधार– अगस्त, 2002 की जिनवाणी में वीरमाता श्रीमती चंचलकंवर जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री इन्दरचन्द जी मेहता, चेन्नई का फोटो असावधानी से पाली मारवाड़ के समाचारों में पृष्ठ 71 पर छप गया। कृपया सुधार कर देख लें।–**सम्पादक**

सवाईमाधोपुर– श्रीमती कंचन देवी जैन धर्मपत्नी श्री रामबिलास जी जैन, कुण्डेरा का 82 वर्ष की आयु में 17 मई 2002 को स्वर्गवास हो गया। धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती जैन नियमित सामायिक–स्वाध्याय एवं तप–त्याग में अग्रणी थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

कोटा– सुश्राविका श्रीमती गल्लीदेवी जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री नेमीचन्द जी जैन, डेकवा वालों का 26 जुलाई 2002 को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं आचारशील श्राविका थी।–**सुरेशचन्द जैन**

जोधपुर–सुश्राविका श्रीमती गुलाबकुमारी जी बालिया का 19 अगस्त 2002 को देहावसान हो गया। आप राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री राजेश जी बालिया की माताजी थी। आप सरलता, मृदुता, सहिष्णुता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत थी तथा संघ-सेवा और सन्त-सेवा में समर्पित श्राविका थी।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

हार्दिक आभार

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् ने गत वर्ष भगवान महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक वर्ष के पावन अवसर पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित 'जिनवाणी' पत्रिका के 2600 आजीवन सदस्य बनाने का राष्ट्रीय अभियान हाथ में लिया था। युवक परिषद् की इस योजना के तहत छूट के लाभ सहित जिनवाणी पत्रिका की आजीवन सदस्यता **500 रुपये के स्थान पर 300रुपये में उपलब्ध करवाई गई थी।** अभियान 25 अप्रेल, 2002 को पूर्ण हो चुका है।

युवक परिषद् ने अखिल भारतीय स्तर पर अपनी शाखाओं, केन्द्रीय पदाधिकारियों, सदस्यों, सम्पर्कसूत्रों, बुजुर्गजनों, इष्टजनों, परिवारजनों एवं मित्रों के सहयोग तथा सघन सम्पर्क के माध्यम से जिनवाणी को छूट के लाभ सहित अधिकाधिक हाथों में पहुँचाते हुए सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर को निर्धारित समय में लक्ष्य से अधिक **2713 आजीवन सदस्य बनाकर दिए हैं,** परिणामस्वरूप जिनवाणी की आजीवन सदस्यता नई बुलन्दियों को छू–कर संघ व समाज को गौरवान्वित कर रही है।

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् की संचालन समिति इस अभियान के तहत प्राप्त सक्रिय सहयोग के लिए उक्त सभी महानुभावों का हार्दिक आभार प्रकट करती है।

डॉ. सुरेश मेहता	**अनिल बोहरा**	**डॉ. राकेश कांकरिया**
निदेशक	अध्यक्ष	महासचिव

भैरोंसिंह शेखावत बारहवें उपराष्ट्रपति

राजस्थान के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिंह शेखावत भारत के बारहवें उपराष्ट्रपति निर्वाचित हुए हैं। उन्होंने कांग्रेस के श्री सुशील कुमार शिंदे को पराजित किया। शेखावत ने 19 अगस्त 2002 को शपथ ग्रहण की। वे एक कुशल राजनेता हैं। राजस्थान को ही नहीं अनेक प्रान्तों के लोग उनके उपराष्ट्रपति बनने पर गौरवान्वित हैं।

कर्नाटक में 11 वीं शती में जैन धर्म का प्रसार था

कर्नाटक के गुलबर्गा जिले के हरसूर ग्राम के जैन मन्दिर में 11वीं शती की 2 मूर्तियाँ मिली हैं। इन मूर्तियों से सिद्ध होता है कि 11वीं शती में कर्नाटक में भी जैन धर्म का अच्छा प्रचार–प्रसार था। मूर्तियों की खोज, अभिलेखज्ञ एवं चित्रकार डी.एन. अक्की (राजकीय प्री. यूनिवर्सिटी कॉलेज, गोगी, शाहपुर तालुक, जिला– गुलबर्गा) ने की है। मूर्ति पर सन् 1088 के एवं सन् 1090 के अभिलेख हैं, जिनसे कल्याण चालुक्य राजाओं के योगदान का भी पता चलता है। **–Hindu, July 31, 2002 से साभार**

शाकाहार जीवन शैली को खतरा

जैनेटिक इन्जीनियरिंग से जैनेटिक मोडिफाइड फूड (आनुवांशिक संशोधित खाद्य पदार्थ) के उत्पादन से दुनिया में शाकाहार जीवनशैली को खतरा पैदा हो गया है। अतः भारत में इसके आयात को तत्काल नहीं रोका गया तो टमाटर, ककड़ी, लौकी, प्याज आदि खाने वालों को पता ही नहीं चलेगा कि वे काकरोच और मछली के जीन के मिश्रित खाद्य पदार्थ का भोजन कर रहे हैं। इसी तरह सूअर के जीन में पालक के जीन मिश्रित करके, शाकाहार और मांसाहार की जीवन शैली के अन्तर को समाप्त किया जा रहा है। यह रहस्योद्घाटन आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज के पैथोलोजी विभाग के प्राध्यापक डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की महावीर जैन भवन में आयोजित सामायिक गोष्ठी में किया। डॉ. शर्मा ने प्रकृति के साथ किसी भी छेड़छाड़ को एक महंगा सौदा बताते हुए कहा कि इग्लैंड में गायों से दूध ज्यादा पाने के लालच में उन्हें घास में हड्डियों का चूरा और मांस के टुकड़े खिलाए गए तो गायों में मेडकाऊ की बीमारी हो गई जिससे हजारों गायों की हत्या करनी पड़ी और उसके संक्रमण से मनुष्य जाति को बचाया। उन्होंने प्रश्न किया कि शाकाहारी खाद्य पदार्थों के जीन में मांसाहारी जीन मिश्रित करने से यदि मेडमेन की कोई बीमारी हो गई तो क्या हम लाखों मनुष्यों की हत्या करवायेगें। डॉ. शर्मा ने आगे कहा कि अमरीका, चीन, जापान में धड़ल्ले से इस आनुवांशिक संशोधित खाद्य पदार्थ का प्रचलन बढ़ रहा है, जबकि यूरोपीय देश और खास तौर से इंग्लैण्ड इस जैनेटिक मोडीफाइड फूड का जबरदस्त विरोध कर रहे है। श्रीलंका ने ऐसे तथाकथित खाद्य पदार्थों के आयात पर 1 मई 2002 से पूंर्ण प्रतिबंध लगा दिया है। शर्मा गोष्ठी में शाकाहार–मांसाहार के घालमेल विषय पर

बोल रहे थे।

अन्त में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सभी सदस्यों ने सर्व सम्मति से आनुवांशिक संशोधित खाद्य पदार्थों पर श्रीलंका की तरह भारत में पूर्णतया प्रतिबंध लगाने की सर्वसम्मति से मांग की।

गोष्ठी का संयोजन श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के मानद–सचिव राजेन्द्र कुम्भट ने किया। **–राजेन्द्र कुम्भट**

आचार्य श्री हस्ती-स्मृति-सम्मान के लिए कृतियाँ आमन्त्रित

परम श्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्य स्मृति में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रायोजित "आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान" के लिए कृतियां आमन्त्रित हैं। इसके नियम आदि इस प्रकार हैं:–

1. यह सम्मान प्रतिवर्ष सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की ओर से जैन धर्म संबंधी, दर्शन, इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य (काव्य, कथा, निबन्ध, नाटक, जीवनी आदि विधाएँ) विषयक किसी प्रकाशित अथवा अप्रकाशित ग्रन्थ पर दिया जाता है। रचनाओं का मौलिक होना अनिवार्य है। मौलिकता का प्रमाण पत्र लेखक/प्रकाशक को देना होगा। सम्पादित (संकलित) ग्रन्थ स्वीकार्य एवं मान्य नहीं होंगे। सम्मान राशि रुपये 21000/– के साथ प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न भी प्रदान किये जायेंगे।
2. मण्डल यह राशि सम्मानार्थ उस विद्वान् को भी भेंट स्वरूप दे सकता है जिसने जैन धर्म-संबंधी दर्शन, इतिहास, कला, साहित्य आदि के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया है।
3. इस सम्मान के लिए देश–विदेश के विद्वान् समान रूप से अधिकारी होंगे।
4. प्रकाशित अथवा अप्रकाशित ग्रन्थ हिन्दी भाषा में होना चाहिए।
5. सम्मान-वर्ष के पूर्व की अवधि में प्रकाशित ग्रन्थ ही विचारार्थ स्वीकार्य होगा।
6. ग्रन्थ की डी.टी.पी./टाइप/ हस्तलिखित (प्रकाशित अथवा अप्रकाशित) चार प्रतियां मण्डल को भेजना आवश्यक है।
7. ग्रन्थ 30 सितम्बर 2002 तक मण्डल कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए। इस तिथि के बाद प्राप्त ग्रंथों पर विचार नहीं किया जायेगा।
8. मण्डल की सम्मान चयन समिति का निर्णय ही सर्वमान्य होगा।
9. ऐसे ग्रन्थों पर विचार नहीं किया जायेगा, जो खण्डों में प्रकाशित हो रहे हों और अभी तक अपूर्ण हों, लेकिन अपने आप में पूर्ण, किन्तु खण्डों में प्रकाशित ग्रन्थ पर विचार किया जा सकता है।

उक्त सम्मान के लिए विचारार्थ अपनी कृतियाँ निम्न पते पर भेजें–**प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर–302003 (राज.) फोन नं. 0141–565997**

अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्यकारिणी बैठक सूचना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्यकारिणी बैठक का आयोजन दि. 12 व 13 अक्टूबर 2002 को मुम्बई में रखा गया है। बैठक कार्यक्रम निम्नानुसार है–

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्यकारिणी बैठक

दिनांक– 12.10.2002 समय– अपराह्न 1 बजे

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कार्यकारिणी बैठक

दिनांक– 13.10.2002 समय– अपराह्न 1 बजे

सभी कार्यकारिणी सदस्यों से अनुरोध है कि उपर्युक्त बैठक में हिस्सा लेकर संघ संचालन में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करें।

सम्पर्कसूत्र – श्री मोफतराजजी मुणोत – 2822888 (का.) 3648004 (नि.)
श्री कैलाशचन्दजी हीरावत – 3586740 (का.) 3670645 (नि.)
श्री नवरत्नमलजी मुणोत – 3684939, 4640189
श्री पारसचन्दजी हीरावत – (का.) 3630320 (नि.) 3676581

अरूण मेहता
महामंत्री

सांवत्सरिक क्षमायाचना

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की मंगल आराधना के साथ भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी, मंगलवार, 10 सितम्बर 2002 को सांवत्सरिक प्रतिक्रमण कर सर्व जीवयोनि से हमने विशुद्ध अन्तःकरण पूर्वक क्षमायाचना की है। हम वर्ष भर में हुई अविनय– आशातना के लिए, संघ एवं समाज के समस्त सदस्यों से हार्दिक क्षमायाचना करते हैं।

रतनलाल बाफना – अध्यक्ष
कैलाशचन्द हीरावत – कार्याध्यक्ष
अरूण मेहता – महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

जोधपुर 11.09.2002

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

8885 सूरजकंवर जी मेघराज जी खिंवसरा, अजमेर (राज.)
8889 Shri Vimalchand Ji Manish Kumar Ji Betalal, Chennai (T.N.)
8890 श्री चन्द्रकान्त जी शान्तिलाल जी हिरन, कजगांव, जलगांव (महा.)
8891 Dr. Ajay Mahavirraj Ji Mehta, Surat (Gujrat)
8893 श्री राधेश्याम जी वैष्णव, जोधपुर (राज.)
8894 श्री लक्ष्मीनारायण जी संजय कुमार जी सुराणा, जोधपुर (राज.)
8895 Shri Sardarmal Ji Nahar, Erode (T.N.)

300/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

8886 Shri Narendraraj Ji Mootha, Raichur (K.T.)
8887 श्री शीतल जी सज्जनराज जी भंसाली, जोधपुर (राज.)
8888 श्री मुकेश कुमार जी जैन, गंजखेरली, जिला- अलवर (राज.)
8892 श्रीमती मोहनीदेवी जी धर्मपत्नी श्री गुलाबसिंह जी कच्छवाहा, जोधपुर (राज.)

जिनवाणी को साभार-प्राप्त

1100/- श्री के.सुरेशचन्द जी भण्डारी एवं श्री भण्डारी परिवार, बैंगलोर, श्रीमान् किशनलाल जी भण्डारी का संथारे के साथ स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

1100/- श्री भंवरलाल, धनराज, अणतीलाल, हनुमानचन्द जी लुणावत (बिरलोका वाले), जोधपुर, पिता श्री बंशीलाल जी लुणावत की पावन स्मृति में।

501/- श्री महेश कुमार जी, विपुल कुमार जी मेहता, चेन्नई, वीरमाता पूज्या श्रीमती चंचलकंवर जी मेहता का दिनांक 16.7.2002 को चेन्नई में स्वर्गवास हो गया, उनकी पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

501/- श्री सुरेशमल जी नरेशमल जी गांग, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री सोहनमल गांग का संथारापूर्वक दिनांक 21.8.2002 को महाप्रयाण होने पर जिनवाणी को भेंट।

500/- श्री प्रकाशमल जी बोथरा, चेन्नई, श्री सुनील जी बोथरा द्वारा बी.बी.ए. कॉलेज में द्वितीय स्थान पाने एवं आचार्यप्रवर के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को भेंट।

500/- श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, फगवाड़ा (पंजाब), जिनवाणी को भेंट।

500/- श्री पुखराज जी नवरतनमल जी बाफना, चेन्नई, साध्वीप्रमुखा महासती श्री लाडकंवरजी म.सा., सरल हृदया महासती श्री सायरकंवरजी म.सा., शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनों की खुशी में।

500/- श्री मांगीलाल जी कोठारी, चेन्नई, जोधपुर में महासती मण्डल के दर्शन करने की खुशी में जिनवाणी को भेंट।

250/- श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल(भोपालगढ़ वाले) जलगांव,धर्मपत्नी श्रीमती उमरावबाई जी के तीसरी पुण्यस्मृति व शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी, महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. के दर्शनोपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

200/- गुप्तदान, दिल्ली से जिनवाणी को भेंट।

200/- श्री अशोक जी जैन, दिल्ली की तरफ से जिनवाणी को भेंट।

200/- श्रीमती प्रेमबाई जी नवलखा धर्मपत्नी स्व. श्री सूरजमल जी नवलखा, जयपुर,

अपने सुपुत्र श्री कुशलचन्द जी नवलखा की पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

150/— श्री पारसमल जी संचेती, महामंदिर, जोधपुर।

101/— श्री ज्ञानचन्द जी जैन, जयपुर, सुपुत्र चि. अमित जी जैन के विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

101/— श्री विजयकुमार जी अनिलकुमार जी जैन, गंगापुर सिटी, श्री अनिलकुमार जी जैन की धर्मपत्नी श्रीमती प्रभा जी जैन ने महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के सान्निध्य में पहला अठाई तप किया, उसके उपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

101/— श्री उम्मेदचन्द जी सिंघवी, जोधपुर, अपने प्रपौत्र कार्तिक सिंघवी के जन्म के उपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

101/— श्री सुमेरचन्द जी सिंघवी, जोधपुर, माताजी स्व. श्रीमती कल्याणकंवर (धर्मपत्नी श्री उम्मेदचन्द जी सिंघवी) की द्वितीय पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

101/— श्री गणपतलाल जी जैन, बजरिया, पालासनी में पूज्य श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 2 एवं जोधपुर में महासती मण्डल के दर्शन करने की खुशी में भेंट।

101/— श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, पालासनी में पूज्य श्री गौतममुनि जी म. सा. आदि ठाणा 2 एवं जोधपुर में महासती मण्डल के दर्शन करने की खुशी में भेंट।

101/— श्री हरकचन्द जी पदमचन्द जी जैन, अलीगढ़ रामपुरा, जिला--टोंक, अपने पूज्य पिताजी श्री कालूलाल जी जैन का 15.8.2002 को स्वर्गवास होने की पुण्यस्मृति में जिनवाणी को भेंट।

101/— श्री मनोहरमल सा, राजेन्द्र सा गांग, जोधपुर, अपने भ्राता श्री सोहनमल जी गांग के संथारार्वूक दिनांक 21.8.2002 को महाप्रयाण होने पर पुण्य स्मृति में भेंट।

101/— श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी,, जोधपुर, बहन श्रीमती विमला देवी भण्डारी की 12वीं पुण्यतिथि पर स्मरणांजली स्वरूप।

100/— श्री हरीशचन्द जी जैन, भोजपुर त. लक्ष्मणगढ़, सुपुत्र श्री प्रदीपकुमार जी जैन के शुभ विवाहोत्सव पर जिनवाणी को भेंट।

51/— श्री बाबूलाल जी जैन, मुड़ियां खेरलीगंज, सुपुत्र चि. गोविन्द प्रसाद की शादी के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

500/— श्री शांतिलाल जी, रमेश जी, संतोशकुमार जी वेदमुथा, रायपुर।

120/— श्री नवीन कुमार जी बाफना, जोधपुर।

क्षमा-याचना

जिनवाणी के पाठकों एवं लेखकों से हमारा निरन्तर सम्पर्क रहता है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार की ओर से यदि आपके हृदय को हमारे किसी भी व्यवहार से ठेस पहुँची हो तो, हम निर्मल हृदय से क्षमायाचना करते हैं। जिनवाणी प्रत्येक माह की 15 तारीख को डाक द्वारा प्रेषित की जाती है। यदि आपको समय पर प्राप्त न हो या पता परिवर्तित हो गया हो तो इसकी सूचना मण्डल कार्यालय, जयपुर को प्रेषित करें।

प्रकाश चन्द डागा	**चेतन प्रकाश डूंगरवाल**	**डॉ. धर्मचन्द जैन**
मंत्री	अध्यक्ष	सम्पादक

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्तता और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
✆ 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

JAI MAHAVEER JAI GURU HASTI

With Best Compliments From :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 5, CAR STREET, POONAMALLEE
CHENNAI-600 056
PHONE : 6272609

BANKERS : PHONE / 6272906

No. 5 A, CAR STREET,
POONAMALLEE
CHENNAI-600 056

Gurudev

SURANA

Financial Corpöration (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014

Branches :

★ Bangalore ★ Coimbatore ★ Ernakulam ★
★ Kollidam ★ New Delhi ★

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

''आचार्य श्री हस्ती''

With Best Compliments From :

EVEREST GEMS LTD.

12-A-2,CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।
- आचार्य श्री हस्ती

HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
HEMANT SANCHETI

कलात्मक गहनोंकी सुवर्ण सृष्टी...
आपके व्यक्तीत्वका सही प्रतिबींब !
सोने चांदीके पारंपारीक एवमं आधुनिक आभुषणोंकी
१८५४ से विश्वसनीय सुवर्ण पेढी...
A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854
राजमल लखीचंद™
ज्वेलर्स
१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव. (महाराष्ट्र) फोन: ०२५७-२२६६८१,८२, ८३
All major credit cards accepted...
GRACE

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पंजीकृत संख्या 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/2803/02

Home next to everything you need.
And far from everything you don't.

KALPATARU HABITAT
DR. S.S. RAO ROAD, PAREL

- Twin 23 storeyed luxury apartment blocks
- 2 &3 BHK apartments and 4 BHK penthouses
- Swimming pool, clubhouse & gym
- Squash court & tennis court
- Landscaped gardens & modern security systems

KALPATARU RESIDENCY
OPPOSITE CINE PLANET, SION CIRCLE

- Premium 18 storeyed towers with 2 & 3 BHK flats
- Swimming pool, squash court & gym
- Clubhouse, party lounge & landscaped gardens
- Basement and open car parking
- Tower A nearing completion

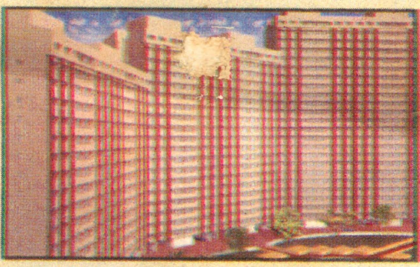

KARMA KSHETRA
NEAR SHANMUKHANANDA HALL, KING'S CIRCLE

- 25 storeyed tower with 2 wings
- 2 BHK apartments
- Landscaped gardens
- Ample car parking and modern security systems

Centrally located, they are near schools, banks, supermarkets, movie halls... And once you step in, you'll leave the hectic world outside. There'll be just you and a feeling that says, 'Relax, you are home'.

The projects are under construction/nearing completion. For details call 281 7171/282 2679/284 4102.

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 021. Fax: 204 1548/288 4778. E-mail: sales@kalpataru.com or visit us at www.kalpataru.com

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।